भारत-विभाजन का दुःखान्त और संघ

भाग-३

रावलपिण्डी क्षेत्र,
उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त तथा अन्य

— मदनलाल विरमानी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

भारत-विभाजन का दुःखान्त और संघ

[भाग—३]

[रावलपिंडी क्षेत्र, उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त व अन्य]

★ मदनलाल विरमानी

लोकहित प्रकाशन, लखनऊ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

प्रकाशक :
लोकहित प्रकाशन
संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर,
लखनऊ – २२६ ००४

तृतीय संस्करण
शरद पूर्णिमा, संवत् २०६१
अक्तूबर, २००४
युगाब्द– ५१०६

मूल्य : रु. २२.००

मुद्रक :
नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र
संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर,
लखनऊ – २२६ ००४

मुख-पृष्ठ चित्र परिचय

थमियाली (जिला रावलपिंडी) नामक गाँव पर मुस्लिम हुजूम द्वारा ८ मार्च १९४७ को आक्रमण करके ४०० सिखों की हत्या कर दी गई। एक गुरुद्वारा और एक स्कूल की इमारत को जला दिया गया। सारे गाँव में लगभग २० व्यक्ति ही बच पाये। इसी नरसंहार के शिकार एक परिवार के अवशेष, जिसके सदस्यों को इकट्ठा बाँध कर आग लगा दी गई। उनका मांस एक साथ जल गया, यद्यपि खोपड़ियाँ गिरकर बिखर गईं।

[चित्र साभार– प्रबोध चंद्र, विधायक तथा सचिव (शिकायत विभाग), पंजाब रायट सफरर्ज़ रिलीफ कमेटी, लाहौर द्वारा प्रकाशित चित्रावली 'रेप आफ़ रावलपिंडी' (पृठ-४); विवरण : गुरुचरण सिंह तालिब कृत 'मुस्लिम लीग अटैक आन सिख्ज़ एंड हिन्दूज़ इन दि पंजाब- १९४७']

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

समर्पण

संघ के पूर्व सरकार्यवाह

स्व. श्री माधवराव मुले

के प्रति,

जिन्होंने अपने आदर्श जीवन द्वारा

असंख्य स्वयंसेवकों को

समाज हेतु सर्वस्वार्पण की प्रेरणा प्रदान की।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

विषय क्रम

पृष्ठ

भूमिका १

लेखकीय २

रावलपिंडी विभाग

१. मौत के घेरे में ३
[स्थान : पिप्पलां (जिला मियांवाली) : सितम्बर, १९४७)]

२. वे ही तो थे हमारी प्रथम रक्षापंक्ति ८
[स्थान : वाह (जिला रावलपिंडी) व नौशहरा (उ.प. सीमा प्रान्त) : अक्टूबर, १९४७)]

उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त

१. सीमा प्रांत का वह गाँव भी अपवाद न रहा १३
[स्थान : कोट नजीबुल्ला (जिला हजारा) : मार्च, १९४७)]

२. वे योजनापूर्वक मुसलमान बने १९
[स्थान : ऐबटाबाद आदि : अगस्त, १९४७)]

३. हम उनके कुछ भी न लगते थे २४
[स्थान : बन्नू : जनवरी, १९४८) व अन्य]

मुलतान विभाग

१. जब संघ के जिला प्रचारक डी.एस.पी बने ३१
[स्थान : आरिफवाला (जिला मिंटगुमरी) : जून, १९४७)]

२. सैनिक वेश में कार्यवाही ३७
[स्थान : नूरशाह (जिला मिंटगुमरी) : जुलाई, १९४७)]

३. हमीद खान लाये रिवाल्वरों भरी बोरी और स्वयंसेवकों में बाँट दी ४०
[स्थान : डेरा गाज़ीखान : अगस्त, १९४७)]

४. छोटे गाँव की महान गाथा ४४
[स्थान : जलालपुर पीरवाला (जिला मुलतान) : अगस्त, १९४७)]

५. जड़ांवाला का पैशाचिक नरमेध ४७
[स्थान : जड़ांवाला (जिला लायलपुर) : ८ सितम्बर, १९४७)]

६. प्राण त्यागे, धर्म नहीं त्यागा ५३
[स्थान : लाला गाँव (जिला स्यालकोट) : सितम्बर, १९४७)]

जालंधर विभाग विभाग

१. स्वयंसेवकों ने कैसे बचाया अबोहर ? ५५
[स्थान : अबोहर (जिला फिरोजपुर) : अगस्त, १९४७)]

२. स्वयंसेवक हिन्दुओं पर ही क्यों टूट पड़े ? ६१
[स्थान : जालंधर : सितम्बर, १९४७)]

परिशिष्ट

विभाजन काल में पाक सेना के कुकृत्य - संक्षिप्त विवरण ६६

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

भूमिका

श्री विरमानी जी ने विभाजन के इतने वर्षों पश्चात् संकलन का जो कार्य किया है, वह सरल नहीं रहा होगा। वह सारा इतिहास रोमांच खड़ा करने वाला है। उस समय वहाँ मुस्लिम समाज तथा मुस्लिम सेना से लोग इतने भयभीत थे, यह प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित मुगलपुरा की घटना से पता लगता है। एक मुसलमान दिखने वाले व्यक्ति के गाड़ी में चढ़ जाने से हो-हल्ला हो गया। जिला मुलतान में तहसील शुजाबाद के जलालपुर पीरवाला गाँव में महारानी पद्मिनी की याद ताजा हो गई जहाँ २०० महिलाओं ने पाँच चिताएँ बनाकर धर्म रक्षार्थ आत्मदाह किया। ऐसी कितनी ही घटनाएँ स्थान-स्थान पर उन दिनों हुईं। जड़ावाला की बीबी अमर कौर का जहर खाना भी निरर्थक गया पर प्रभु कृपा से बच गई। इस सारे घटनाक्रम में कट्टरपंथी मुसलमानों पर विश्वास न करना ही पक्का होता है, जब सियालकोट की तहसील नारोवाल के नूरदीन तहसीलदार ने तुलसीराम के साथ विश्वासघात किया।

संघ के कार्यकर्त्ताओं ने किस कुशलता से आरिफदाला में पुलिस की आँखों में धूल झोंकी और किस चतुराई से अबोहर शहर को बचाया, यह घटनाएँ स्वयंसेवकों के साहस तथा दक्षता की परिचायक हैं। वास्तव में पूरे पश्चिमी पंजाब में संघ के स्वयंसेवक हिन्दू समाज का सहयोग ले अपने प्राणों की आहुति देकर भी कुशलता से वहाँ से लाखों हिन्दुओं की धर्म रक्षा कर बचा लाये, जबकि नई मिली आजादी का जश्न मनाने वाले देश को धोखा देकर स्वबन्धुओं को भूल ही गये थे।

मुस्लिम सेना का आम मुसलमानों के साथ मिलकर क्रूरतम अत्याचार करना आदि यह सब उनके पुराने अत्याचारों को स्मरण करवाने वाला इतिहास है। इन सब घटनाओं को लिखने का श्री विरमानी जी का हेतु यही है कि हिन्दू समाज जाग्रत हो तथा अपने कर्त्तव्य को पहचानें।

विश्वनाथ
अखिल भारतीय प्रमुख
धर्म जागरण विभाग, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लेखकीय

सुप्रसिद्ध विचारक गारफील्ड के इन शब्दों में विश्व-इतिहास का एक महान सत्य छिपा है, जिसे राष्ट्र नायकों के लिए मार्गदर्शन कहा जा सकता है:-

"वह राष्ट्र बचने योग्य नहीं है, जो अपनी किस्मत-आजमाई के समय अर्थात् परीक्षा की घड़ी में अपने वीरों और श्रेष्ठ पुरुषों को एकत्र करके संघर्ष में नहीं झोंक देता। वह संघर्ष कितना ही खूनी और संदिग्ध क्यों न हो, उस राष्ट्र को ऐसे समय बे-अन्दाज विनाश या पूर्ण सफलता के लिए तैयार रहना चाहिए।"

भीषण संघर्ष की दुंदुभि बजाने वाले इस संदेश के अनुरूप ही था देश-विभाजन के समय संघ के स्वयंसेवकों का कार्य-कलाप, जिसका प्रदर्शन उन्होंने हिन्दू समाज पर मंडराती विपत्तियों के निपटने हेतु किया। उस संकट-वेला में हिन्दू समाज ने संघ के स्वयंसेवकों के ही रूप में अपनी जीवन-शक्ति का प्रकटीकरण किया। इन वीरव्रतधारियों ने अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया था। संघर्ष कितना ही रक्तरंजित क्यों न रहा हो, उन्होंने स्थान-स्थान पर अपनी सारी युक्ति-बुद्धि तथा साहसिकता बटोर कर उसमें झोंक दी, तनिक भी चिन्ता न की अपने प्राणों की, जरा भी चाह न की अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं की, रत्ती भर मोह न किया अपने निजी परिवारों का। समाज के प्रति अपने कर्तव्य के पालन हेतु अपना सब कुछ न्योछावर करने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानी।

प्रस्तुत पुस्तक-माला में ऐसी ही कुछ घटनाओं को संकलित करने का अल्प-प्रयास मैंने किया है। पहले दो भागों में १०, १० तथा इस तीसरे भाग में १३, इस प्रकार मिल मिलाकर ३३ घटनाएँ संकलित कर पाया हूँ। घटनाएँ अनन्त हैं और संकलन-योग्य कार्य विशाल। प्रयत्न रहेगा कि कम से कम एक और भाग में कुछ और घटनाएँ इकट्ठी कर सकूँ। यह सब हमारे इतिहास का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है; ऐसे ज्वलंत प्रसंग हैं, जो आगामी पीढ़ियों के लिए प्रेरणापद हो सकते हैं।

मैं श्री अनन्त रामचन्द्र गोखले का अत्यंत आभारी हूँ, जिनका सतत् सहयोग इस कार्य में अति सहायक रहा।

मदनलाल विरमानी
६६-मोतासिंह नगर, जालन्धर- १४४००१

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रावलपिण्डी विभाग

मौत के घेरे में

२२ सितम्बर, १९४७ को शरणार्थियों से भरी ट्रेन लाहौर से चल कर अगले स्टेशन मुगलपुरा पहुँची। यात्रियों ने देखा कि एक मुसलमान और भारतीय सेना का कमांडर आपस में बातें कर रहे हैं। कुछ देर बाद गाड़ी सीटी देकर चलने लगी तो वह मुसलमान एक डब्बे में चढ़ गया। डब्बे में शोर मच गया, "मुसलमान चढ़ आया, मुसलमान चढ़ आया। किन्तु उसके पीछे एक भारतीय सैनिक भी था। उसने बताया कि "यह मुसलमान नहीं, हिन्दू है। इसे जगह दे दो।"

"तुम हिन्दू हो?" एक यात्री ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए उससे पूछा, "तब तुम्हारा यह मुस्लिम वेश कैसे? क्या नाम है तुम्हारा?" उसने अपना नाम ओम प्रकाश बताया और कहा कि मैं पिप्पलां जिला मियाँवाली का रहने वाला हूँ। सभी को हैरानी हुई कि जब मिली खबरों के अनुसार मियाँवाली क्षेत्र के सभी हिन्दूओं को नष्ट कर दिया गया है, तब यह व्यक्ति बचा कैसे? पूछने पर उसने अपना वृत्तांत इस प्रकार सुनायाः-

मियांवाली नगर में मेरी आढ़त की दुकान थी। लाखों का व्यापार था। १५ अगस्त को पाकिस्तान बना। उस से दस दिन पहले मैं अपने गाँव पिप्पलां चला आया। मेरे साथ पिप्पलां निवासी संघ के हमारे बीस अन्य स्वयंसेवक भी थे। यह मियांवाली स्कूल में पढ़ते थे। मुसलमानों की तरफ से आस-पास के अनेक गाँवों में खूब लूट-मार हो रही थी। किन्तु हमारा गाँव अभी बचा हुआ था। हम हिन्दुओं का वहाँ से निकलने का कोई उपाय न था, क्योंकि जो भी रेलगाड़ी हिन्दू शरणार्थियों को लेकर जाती, उसके सभी यात्रियों को मुसलमान रास्ते में ही समाप्त कर देते। ११ अगस्त को हमने गाँव के मन्दिर में एकत्रीकरण किया। निर्णय हुआ कि कायरों की मौत मरने की अपेक्षा मुकाबला करना श्रेयस्कर है। इसके लिए चाहिए थे शस्त्र। अतः योजना बनी। संघ के स्वयंसेवक गाँव की रीढ़ की हड्डी थे। उनमें से दस तथा गाँव के आठ अन्य व्यक्ति मुसलमानों (पठानों) के देहात में जाने को तैयार हो गये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अगले दिन इन सब ने भेस बदल कर सिंधु नदी को पार किया। पठानों का गाँव आधा मील दूर था। मुस्लिम वेशधारी इन सभी ने वहाँ जाकर सभाएँ करना प्रारम्भ किया। इन सभाओं में कहा गया, "अब हमारा पाकिस्तान बन गया है। यहाँ पर किसी काफिर को रहने का हक नहीं है। मुस्लिम लीग का फरमान है कि इन काफिरों का सारा माल-असबाब छीन कर इन्हें खत्म कर दो। अपने गाँव में उन्हें समाप्त करने के लिए हमें असलह की जरूरत है। वही लेने के लिए हम यहाँ पर आये हैं।" इस पर उन्हें सस्ते दामों पर शस्त्र मिल गये। इस तरह काफी हथियार इकट्ठे कर लिए गये।

मुसलमानों ने १८ अगस्त तक इर्द-गिर्द के बहुत से हिन्दू गाँव नष्ट कर दिये। अब उन आतताइयों की नजरें हमारे गाँव परै थीं। अतः वे रात को आते और 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगा कर चले जाते। हमारी संघ शाखा के अधिकारी ने दो स्वयंसेवकों को मुस्लिम वेश में मुसलमानों में यह जानने के लिए भेजा कि उन का क्या इरादा है। इधर हमने गाँव में ऊँचे स्थानों पर दो मोर्चे बना लिए। वे दो स्वयंसेवक सूचना लाये कि 'अब तक मुसलमान एक जगह पर तीन हजार की संख्या में शस्त्रों सहित एकत्र हो चुके हैं। पाँच हजार होने के बाद ही उन्होंने हमला करने को निश्चय किया है।'

५ सितम्बर को मीर अब्दुल्ला खान, एम.एल.ए. (विधायक) व जैलदार पिप्पलां ने गाँव के प्रमुख हिन्दुओं को बुलाया, सुरक्षा का विश्वास दिलाया और उन्हें अपने शस्त्रास्त्र उनके हवाले कर देने के लिए कहा। हिन्दुओं ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि यह हथियार लाइसेंस-शुदा हैं और हमारी सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। तब उसी रात मुसलमानों ने हल्ला बोल दिया। हम लोग ऊपर मोर्चे पर थे और वे नीचे। अतः उनकी कोई पेश न चली। चार घंटे की लड़ाई के बाद वे भाग खड़े हुए। उन की भारी हानि हुई। इसके बाद भी तीन बार उन्होंने हम पर हमले किये, परन्तु हर बार मुँह की खायी।

फिर एक दिन वे अपने साथ मुस्लिम सेना ले आये। उनके पास दो तोपें थीं। उन्होंने एक तोप का मुँह हमारे मोर्चे के सामने कर दिया और लगे गोले बरसाने। हमने भी गोलियाँ चलाईं किन्तु तोप के सामने हम बेबस थे। तोपों ने भारी तबाही मचाई। उन्होंने हमारे मोर्चे की ऊपर की मंजिल तोड़ दी। विवश होकर हमें नीचे की मंजिल में आना पड़ा। तुरन्त एक स्वयंसेवक को दूसरे मोर्चे वालों को शत्रु पर पीछे से हमला करने का निर्देश देकर भेजा गया।

अतः दो सौ हिन्दू बरछे, किर्चें, छुरे और गंड़ासे लेकर एकत्र हुए और पीछे से

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हमलावरों पर टूट पड़े। इधर हमने भी "हर हर महादेव" का घोष किया और गोलियों की बौछार शुरू कर दी। डेढ़ घंटे तक जम कर लड़ाई हुई। दोनों ओर की काफी हानि हुई। अन्त में मुस्लिम आक्रमणकारी अपने शस्त्र छोड़ कर भाग गये। इस संघर्ष में २०० हिन्दू शहीद हुए।

तीन दिन चैन से बीते। चौथे दिन मीर अब्दुल्ला खान मोर्चे की तरफ आया। उसके हाथ में पवित्र कुरान शरीफ था, जिसकी उसने शपथ खाते हुए कहा कि "यदि आप लोग अपने शस्त्र इत्यादि हमारे हवाले कर दें तो मैं आप सबको सुरक्षित रेलवे स्टेशन पर ले जाने की जिम्मेदारी लेता हूँ। वहाँ से आप लोगों को मियांवाली कैम्प ले जाने के लिए बाद-दुपहर स्पेशल ट्रेन चलने वाली है। यहाँ पर आप इस तरह कब तक मुकाबला करते रहेंगे?"

इस पर मुझे उसके पास भेजा गया। मैं मोर्चे से बाहर आया तो उसने मुझे अपनी बाँहों में भींच लिया। बड़ा प्यार प्रकट करने लगा। उसने फिर कुरान की कसम खाई और कहा, "आप लोग जाने के लिए तैयार हो जाओ। कोई मुसलमान आपका बाल भी बाँका न करेगा।"

मुसलमान नागरिकों से तो हम अच्छी तरह सुलट सकते थे पर पाकिस्तानी सेना के जवान तोपों सहित हमारे विरुद्ध मोर्चाबंद थे, पाक सरकार व स्थानीय प्रशासन की नीयत में भी खोट आ चुका था। अतः यही तय हुआ की मीर अब्दुल्ला की बात मान ली जाय। हमें अपना माल-असबाब सिरों पर ढो कर रेलवे प्लेटफार्म पर पहुँचने के लिए कहा गया। बाहर के सिगनल के पास दो बोगियाँ और इंजन खड़ा दिखाई दिया। किन्तु अंधेरा हो जाने पर ही इन्हें प्लेटफार्म पर लाया गया। हम बसके बोगियों में सवार होते ही सीटी बजी। पर यह सीटी इंजन की नहीं बल्कि हमारी सुरक्षा के लिए कुरान की कसमें खाने वाले एम.एल.ए., मीर अब्दुल्ला की थी। यह सीटी गाड़ी के चलने की नहीं, बल्कि आक्रमणकारियों के लिए संकेत थी, जिसे सुनकर आसपास छुपे हुए लगभग एक हजार गुंडे-बदमाश अपने हथियारों सहित दौड़े चले आये और लूटपाट व हत्याएँ शुरू कर दीं। दुष्टों ने अपने धर्मग्रंथ कुरान की कसमों को भी झुठला दिया। हम पहले ही निःशस्त्र कर दिये गये थे। विवश थे। मुस्लिम सेना के अधिकारी उन हत्यारों का नेतृत्व कर रहे थे।

मैं पहले से ही मन ही मन इस आक्रमण के प्रति आशंकित था। झट से कूद कर हमलावरों के दल में मिल गया। 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगता हुआ अंधकार का लाभ उठाकर धीरे-धीरे एक तरफ हो लिया। मैंबल गाँव वहाँ से कुछ ही मील दूर था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

चलते-चलते देर रात वहाँ जा पहुँचा। वहाँ मेरा एक जिगरी दोस्त रहता था। नाम था करीम बख्श। हमने कई बार मिल बैठकर इकट्ठे भोजन किया था। मेरे उसने आठ हजार रुपये भी देने थे। मैं उसके घर पहुँच गया। पिप्पलां का सारा हाल सुनाकर उसकी खुशामद की कि किसी तरह यहाँ से निकालो। किन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इतनी घनिष्ठता होते हुए भी उसने आँखें फेर ली थीं। उल्टी-पुल्टी बातें करते हुए बोला, "हमारे कुरान में लिखा है कि काफिर की हत्या करने वाले को बहिश्त मिलता है। अत तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ।'

मैंने उसकी हर तरह से चापलूसी की। पर उसके तेवर बदले हुए थे। मैंने उससे कहा, "लगता है तुम मुझे मारोगे ही। तुम्हारे रहम पर हूँ। जैसा चाहो सलूक करो। पर इतनी रात गये तुम्हारे घर आया हूँ एक कप चाय तो पिला दो यार!"

उसने अपनी बीबी से चाय तैयार करने को कहा। मैं उसकी नीयत भाँप गया था। अन्दर जाकर उसकी चारपाई पर बैठ गया। उसने बाहर से कमरे का दरवाजा बंदर कर दिया। उसके व्यवहार से उसके मन के भाव परिलक्षित हो रहे थे। उसकी चारपाई पर बिस्तर बिछा हुआ था। उसके तकिये के नीचे मैंने एक छुरा पड़ा हुआ देखा। मैंने इसे उठाकर अपने पांस छिपा लिया। इतने में वह अंदर आया। मुझे चाय पकड़ाई। मैं जैसे ही चाय पीने को हुआ कि मौका देखकर वह तकिये के नीचे से छुरा निकालने के लिए झुका। वह अब मेरी जान का गाहक बन चुका था। मैं भी भला अवसर क्यों चूकता? मैंने पूरे जोर के साथ छुरा उसकी गर्दन के आर-पार कर दिया। चीख सुनकर उसकी औरत बाहर से बोली, "अच्छा किया, काफिर को दोजख पहुँचा दिया।" वह उसकी चीख को मेरी चीख समझी थी। बड़ी प्रसन्न मुद्रा में वह ज्यों ही अंदर दाखिल हुई, उसका चेहरा एकदम मुरझा गया। स्पष्ट था कि मेरे कत्ल की साजिश में वह भी शामिल थी। वह मुझ पर झपटी पर मैं पहले से ही तैयार था। उसे भी वहीं समाप्त कर दिया।

मैं अपने 'दोस्त' की जिन्ना-टोपी, कोट और चुस्त पाजामा पहनकर घर से निकला। पूरा मुसलमान लग रहा था। वहाँ से रेलगाड़ी में बैठकर लाहौर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में पता चला के पिप्पलां के आधे से अधिक हिन्दू ट्रेन में मार दिये गये हैं। सैंकड़ों लड़कियों को अगवा कर लिया गया है। शेष मियांवाली कैम्प में हैं।

१५ सितम्बर को मैं लाहौर पहुँच गया। वहाँ लड़ाई समाप्त हो चुकी थी। परन्तु हिन्दुओं से भरी जो भी गाड़ी बाहर से वहाँ आती, उसे मुस्लिम लीगी गुंडे समाप्त कर देते। इस 'पुण्य कार्य' में मुस्लिम सेना के जवान भी शामिल होते। तीन गाड़ियाँ मेरे

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

होते आईं। उनमें सवार सभी हिन्दू खत्म कर दिये गये। आपकी गाड़ी को भी नष्ट करने की कोशिश में यह लोग थे, पर शायक आपकी किस्मत अच्छी है। यह पहली ट्रेन है, जो भारत जा रही है। मैं तीन दिन से मुगलपुरा आया हुआ था। आज इस गाड़ी का पता चला तो स्टेशन पर चला आया। आपके हिन्दू कमांडर को अपना वृत्तांत सुनाया तो उसने मुझ पर विश्वास करके गाड़ी में बैठने की अनुमति दे दी। इस तरह आप लोगों के साथ आ मिला हूँ, मृत्यु के तांडव से बचकर।

(मुख्य सूत्रः- प्रो. धर्मवीर)

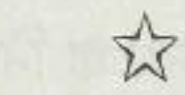

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वही तो थे हमारी पहली रक्षा-पंक्ति

नौशहरा (उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त) के निर्वासित सम्भ्रांत नागरिक श्री मोहन दास ने बताया कि प्रशासन ने चारों ओर निर्मित विकट परिस्थितियों पर काबू पाने के बजाय नौशहरा के निवासियों को २१ अक्तूबर, १९४७ की रात को आदेश दिया कि प्रातः छः बजे सभी प्रस्थान के लिए तैयार हो जाएँ। रात भर कोई सो न सका। रास्ते के लिए भोजन तैयार करते रहे। सामान बाँधते रहे। सामान उतना ही ले जाने की अनुमति थी, जितना एक आदमी उठा सके और पैदल चलकर रेलवे स्टेशन तक पहुँच सके।

प्रातः सभी अपने-अपने सामान के साथ स्टेशन की ओर चल पड़े। हम अपनी जन्मभूमि को छोड़कर जा रहे थे। अतः सभी के मन दुःखी थे। कहाँ जाएंगे, इसकी कुछ भी सुध न थी। एक कल्पना थी और सांत्वना भी कि बस हिन्दुस्थान जायेंगे। हर एक की तलाशी ली गई कि कोई असलहा तो नहीं साथ रख रहा। गुजरने का रास्ता मात्र दो फुट चौड़ा था। दोनों ओर काँटेदार तार लगा दिये गये थे। जो सामान गिर जाता, उसे उठाने की इजाजत न थी।

रेलवे स्टेशन पर हमारे लिए ४६ रेलवे वैगन बिना छत के खड़ी थीं। तीन वैगन सैनिकों के लिए थीं, एक बीमार व्यक्तियों के लिए। हम ५१०० थे। बड़ी कठिनाई से ४२ वैगनों में समा सके। १० बजे इंजन ने सीटी दी। सबने अपने पवित्र जन्मस्थान को साश्रु अंतिम प्रणाम किया।

गाड़ी नौशहरा जंक्शन से अटक पहुँची और पुनः आगे बढ़ने लगी। अटक के पर्वत एक-एक कर के हमारी आँखों से ओझल हो रहे थे। काबुल नदी और सिंधु नदी का संगम तो इन पहाड़ों के बीच कब का खो गया था। बहती सिंधु गुनगुनाती प्रतीत हुई, "विदा! विदा! अलविदा!"

गाड़ी रूमियां पहुँची। इंजन पानी लेने कैंबलपुर चला गया। गाड़ी यहाँ एक घंटा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रुकी रही। चलने के बाद यह कैंबलपुर न रुकी, सीधी वाह (जिला रावलपिंडी) पहुँची, क्योंकि कैंबलपुर में मुसलमान आक्रमणकारियों का समूह एकत्रित था। उन्होंने चलती ट्रेन पर गोलियाँ चलाईं। पाकिस्तान का केन्द्रीय मंत्री गजनफर अली स्टेशन पर खड़ा देखता रहा। उनकी गोलियों से पं. लछमन दास मारे गये। एक अन्य हिन्दू घायल हुआ। डाक्टर चौधरी, जो नौशहरा के संघ के अधिकारी थे और रोगियों की वैगन में उन के उपचार हेतु वहाँ सेवारत थे, उस घायल को देखने के लिए पहुँच पाते तब तक वह भी परलोक सिधार गया। ४ बजे सायं वाह (जिला रावलपिण्डी) पहुँच कर दोनों शहीदों का दाह संस्कार किया गया। तत्पश्चात सभी लोग वाह कैम्प पहुँच गये।

वाह कैम्प विभाजन से पूर्व पश्चिमोत्तर भारत का सम्भवतः सबसे बड़ा शरणार्थी शिविर था, जो पवित्र गुरुद्वारा 'पंजा साहिब' तथा प्राचीन ऐतिहासिक नगरी तक्षशिला (टैक्सिला या शाह नी ढेरी) के मध्य 'वाह' नामक गाँव के निकट स्थापित किया गया था।

हमें बताया गया कि महात्मा गांधी जी यहाँ ४ अगस्त, १९४७ को पधारे थे और बेहाल शरणार्थियों को सांत्वना देकर चले गये थे। वाह कैम्प में मोटे तौर पर दो प्रकार के शरणार्थी थे। एक तो वे, जो जनवरी और मार्च, १९४७ में अचानक दंगे भड़काने के बाद खाली हाथ यहाँ पहुँचे थे। दूसरे वे, जो पाकिस्तान बनने के बाद भी अपने घरों में टिके रहे थे, मगर अन्ततः उन्हें जबरदस्ती निकाला गया था। यहाँ से पहली गाड़ी २३ सितम्बर, १९४७ को शरणार्थियों को लेकर हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुई थी।

यहाँ पहुँचने पर हमें पता चला कि वाह कैम्प का प्रमुख तथा वहाँ का स्टोर इंजार्च, दोनों मिलकर शरणार्थियों को जी भर कर लूट रहे थे। जो आटा निर्वासितों में मुफ्त बाँटने के लिए आता था, उसे चार रुपये सेर के हिसाब से उन्होंने बेचा। इसमें भी मिलावट की जाती। मिलिट्री के इंचार्ज कर्नल चन्द्रशेखर से इसकी शिकायत की गई और रोटियाँ दिखाई गईं, पर उन्होंने हस्तक्षेप से इन्कार करते हुए कहा कि यदि मुझे दुकानों पर ब्लैक में जाता हुआ आटा दिखाया जाए तो शायद मैं कुछ कर सकूँ।

इस पर संघ के स्वयंसेवकों ने दुकानों पर बिक्री के लिए जाता हुआ आटा पकड़ा। तत्पश्चात स्टोर इंचार्ज बदल दिया गया और सारा आटा योग्य रीति से बाँटे जाने के लिए नौशहरा रिफ्यूजी कमेटी के हवाले किया जाने लगा। कर्नल ने हमें पंजा साहिब से खाद्य सामग्री लाने के लिए कुछ ट्रक दिये। इन का इंचार्ज एक मद्रासी सूबेदार था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पंजा साहिब के गुरुद्वारा में मुफ्त लंगर के लिए काफी राशन मौजूद था। परन्तु जब वहाँ के संरक्षकों से वाह कैम्प के लिए राशन देने को कहा गया तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। इस पर सूबेदार ने कहा, "कितना अंधेर है? कैम्प में आपके भाई भूखे मर रहे हैं और आप लोग हैं कि उजड़े हुए भाइयों के लिए अन्न भी नहीं दे सकते। तुम्हारा सारा सामान आक्रमणकारी मुसलमानों के हाथों में बेशक चला जाए, परन्तु अपने भाइयों को देने पर तुम्हें आपत्ति है!" सूबेदार को क्रोध आ गया। उसने काफी सामान उठवाकर ट्रकों में भरवा दिया। इस सामान में बरतन, कपड़े, बिस्तर, दालें, चावल आदि भी थे। कैम्प में लाकर इसे शरणार्थियों में बाँटा गया।

वाह कैम्प में सेना का प्रबन्ध काफी अच्छा था। संघ के अधिकारियों यथा डा. परसराम आदि के साथ उनकी घनिष्ठता हो गई। कर्नल संघ के स्वयंसेवकों को अति विश्वसनीय मानते तथा अनेक प्रकार के राहत कार्यों के लिए उन का सहयोग लेते। मुसलमानों की जो बैल गाड़ियाँ हिन्दू निर्वासितों का सामान स्टेशन से कैम्प तक लातीं, उनकी निगरानी में भी संघ के स्वयंसेवकों की सहायता ली जाती ताकि वह कोई शरारत न करने पायें। आखिर वे ही तो थे हमारी पहली रक्षा पंक्ति। कहीं भी हो, स्वयंसेवक सहायता हेतु पहले पहुँचते थे, सेना बाद में। वाह शिविर में नित्य प्रातः 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' का उद्घोष करने वाले यह लोग सेवा व सहायता का कोई भी मौका हाथ से न जाने देते।

कुछ दिनों के बाद पेशावर कैम्प के हिन्दू भी वाह कैम्प में आ गये। नौशहरा से हमारे स्वयंसेवकों ने उनके भी खान-पान की व्यवस्था का भार सम्भाल लिया। नौशहरा कैम्प समिति ने सेना को मानपत्र पेश किया। इन्हीं दिनों स्व. पूज्य भाई परमानंद जी के आत्मीय भाई जंगबीर लायसन आफिसर के रूप में आये। वे दूर-दूर के क्षेत्रों से हिन्दुओं को निकाल कर उन्हें सुरक्षित कैम्पों में पहुँचा रहे थे। वे पहले झंग, तलागंग, फतहजंग आदि से और फिर रावलपिंडी के इंचार्ज बनने पर मरी आदि से हिन्दुओं को निकाल कर लाये। रास्ते अति संकटपूर्ण थे। परन्तु भाई जी ने बड़े साहस से और कई बार तो प्राणों को भी खतरे में डालकर उन हिन्दू परिवारों को निकाला, जो मुसलमानों के घेरे में फँसे हुए थे।

इस दौरान नौशहरा और पेशावर के लगभग सभी निर्वासित भारत चले गये थे। डा. परसराम तथा उनके साथ कई अन्य स्वयंसेवक, जिन्होंने सब से अंत में वाह कैम्प से जाने का निश्चय किया था, अपने परिवारों के साथ अब भी वहाँ टिके थे। अंततोगत्वा ५ नवम्बर, १९४७ को उन सब को भी लारी द्वारा रावलपिंडी कैम्प में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पहुँचाया गया। वाह का हिन्दू कैम्प अब मुस्लिम कैम्प बनाया जाने लगा। हिन्दू कैम्प का दफ्तर रावलपिंडी लाया गया। ७ नवम्बर को जब हिन्दुओं ने वाह कैम्प खाली कर दिया तब मुस्लिम वहाँ आने लगे।

रावलपिंडी के निर्वासित शिविर के प्रधान स्वामी रामतीर्थ तथा मंत्री बख्शी राम स्वरूप थे। इनके साथ संघ के अन्य कार्यकर्त्ता सर्वश्री ओम प्रकाश, सुभाष चन्द्र, जीवनदास आदि मौत के साथ खेलते हुए कार्य कर रहे थे। इन दिनों कश्मीर पर पाकिस्तानियों का आक्रमण हो चुका था और पठान धड़ाधड़ रावलपिंडी के रास्ते कश्मीर जा रहे थे। रास्ते में वे एक दिन रावलपिंडी रुकते। यह कश्मीर जाने का केन्द्र था। डा. परसराम के पहुँचने पर डा. मदन लाल उन्हें शिविर के हस्पताल का चार्ज देकर भारत चले आये। वहाँ जो रोगी उपचाराधीन थे, वे कश्मीर, मुजफ्फराबाद आदि में पाकिस्तानी सैनिकों के अत्याचारों के शिकार बने थे। वे नाक, कान, बाजू, टाँगों आदि की आहुति दे चुके थे। उनकी अत्यन्त करुणाजनक स्थिति पाकिस्तानी सैनिकों की दरिंदगी का प्रमाण पेश कर रही थी।

रावलपिंडी में पहले श्री बिशनदास लायसन आफिसर थे। अब भाई जंगबीर कैंबलपुर और रावलपिंडी दोनों केन्द्रों के इंचार्ज हो गये। ११ नवम्बर तक उन्होंने विभिन्न स्थानों में फँसे हुए ३०० हिन्दुओं को निकाल कर भारत भेजा। रावलपिंडी के हिन्दू निर्वासितों के लिए गाड़ी ४ मील दूर चकलाला से चलती थी। चार मील के इस मार्ग की रक्षा गोरखा सैनिक कर रहे थे। गाडी के चलने के दिन बहुत ज्यादा हिन्दू स्टेशन पर पहुँच जाते। इसलिए कितनों को निराश वापस लौटना पड़ता। १५ नवम्बर को श्री जंगबर ने सूबेदार वेणु गोपाल की निगरानी में रावलपिंडी कैम्प में अब तक टिके हुए नौशहरा के स्वयंसेवकों को चकलाला स्टेशन पर पहुँचा दिया। गाड़ी में बैठने वाले डब्बे नहीं, बल्कि बिना छत की कोयले की बैगनें थीं। गाड़ी ठीक २ बजे बाद-दोपहर चली। रास्ते में वर्षा भी हुई। सभी भीग गये।

यह लोग १६ नवम्बर प्रातः लाहौर पहुँचे। डा. परसराम के नेतृत्व में यह सभी स्वयंसेवक लाहौर छावनी स्टेशन से लारी द्वारा नगर में डी.ए.वी. कालेज कैम्प में पहुँचा दिये गये। जहाँ कैम्प कमांडर बृजलाल कर्नल पोर्टर और सूबेदार मेजर लाल बहादुर के अधीन काम कर रहा था।

१७ नवम्बर को नौशहरा-दल लाहौर के लिए चल पड़ा। लारियों ने शाम के ७-३३ पर पाकिस्तान की सीमा पार की और ७-३६ पर मातृभूमि में प्रवेश किया। यहाँ लारियाँ कुछ समय के लिए रुकीं। सभी ने उतर कर स्वतंत्र भारत की पवित्र धूल माथे

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पर लगाई और परमात्मा का लाख-लाख धन्यवाद किया। सभी रात के दस बजे छहर्टा पहुँचे। फिर वहाँ से अगले दिन अमृतसर होते हुए जालन्धर पहुँचे। वहाँ हम भाई-भाई जंगबीर जी के मकान पर ठहरे। उन दिनों पूज्य भाई परमानन्द जी अपने निवास स्थान पर बीमार थे। पहले उस वीर तपस्वी के दर्शन एक समारोह में हुए थे। इस दृष्टि से बहुत प्रसन्नता हुई। परन्तु उन्हें रोगशय्या पर देखकर सभी उदास हो गये। ऐसे राष्ट्रभक्त के बिस्तर पर पड़े रहने से राष्ट्र की उन्नति का अमूल्य समय नष्ट हो रहा था। रोग का बड़ा कारण था देश का विभाजन। वे सदा कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का विरोध करते रहे थे, पर कांग्रेसी नेताओं ने उनकी एक न सुनी थी। परिणामस्वरूप मुस्लिम कुचक्र सफल हो गया था। हिन्दू समाज के इस विनाश से उनके मन-मस्तिष्क को भारी ठेस लगी थी। तथापि अपनी आंतरिक पीड़ा में भी, हमें देखकर उन्होंने मुस्करा कर आशीर्वाद दिया, "मैं प्रसन्न हूँ कि हिन्दू समाज के इस संकटकाल में आप सभी संघ के स्वयंसेवक स्थान-स्थान पर पूरी शक्ति झोंक कर यथावश्यकता सेवा, सहायता तथा संघर्ष कर रहे हैं। निःसन्देह आप लोग ही भविष्य की आशा हैं। हाँ-हाँ, सब प्रकार की निराशा में भी देश की आशा हैं, एक मात्र आशा।"

हमें स्पष्ट दिखाई दिया, उनके मुस्कराहट भरे आशीर्वाद में भी एक टीस थी। यह टीस थी देश के विभाजन की। अंत में इसी टीस के आघात ने एक दिन उस महान राष्ट्र-आराधक को सदा की नींद सुला दिया। उल्लेखनीय है कि इससे पहले पूज्यश्री मदन मोहन मालवीय जी भी इसी आघात के शिकार हो चुके थे।

(सूत्र- प्रो. धर्मवीर)

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त

सीमा प्रांत का वह गाँव भी अपवाद न रहा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जो स्वयंसेवक योजनापूर्वक मुसलमानों की वेशभूषा में अपने-अपने कार्यक्षेत्र में घूमा-फिरा करते थे, उनमें एक नाम डा. मंगल सेन का भी है, जो बाद में हरियाणा की राजनीति में सक्रिय होकर मंत्री भी रहे।

स. बेअन्तसिंह सरहदी (सम्पादक, पंजाब साप्ताहिक 'सिमरन', जालन्धर) बताते हैं, "उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत के हजारा जिला में स्थित हमारे कस्बा कोट नजीबुल्ला में श्री मंगलसेन ने संघ शाखा प्रारम्भ की थी। सन् १९४६ में वे मैंट्रिक पास करके हमारे यहाँ संघकार्य प्रारम्भ करने आये थे। छोटी ही आयु थी। वे संघ के प्रचारक थे। प्रातःकाल युवकों की शाखा लगाते और शाम को बच्चों की। अपनी संगठन कुशलता से कुछ ही दिनों में उन्होंने सब नवयुवकों और बच्चों को संगठन की लड़ी में पिरो दिया था।

"वह कोई ज्योतिषी तो नहीं थे किन्तु उन्होंने गाँव के सभी लोगों को इस वास्तविकता का अहसास करवा दिया था कि हालात जो मोड़ ले रहे हैं, उसमें यदि सावधान न रहे और अपनी रक्षा के लिए स्वयं तैयार न हुए तो मुसीबत विकराल रूप ले सकती है। उन्होंने हमारे इलाके में जो जागृति की लहर पैदा की, वह बाद में बड़ी मददगार साबित हुई। उन्होंने सब को एकता और प्रेम के रंग में रंग दिया था।

"वह जब आये थे तो उन्होंने सिर पर चोटी रखी हुई थी। बाद में उन्होंने चोटी कटवा दी। रंग तो पहले ही काला था। चोटी कटवाने के बाद रंग-रूप हिन्दू जैसा बिल्कुल न रहा। शरीर भारी था, मुँह चौड़ा और आँखें चमकीली। चेहरे पर हर समय मुस्कराहट खेलती रहती। वे आमतौर पर पाजामा और कमीज पहनते थे किन्तु अब सलवार या लुंगी पहनना भी शुरू कर दिया था। यह उनके बलिष्ठ शरीर पर खूब फबती थी। चाय के वे बेहद शौकीन थे। उन्होंने आस-पास के मुस्लिम गाँवों में चक्कर लगाना शुरू किया। होमियापैथी के अभ्यास के कारण वे उन सब में डाक्टर साहिब के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नाम से प्रसिद्ध हो गये और लोकप्रिय भी। उनका मुसलमानी नाम था हमीद- डा. हमीद। मुस्लिम समुदाय की मीटिगों में वे बेखटके शामिल होते। हर मीटिंग या नमाज के बाद जो भी बातचीत होती, उसकी सूचना वे आकर हमारे गाँव कोट नजीबुल्ला के गुरुद्वारा में हमारे पूज्य पिता जी स. शाम सिंह सहगल को देते रहते।"

सन् १९४० में नागपुर से श्री माधव राव मुले संघ कार्य के लिए पंजाब में प्रांत प्रचारक के रूप में आये थे। कार्य का विस्तार तीव्रगति से हुआ। सन् १९४६ तक हन्दू संगठन का यह कार्य सारे उत्तर पश्चिमी क्षेत्र जिसमें अविभाजित पंजाब, जम्मू कश्मीर तथा सीमाप्रांत शामिल थे, में फैल गया और समाज का आशा केन्द्र बन गया।

उत्तर पश्चिमी सीमाप्रांत को अंग्रेजों ने सन् १९०१ में पंजाब से अलग कर दिया था। इसके छः जिले थे- हजारा, मरदान, पेशावर, बन्नू, कोहाट और डेरा इस्माई खाँ। इन इलाकों में पठानों व अन्य मुसलमानों की जनसंख्या काफी अधिक थी। हिन्दू (सिखों सहित) आटे में नमक के बराबर थे यद्यपि उनका प्रभाव अपने-अपने क्षेत्र में अच्छा था। गाँव में एक-दो केशधारी या सहजधारी हिन्दुओं की दुकानें होतीं। सारा गाँव उन्हें 'शाह जी, सेठ जी या सरदार जी' के नाम से पुकारता।

सीमाप्रांत में हिन्दुओं की जनसंख्या लगभग साढ़े तीन लाख थी। संघ की शाखाएँ अनेक छोटे-बड़े नगरों में खुल चुकी थीं। नवम्बर, १९४६ में पेशावर शाखा के वार्षिक उत्सव में तत्कालीन सरसंघचालक परम पूजनीय श्री गुरुजी (श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) पधारे। उत्सव में सीमाप्रांत के गणवेशधारी स्वयंसेवकों की संख्या दस हजार थी। उनके अतिरिक्त उपस्थित जनता की संख्या पचास हजार के लगभग थी।

श्री गुरुजी ने अपने भाषण में कहा कि आज इस क्षेत्र में भले ही हमारा बहुमत न हो पर यह हमारी मातृभूमि है और हम सब हिन्दू राष्ट्र के घटक हैं। आज हमारी दुर्बलता यही है कि हम एक सूत्र में पिरोये हुए नहीं हैं। उन्होंने उपस्थित जनसमूह के सम्मुख इतिहास का संदर्भ प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी इस दुर्बलता के निवारण के लिए महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति हरि सिंह नलुआ ने भी इस क्षेत्र के हिन्दुओं को एक सूत्र में पिराने के लिए यहाँ अनेक संघर्ष किये। हर दर्रे में उनके बनवाये हुए किले इस बात का प्रमाण हैं कि वे कितने महान हिन्दू-रक्षक थे।

श्री गुरुजी ने कहा कि काबुल तथा यहाँ के देहात से आए लोगों से मेरा कहना है कि वे अपना सम्पर्क यहाँ पेशावर के संघ बन्धुओं से बनाये रखें, जिससे हर समय सब एक-दूसरे के काम आ सकें।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मुस्लिम लीग के विषैले प्रचार के कारण परिस्थितियाँ बिगड़ती चली जा रही थीं। सन् १९४६ के आखिरी दिनों में देहात में इक्की-दुक्की वारदातें शुरू हो गयी थीं।

सिख इतिहास के लेखक ठाकुर देशराज के अनुसार, "उत्तर भारत में मुस्लिम लीग ने झगड़ों की शुरूआत सरहदी सूबे के हजारा जिले से की, क्योंकि यहाँ मुस्लिम आबादी ९५ फीसदी थी। सन् १९४६ ई. में १२ दिसम्बर को बटल, सुम इलाही भुंग, गढ़ी जल्लो और उग्गी नाम के गाँवों पर पहला हमला हुआ। इस हमले में बटल गाँव के ११ सिख-हिन्दू मारे गये और ११ ही घायल हुए। उग्गी के बाजार को लूट लिया गया और पाँच हत्याएँ सिख-हिन्दुओं की हुईं। इन दोनों गाँवों के सिख-हिन्दू भाग कर सुम इलाही भुंग में पहुँच गये थे। यहाँ भी हमला हुआ और १४ आदमियों को जान से मार दिया गया तथा २१ को जख्मी किया गया। गढ़ी जल्लो के गुरुद्वारे को ध्वस्त कर दिया गया।

"१८-१२-४६ को मानसेरा तहसील के एक गाँव गढ़ी हबीबुल्ला पर हमला हुआ। यहाँ एक हिन्दू को पहले तो लूटा गया फिर उसे कत्ल कर दिया गया। हवेली गाँव पर कई हमले हुए, जिससे तंग आकर वहाँ के हिन्दू-सिख मिलिट्री की रक्षा में पंजाब की ओर चल पड़े। इससे एक सप्ताह पहले ता. ११-१२-१९४६ को दद्दड़ गाँव पर हमला हुआ, जिसमें वहाँ पर आये हुए ४० शरणार्थी इस हमले के शिकार हुये। उनमें से १० कत्ल कर दिये गये। जख्मी सभी हुए। सब लूट लिए गये।

"इन गाँवों के अलावा मोहरी, दिवल, आखरूटा, पिप्पल, जावा, गहुड़ा फुल गाड़ा, धणाख, मुहाड़ी, कड़छां, मलाछ, दाखली, सैर, बफा, सिहालियाँ, समधरा, जबोड़ी, संगकियारी, बालाकोट और भाटा, इन तथा अन्य सभी स्थानों पर लूट-पाट और धार्मिक स्थानों के ध्वंस के अलावा कत्ल हुये।

"चूँकि अब तक सरहद में डाक्टर खान (कांग्रेस) की सरकार थी, इसलिए कांग्रेस ने केवल शरणार्थियों को सांत्वना देने के सिवा इस अत्याचार के विरुद्ध कोई जोरदार कार्रवाई नहीं की। इन झगड़ों में मुस्लिम अफसर दंगाइयों के मददगार रहे। यही कारण था के गुंडे लोग पूरी तरह मनमानी करके ही किसी गाँव से बाहर होते थे। भाटा गाँव में ११६ सिख जिंदा ही जला दिये गये। मलाछ में ११५ हिन्दू-सिख कत्ल किये गये।"

इसी जिला हजारा का उपरोक्त गाँव कोट नजीबुल्ला सीमाप्रांत और पंजाब की सीमा पर, गुरुद्वारा पंजा साहिब से लगभग १० मील की दूरी पर स्थित था। टैक्सिला

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

(तक्षशिला) से एक छोटी रेवले लाईन जिला हजारा के कसबा हवेलियाँ तक जाती थी, जिसके टैक्सिला और उसमान खट्टड़, दो स्टेशन पंजाब में थे और कोट नजीबुल्ला, हरिपुर, सराय साल्हा, मालढेर तथा हवेलियाँ, यह पाँच रेलवे स्टेशन सीमाप्रांत के जिला हजारा में पड़ते थे। रेल यातायात यहाँ तक ही था। आगे पहाड़ी इलाका था। इसके आगे रामकोट की सीमावर्ती चौकी थी, जिसके दोनों ओर पुलिस तैनात रहती थी, एक ओर सीमाप्रांत की और दूसरी ओर कश्मीर की। इससे आगे जम्मू-कश्मीर के मुजफ्फराबाद की ओर बढ़ते हुए पहाड़ों के बीच बनी हुई एक घाटी आती है। यह घोड़ा गली कहलाती है, क्योंकि मोटर गाड़ियों से पहले उस गली में से होकर घोड़े और खच्चर मुजफ्फराबाद जाते थे। इन इलाकों में अंग्रेज शासक तथा अधिकारीगण गर्मियों में आकर ठहरा करते थे।

जैसी परिस्थितियाँ चारों ओर पैदा हो रही थीं, कोट नजीबुल्ला भी उनका अपवाद न रहा। स. शाम सिंह सहगल इस क्षेत्र के प्रसिद्ध समाजसेवक थे, स्थानीय गुरुद्वारा के मंत्री तथा इलाका की खत्री बिरादरी के प्रधान। गुरुद्वारा में ४ मार्च, १९४७ को एक पत्र प्राप्त हुआ। उसमें चेतावनी दी गई थी कि अब पाकिस्तान बनने वाला है। यहाँ पर कोई भी हिन्दू-सिख नहीं रहने दिया जाएगा। आप लोग ११ मार्च तक गाँव खाली कर जायें, नहीं तो सब को खत्म कर देंगे। पत्र के साथ एक सूची भी भेजी गई थी कि इन ११ आदमियों को पहले समाप्त किया जाएगा और इसके बाद सबको लूटेंगे। सूची में सभी नाम केशधारियों के ही थे। सबसे ऊपर स. शाम सिंह सहगल का नाम था।

दूसरे दिन ५ मार्च को गुरुद्वारे में दीवान सजा। स. शाम सिंह जी ने कीर्तन के बाद अपने भाषण में घोषणा की कि यह हमारा पुरखों का गाँव है। हमारे बाप-दादा की यहाँ जायदादें हैं। हम छोड़कर नहीं जाएंगे। ११ मार्च को यदि आक्रमण हुआ तो पूरा मुकाबला करेंगे।

सुरक्षात्मक तथा प्रतिरोधात्मक कार्रवाइयों में तेजी लाई गई। गुरुद्वारा में पानी की एक टँकी बनाई गयी। दरवाजे पर लोहे का गेट लगा दिया गया। कुछ शस्त्रास्त्र, तेजाब, खाली बोतलें आदि इकट्ठी की गईं। इलाका की सब बहू-बेटियों को गुरुद्वारा में इकट्ठा किया गया। हिन्दू-सिख दिन में दुकानें खोलते और शाम को जल्दी बन्द करके घरों को चले जाते। कुछ नवयुवक गुरुद्वारा में ही रहते।

स. शाम सिंह सहगल जी के सुपुत्र श्री बेअंत सिंह सरहदी बताते हैं कि इस छोटे से गाँव में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा लगती थी। यह शाखा उस समय

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सभी रक्षात्मक कार्यों का केन्द्र बिन्दु थी। ११ मार्च, १९४७ को प्रातःकाल ही कोट नजीबुल्ला के बाहर हजारों मुस्लिम लीगी हमलावरों का इकट्ठा होना शुरू हो गया। लगभग साढ़े नौ बजे वे गाँव के बाजारों की तरफ बढ़ने लगे। गुरुद्वारा में बड़ा मोर्चा था। हिन्दू-सिखों के जो पक्के और ऊँचे पाँच-सात मकान थे, उन पर भी मोर्चे कायम किये गये।

एक मोर्चा स. शामसिंह सहगल के घर के सामने सरदार परमानंद सिंह के मकान पर था (इनका परिवार इन दिनों कपूरथला में आबाद है)। दूसरा मोर्चा श्री साईंदास भाटिया के मकान पर था, जो कि इन दिनों जालंधर में आबाद सुप्रसिद्ध डा. जे.टी. भाटिया (जगतारण भाटिया) अस्पताल वालों का निवास स्थान था। एक मोर्चा गाँव के दूसरी तरफ श्री रामचंद्र सहगल के मकान पर था। इनका परिवार अब डोई वाला, देहरादून में बसा हुआ है।

हमलावर 'पाकिस्तान जिंदाबाद, बनके रहेगा पाकिस्तान-लेके रहेंगे पाकिस्तान, या अली, नारा-ए-एकबीर' के नारे लगाते, ढोल बजाते, बाजारों की ओर बढ़े। स. शाम सिंह गुरुद्वारा के मोर्चा से सारी स्थिति को देखते हुए सारे सुरक्षा कार्य का नेतृत्व कर रहे थे। विभिन्न मोर्चों पर तैनात नौजवानों का नेतृत्व डा. मंगलसेन जी कर रहे थे। उनके पूछने पर शाम सिंह जी ने कहा कि अगर यह लोग नारे लगाते हुए शांतिपूर्ण ढंग से निकल जाएँ तो ठीक हैं। यदि हमला करें तो जवाब दो।

श्री बेअंत सिंह सरहदी बताते हैं कि सब तरफ दहशत छायी हुई थी। इस दौरान एक हवाई फायर हुआ। गुरुद्वारा से भी इसके उत्तर में हवाई फायर किया गया। मैं उस समय गुरुद्वारा साहिब में मौजूद था। मेरी आयु मात्र ११ वर्ष की ही थी। हमलावरों की तरफ से तीन फायर हुये। जवाब में गुरुद्वारा की तरफ से भी तीन फायर हुए। तत्पश्चात सीधी फायरिंग शुरू हो गई। बस फिर, सायं ५ बजे तक शां-शां, ताड़-ताड़ गोलियाँ दोनों ओर से चलती रहीं।

मौत सबके सामने थी। भयानक दृश्य था। किन्तु सबने बड़ी हिम्मत से मुकाबला किया। हजूम जिस ओर भी बढ़ा, उसका डटकर सामना किया गया। इस बीच एक गोली स. शाम सिंह जी को आकर लगी। वे गुरुद्वारा की तीसरी मंजिल पर खड़े होकर सारे मोर्चे की कमान संभाल रहे थे। दूरबीन उनके पास थी। गोली लगते ही खून की धार चल पड़ी। कुछ लोगों ने दुःख और घबराहट प्रकट की तो सरदार जी ने कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। हम सब अपने वतन और धर्म की रक्षा कर रहे हैं। वाहे गुरु हमारी मदद पर हैं। इस तरह 'चढ़दी कला' की बातें करते हुए वे शहीदी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

को प्राप्त हुए।

इस आक्रमण की सूचना पाकर सायंकाल ५ बजे डिप्टी कमिश्नर आए। उनके साथ गोरखा रेजिमेंट के कुछ जवान थे। दोनों ओर से गोलीबारी बन्द हो गयी।

इस संघर्ष में हिन्दुओं की तरफ से सरदार शाम सिंह सहगल शहीद हुए, जबकि आक्रमणकारियों में से ५० से अधिक व्यक्ति मारे गये। बाद में कुछ लोग गाँव छोड़कर चले गये और कुछ इस उम्मीद पर कि शीघ्र ही हालात में सुधार हो जाएगा, गाँव में टिके रहे। किन्तु जब १५ अगस्त, १९४७ को बाकायदा पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया तो सबको ही पुरखों के अपने प्यारे कसबा को छोड़ना पड़ा।

लेखक– **मदनलाल विरमानी**

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वे योजनापूर्वक मुसलमान बने

"आर.एस.एस. के सदस्यों को एक ऐसा काम सौंपा गया था, जिसे सिखों द्वारा सम्पन्न किया ही नहीं जा सकता था। अलग ही झलक के रूप में रंग के कारण सिख अपने आप को मुसलमानों के रूप में खपा नहीं सकते थे, जबकि आर.एस.एस. ने न जाने कितनी बड़ी संख्या में, अपने सर्वश्रेष्ठ अनुयायियों को मुसलमानों के साथ मिलाकर कराची भेज दिया था। प्रत्येक अनुयायी को ब्रिटिश आर्मी मिल्स का बना एक-एक हथगोला दिया गया था। कोई अनुयायी किसी भी अन्य अनुयायी को पहचानता तक नहीं था, ताकि किसी एक की गिरफ्तारी की सूरत में दूसरों की भी गिरफ्तारी हो जाने का कोई खतरा न रहे।

"१४ अगस्त के दिन इन अनुयायियों को कराची के उन भीड़ भरे रास्तों पर खड़े हो जाना था, जहाँ-जहाँ से मुहम्मद अली जिन्ना का विजय जलूस निकलने वाला था। पाकिस्तान के संसद सदन से लेकर गवर्नर जनरल के अधिकृत निवास स्थान तक पाकिस्तान का जन्मदाता अपने जीवन के सर्वोच्च क्षणों में खुद की जनता के बीच से, जब खुली गाड़ी में गुजर रहा हो, तब उन अनेक उन्मादियों में से किसी न किसी को ऐसा अवसर अवश्य मिलने वाला था, जब वह अपना हथगोला फेंक कर उस राजनयिक की हत्या कर सके।"

कह नहीं सकते कि लारी कोलिंस और दोमिनिक लापियेर ने अपनी पुस्तक 'फ्रीडम एट मिडनाइट' में लार्ड माउंटबेटन तथा पाकिस्तान के जन्मदाता मुहम्मद अली जिन्ना की उपरोक्त आशंका का किस आशय तथा किस हेतु एवं उद्देश्य से बड़े विस्तार से और उसे प्रामाणिक सिद्ध करते हुए वर्णन किया है।

कराची के असेम्बली हाल में जिन्ना और माउंटबेटन अपने संक्षिप्त भाषणों के बाद जब काले रंग की राल्स-रायस की खुली गाड़ी की तरफ बढ़े तो उक्त पुस्तक के वर्णन के अनुसार, माउंटबेटन उस पर जिन्ना के साथ सवार होने से पहले ही आशंकित हो सोचने लगे, "अभी से यह शव गाड़ी जैसी लग रही है।'

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आगे का वर्णन भी कम रोचक नहीं। लेखक द्वै लिखते हैं, "सड़क के किनारे मनुष्यों का समुद्र उन्हीं के इंतजार में लहरा रहा था। 'पाकिस्तान जिन्दाबाद, कायदे आजम जिन्दाबाद, माउंटबेटन जिन्दाबाद' के नारे लगाते और खिलखिलाते लोगों के उस समुद्र में न जाने कहाँ, किस गली के किस नुक्कड़ पर उस व्यक्ति का अजनबी चेहरा छिपा हुआ था, न जाने किस खिड़की से झाँक रहा था। वह अकेला नहीं था। उस जैसे अनेक व्यक्ति थे, जो तीन मील लम्बे उस पूरे रास्ते पर बिखर चुके थे- उन्हीं की इंतजार में अकुलाते हुए। तीन मील पूरे इस रास्ते पर फौज के जवान मौजूद हैं, लेकिन वे क्या कर सकेंगे? उनकी पीठें भीड़ की तरफ घूमी हुई हैं। हत्यारे ने कब हाथ घुमाया और बम फेंक दिया, उन्हें पता भी नहीं चलेगा।

"एकाएक कार के चारों ओर से उठ रही 'जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!' की आवाजें चुप को गईं। भीड़ तो थी, लेकिन डरावने ढंग से खामोश। माउंटबेटन समझ गये कि कार एक हिन्दू मुहल्ले से गुजर रही है। यहीं...यहीं. वह होगा... यहीं....। उन्होंने अपने आप को मृत्यु से आलिंगन के लिए तैयार कर लिया। वे पाँच मिनट, जब एल्फिंस्टन स्ट्रीट की भीड़ में से कार गुजरी, उस यात्रा के सबसे भयानक पाँच मिनट थे। कराची के प्रमुख व्यापार क्षेत्र एल्फिंस्टन स्ट्रीट की अधिकांश दुकानें हिन्दुओं की थीं और वे अपने मुसलमान पड़ोसियों का उन्माद-भरा आनन्द देखकर बुरी तरह आशंकित हो रहे थे।

"वह क्षेत्र गुजर गया। कुछ न हुआ। गवर्नमेन्ट हाउस के दरवाजे राल्स-रायस के सामने एकाएक प्रगट हुए लार्ड माउंटबेटन के जीवन की सबसे डरावनी कार-यात्रा पूरी हो गई थी।

"कार ज्यों ही रुकी, जिन्ना का चेहरा, जो उस पूरे दौर में अत्यंत चिंतातुर और रंगहीन बना रहा था, पहली बार जरा प्रसन्न दिखाई दिया। एक गर्म मुस्कान उस कमजोर चेहरे पर चमकने लगी। अपने हड्डी-हाथों से जिन्ना ने माउंटबेटन के घुटने पकड़ लिये और बुदबुदा कर कहा, 'खुदा का शुक्र है, मैं आपको जिन्दा बचा कर ले आया हूँ।'

"माउंटबेटन दंग रह गये। ढिठाई की हद है, उन्होंने सोचा और आश्चर्य से कहा, "माई गाड! कौन किसे बचा कर लाया है? आप मुझे या मैं आपको?"

राई का पहाड़ बनाने का मुहावरा तो सबने सुन रखा है, किन्तु बिना राई के भी पहाड़ बनाने की कला कोई 'फ्रीडम एट मिडनाइट' के इन लेखकों से सीखे, क्योंकि १४ अगस्त १९४७ को कराची में जिन्ना अथवा माउंटबेटन की हत्या की ऐसी कोई

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

योजना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की थी ही नहीं। 'फ्रीडम एट मिडनाइट' के अनुसार इस योजना की सूचना माउंटबेटन को अपने अति विशिष्ट गुप्तचर विभाग से प्राप्त हुई थी। परन्तु संघ के प्रमुख अधिकारियों ने ऐसी किसी भी योजना से इन्कार किया हैं।

तथापि संघ के सभी अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि अवश्य की है कि उन संकटपूर्ण दिनों में पंजाब व दिल्ली के अनेक स्वयंसेवकों को मुस्लिम वेशभूषा धारण करवाकर योजनापूर्वक मुसलमानों में शामिल करा दिया गया था ताकि वे उनकी गतिविधियों की जानकारी लाकर हिन्दू समाज की रक्षा के कार्य में पर्याप्त सहायक हो सकें। इसके लिए यदि उनमें से अनेकों को सुन्नत करवानी पड़ी, नमाज याद करनी पड़ी या शरीर के किसी भाग पर चाँद-तारा का निशान बनाना आवश्यक लगा, तो वह भी सब कुछ उन्होंने किया।

ऐसे व्यक्तियों में से कुछ-एक के नाम आज सर्वविदित हैं। एक थे लाहौर के श्री हरीश। लाहौर में उन्होंने सनातन धर्म कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। शारीरिक दृष्टि से यद्यपि वे दुबले-पतले व सामान्य कद के साधारण व्यक्ति दिखाई देते थे किन्तु चलते-पुरजे और चतुर युवक होने के साथ-साथ असीम आत्म-विश्वास के धनी थे। संघ के तत्कालीन पंजाब प्रांत प्रचारक श्री माधव राव मुले की प्रेरणा से वे लाहौर से ऐबटाबाद (उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत) में आकर आजम खाँ के नाम से 'खान-आफ बोई' की उपाधि धारण कर रहने लगे थे। यहाँ से शस्त्रास्त्र खरीद कर लाहौर भेजने का उत्तरदायित्व वे भली भाँति निभाते रहे। वहाँ की पुलिस को यह सूचना मिल चुकी थी कि लाहौर से हरीश नाम का कोई व्यक्ति था ही नहीं। था तो अति विनोदी स्वभाव का एक 'खान आफ बोई', जिसने मुस्लिम अफसरों के साथ इतनी घनिष्ठता पैदा कर ली थी कि उस पर जरा सा भी शक पैदा होने का प्रश्न ही पैदा नहीं हो सकता था। उसके पास अपनी कार थी। सबको अपना परिचय यह दे रखा था कि वह उत्तर प्रदेश का रहने वाला है और अलीगढ़ का छात्र रहा है। उसने बतलाया था कि वह कौम का पठान है। उसके बुजुर्ग अहमदशाह अब्दाली के साथ हिन्दुस्थान आये थे और रोहेलखंड में एक छोटी सी रियासत बनाकर वहीं टिक गये थे। सबकों उसने यही जानकारी दी थी कि वह रिसायत तो अब खत्म हो चुकी है परन्तु उसका थोड़ा सा हिस्सा पुरखों की जागीर के रूप में उसके आधिपत्य में है। उसी जागीर के नाम पर ही उसे 'खान आफ बोई' के नाम से पुकारा जाता है। वह हँसता हुआ कहता, "ऐबटाबाद खान बहादुर आजम खाँ को बहुत पसन्द आया है और बस अब खान साहिब यहीं बस जाने का इरादा रखते हैं।"

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

इस प्रकार श्री यशपाल का मुसलमानी नाम था मुहम्मद लतीफ। वह सीमाप्रांत का स्वयंसेवक था। सलवार पहनने के बाद उसे पहचानना कठिन हो जाता था कि वह हिन्दू है या अहिन्दु। उसने सुन्नत भी करवा रखी थी और कलाई पर चांद-तारा का निशान भी खुदवाया हुआ था। उस का कार्य क्षेत्र श्रीनगर तय किया गया था।

यशपाल के साथ काम करने के लिए एक और स्वयंसेवक की नियुक्ति की गई थी। वह था देवराज। इस का नाम रफीक निश्चित किया गया था और कार्यक्षेत्र था जम्मू।

बंसी लाल, गफूर के नाम से कार्य कर रहा था। उसे मुस्लिम लीग की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने का कार्य दिया गया था। उसने बाल बढ़ा लिये थे। सलवार तथा जिन्ना टोपी के साथ बिल्कुल मुसलमान लगता था। नमाज भी याद कर ली थी।

श्री लेख राज शर्मा, जो उन दिनों मुलतान विभाग प्रचारक थे, बताते हैं कि हर समय हरे रंग की कमीज, सफेद सलवार और चाँद-तारे के बिल्ले वाली जिन्ना टोपी पहनकर घूमने वाले सतपाल सोबती माननीय माधवराव मुले की योजनानुसार सादिक अली हो गये थे। वे रावलपिंडी में एक बुजुर्ग हकीम के शागिर्द बन कर रहने लगे और मुस्लिम लीग में सक्रिय होकर कार्य करते रहे। वह मुलतान के स्वयंसेवक थे। उन्होंने अपने बारे में हकीम साहिब को बताते हुए यह कहानी गढ़ी थी कि वे अमृतसर से उज़ड कर आये हैं, जहाँ उनके घर पर हिन्दुओं ने हमला करके मकान जला दिया था। श्री सतपाल सोबती पाकिस्तान बनने के बाद भी तीन-चार मास तक पाकिस्तान ठहरे रहे थे। तत्पश्चात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा उनके जिम्मे किया गया जासूसी का सारा काम वे भारत सरकार को सौंप कर भारत आ गये। बाद में वे फगवाड़ा में एक बड़े उद्योगपति बने। अब वे इस संसार में नहीं हैं।

इसी प्रकार सूरज प्रकाश, जो अमृतसर का स्वयंसेवक था, ने डाक्टरी पास करने के बाद योजनापूर्वक सलीम नाम धारण कर लिया था। उसे मुलतान भेजा गया था। उसने वहाँ अपने आप को हिसार का निवासी प्रकट किया और कहा कि मुस्लिम लीगी होने के कारण उसके घर पर जब हिन्दुओं के हमले होने लगे तो उसने हिसार को छोड़ देना ही मुनासिब समझा और मुलतान आ गया।

श्री जानकी दास भी इसी प्रकार के काम के लिये लाहौर के मुगलपुरा क्षेत्र में जावेद मियां के नाम से एक कारखाने में काम करते थे। वह रावलपिंडी के स्वयंसेवक थे।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उन दिनों परिस्थितियों की गम्भीरता की माँग ही यह थी कि सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं की नियुक्तियाँ की जायें, जो अपने प्राण हथेली पर रखकर मुसलमानों में घुल-मिल जाएँ और मुस्लिम लीगी षड्यंत्रों का पता लगायें तथा तत्संबंधी जानकारी संघ तथा सरकार के अधिकारियों के पास पहुँचायें ताकि उसके यथोचित परिमार्जन के लिए आवश्यक पग उठाये जा सकें। इन स्वयंसेवकों ने मुस्लिम लीग में घुसपैठ कर ली थी। मौका पा कर वे श्री माधवराव मुले, पं. लेखराज शर्मा, श्री पातुरकर व ठा. रामसिंह जैसे प्रमुख कार्यकर्ताओं को लीगियों के षड्यन्त्रों की जानकारी देते रहते थे। इन सूचनाओं के कारण लाखों हिन्दुओं की जाने बचाई जा सकीं।

ऐसे ही समर्पणशील स्वयंसेवकों के कर्तृत्व से दिल्ली में भी एक बहुत बड़े षड्यन्त्र का पता लगाया जा सका। श्री वसंतराव ओक, तत्कालीन दिल्ली प्रांत प्रचारक, बताते हैं कि मुस्लिम लीग के आतंकवादी जत्थे (टेररिस्ट सैल) द्वारा हिन्दुस्थान के, विशेषतः कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को एक साथ समाप्त कर देने की योजना बनाई गई थी। पटियाला में उनका एक केन्द्र था, जहाँ से निर्देश प्राप्त होने के पश्चात विध्वंसकारी योजनाओं को अंतिम रूप दिया जाता था। संघ के ऐसे ही कर्मठ स्वयंसेवकों द्वारा समय-पूर्व प्राप्त सूचना के आधार पर तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को उक्त षड्यन्त्र की जानकारी संघ के अधिकारियों द्वारा दी गई। सावधान हो जाने तथा सुरक्षा की उचित व्यवस्था हो जाने से वह भयंकर कांड टल गया। यही वह अवसर था, जब सरदार पटेल को संघ के महत्त्व को अंगीकार करना पड़ा और वे जवाहर लाल नेहरू के संघ-विरोधी रुख को गलत ठहराते हुए संघ के प्रशंसक बन गये थे। इसीलिए जब सन् १९४८ में पंडित नेहरू द्वारा संघ पर प्रतिबंध लगाया गया तो सरदार पटेल उस प्रतिबन्ध को हटवाने में सहायक सिद्ध हुए। बाद में उन्होंने संघ को समूचे रूप से कांग्रेस में लाने का भी प्रयास किया। किन्तु चरित्र-निर्माण का संघ का कार्य प्रचलित राजनीतिक कार्य की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण होने के कारण सरसंघचालक प. पू. श्री गुरु जी ने सरदार पटेल की बात स्वीकार न की। दिल्ली में स्वयंसेवकों की उपरोक्त महत्त्वपूर्ण भूमिका की नेहरू जी के सहपाठी श्रीयुत श्री प्रकाश के पिता प्रसिद्ध इतिहासकार डा. भगवान दास ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

(मुख्य सूत्र : बलराज मधोक कृत 'जीत या हार' तथा लेखराज शर्मा कृत 'धधकता पंजाब और आर.एस.एस.)

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मुलतान विभाग

हम उनके कुछ भी न लगते थे, तो भी...

श्रद्धेय महात्मा गांधी जी की आशा-आकांक्षाओं को सर्वथा ठुकराकर कांग्रेसी नेताओं ने देश का विभाजन स्वीकार कर लिया था। परिणामस्वरूप पश्चिमी पंजाब, सिंध, पूर्वी बंगाल तथा उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत में लाखों वर्षों से रहते लगभग दो करोड़ हिन्दुओं को पाकिस्तानी पाशवी अत्याचारों का सामना करना पड़ा। ऐसे समय में उन्हें सुरक्षित भारत में लाने का कार्य प्राणों का मोल देकर भी संघ के असंख्य स्वयंसेवकों ने किया। भारत में आये उन निराश्रित लोगों के ठहरने व भोजन आदि की व्यवस्था भी संघ के स्वयंसेवकों ने की।

१५ अगस्त, १९४७ के दिन जिस समय दिल्ली में "झंडा ऊँचा रहे हमारा" के गान के साथ स्वतंत्रता का उत्सव मनाया जा रहा था, उस समय पंजाब, सिंध, बंगाल तथा सीमा प्रांत आग और फसाद की लपटों में धू-धू कर जल रहे थे। इन प्रदेशों में हत्याकांड, नरमेध, लूटमार, अपहरण तथा बलात्कार आदि का बाजार गरम था। दिल्ली में जश्न था तो लाहौर में वहशत।

श्री ना.ह. पालकर के अनुसार, इस संकट-काल में संघ के स्वयंसेवक धैर्यपूर्वक आगे बढ़े और सम्पूर्ण शक्ति से परिस्थिति का मुकाबला करने लगे। रोने या कराहने के लिए उनके पास समय नहीं था तथा लड़ते-लड़ते मर जाने वाले अपने स्वयंसेवक बंधुओं की वीरगति पर दो क्षण अश्रु बहा लेना भी उनके लिए सम्भव न था। प्रतीत होता था कि लीगी गुंडों ने पंजाब, सीमा प्रांत तथा सिंध से हिन्दुओं को जड़-मूल से नष्ट कर देने का निश्चय कर लिया है। ऐसे समय संघ के स्वयंसेवकों ने अपने बंधुओं तथा माँ-बहनों को भारत की सीमा में पहुँचा देने की योजनाएँ अत्यंत साहस तथा कुशलतापूर्वक सफल कर दिखाईं। उन्होंने न रात देखी न दिन, न धूप देखी न वर्षा और न भूख या प्यास की ही चिंता की। कमान से छूटे तीरों के लिए कैसा विश्राम और किसका डर? उनका एकमेव कार्यक्रम यही था कि अपने बंधुओं को संकट से निकालते समय होने वाले आघातों को हँसते-हँसते अपने सीने पर झेलना और शरीर रक्त से लथपथ होने

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पर भी ५०-५० मील का फासला तय करते हुए ५-५ हजार लोगों के जत्थों को भारतीय सीमा में लाकर छोड़ना। ट्रकों और जीप गाड़ियों को चैन नहीं था, साइकलें अखंड दौड़ती थीं। हिन्दू-मुस्लिम एकता के नारे लगाने वाले नेता उस समय जाने कहाँ लुप्त हो गये थे। श्री ए.एन. बाली ने अपने ग्रंथ में यह समस्त वर्णन करते हुए स्पष्ट लिखा है, "ऐसे कठिन समय में जनता की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के सिवाय मैदान में आ ही कौन सकता था?"

इस संदर्भ में बन्नू (सीमा प्रांत) से भारत पहुँची सुश्री पार्वती भाटिया का एक संस्मरण यहाँ उद्धृत करना अनुपयुक्त न होगा। उनकी आप-बीती उन्हीं के शब्दों में:-

"मेरी आयु उस समय १२ वर्ष की होगी जब हमारे देश का विभाजन हुआ। हम लोग परिवार सहित जिला बन्नू (सीमा प्रांत) से भारत की ओर आ रही रेलगाड़ी द्वारा हजारों की संख्या में निकल पड़े हिन्दू परिवारों के साथ १० जनवरी, १९४८ को अपनी जन्मभूमि को आखिरी प्रणाम कर और ठंडी आहें भरकर धर्म बचाने की खातिर चल दिये।

"मुझे अच्छी तरह याद आता है की रास्ते में बन्नू से लेकर माड़ी इन्डस तक ठहराव के स्टेशनों पर जहाँ-जहाँ गाड़ी रुकी, खाकी निक्कर वाले रोटियाँ, बच्चों के लिए दूध व पानी के टीन हम हिन्दू मुसाफिरों को देते थे। मैं छोटी थी। मैंने अपने बड़े भैया से पूछा, ये लोग कौन हैं? उन्होंने कहा कि 'ये संघ वाले हैं। हिन्दुओं की रक्षा, सहायता किस तरह हो, इन्हें यह शिक्षा दी जाती है, जैसे मैं भी शाम को आर्य समाज मंदिर में शाखा पर जाया करता था।'

"हमारी गाड़ी माड़ी इन्डस से बदल दी गई और हम सब यात्रियों को दूसरी गाड़ी में सवार कर दिया गया। हमारी आँखों के सामने दुष्ट कबायली बन्दूकें तथा तलवारें चमकाते हुए ट्रकों द्वारा अगले पड़ाव पर हमसे पहले पहुँच जाते थे। हमारी गाड़ी में सुरक्षा के लिए गोरखा रेजिमेंट के जवान थे। गाड़ी क्योंकि धीमी गति से चलती थी, इसलिए कबायली हमसे पहले पहुँच जाते। १२ जनवरी, १९४८ की रात को हमारी गाड़ी को स्टेशन से पहले घुप्प अंधेरे में रोक दिया गया। काफी समय बाद अफवाह फैलाई गई कि इंजन का कोयला खत्म हो गया है। बच्चों की चीखें, बड़े-बूढ़ों द्वारा जप जी साहब का पाठ, ईश्वर आराधना, सबके मुँह पर प्रभु नाम! हमें क्या पता था कि हम लोगों के साथ क्या होने वाला है। अचानक गोलियों की आवाज से रेल में सवार सब घबरा उठे, खिड़कियाँ बन्द कर दी गईं। मिलिट्री ने मोर्चे संभाल लिये। जब तक मिलिट्री के पास गोला-बारूद था और अंतिम साँस तक प्राण थे, उन्होंने गाड़ी की

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रक्षा की। अन्ततः अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए। गोलियों की आवाज थमने के बाद ही गिद्ध, चीलों तथा भूखे कुत्तों की तरह वे कबायली दरिंदे जो कल तक हमारा नमक खाते थे, बेतहाशा टूट पड़े। मारकाट मचा दी तथा नौजवान बहनों और माताओं को जी भरकर लूटा। मैंने अपने शरीर को मुर्दा बनाकर लाशों के बीच, जिनमें मरे अपने परिवार के नौजवान, बड़े-बूढ़े तथा बच्चे छुरों से कटे हुए तथा गोलियों से छलनी पड़े हुए थे, बचाये रखा। भोर होते ही हम जो बच्चे बच गये थे जानवरों की तरह गाड़ियों में लादकर आगे की तरफ रवाना कर दिये गये। अटारी पहुँचते ही खाकी निक्कर वालों ने हम लोगों की हर प्रकार की सेवा और सहायता की। अनायास ही रास्ते का वह दृश्य पुनः आँखों में तैर गया।

"हम इनके कुछ भी न लगते हुए भी, इन लोगों ने अपनों से बढ़कर हमारी सहायता की। आज मैं भी अपने परिवार, अपने बच्चों को यही शिक्षा देती हूँ कि आप भी खाकी निक्कर वाले बनो और पूरे हिन्द समाज की सेवा में लगो।"

उन दिनों के नरसंहारों की अनंत लोमहर्षक घटनाएँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली कार्यालय में संग्रहीत दस्तावेजों के रूप में सुरक्षित हैं, जिन्हें भारतीय इतिहास संकलन समिति के प्रमुख ठाकुर रामसिंह जी ने अनेक प्रदेशों में घूम-घूम कर बड़े यत्नपूर्वक संकलित किया है। इन घटनाओं को पढ़ते-पढ़ते कभी आँसू उमड़ पड़ते हैं, तो कभी खून खौल उठता है।

हिन्दू प्रायः निःशस्त्र थे और प्रतिरक्षा के उपायों से भी अनभिज्ञ। प्रभावित इलाकों में हिन्दुओं का संख्या-बल भी कम था तथा पुलिस में भी योजनापूर्वक मुसलमानों की भर्ती विपुल थी। जिन जिलों में विभाजन से पहले अर्थात् मार्च, १९४७ से अगस्त, १९४७ के दौरान हिन्दुओं पर तीव्र आक्रमण किये गये, वहाँ आबादी का प्रतिशत अनुपात इस प्रकार थाः-

जिला	मुस्लिम	हिन्दू (सिखों सहित)
१. रावलपिंडी	८०:००	१८.६७
२. कैमलपुर	९०.४२	९.३६
३. मियांवाली	८६.१६	१३.७६
४. जेहलम	८९.४२	१०.४१
५. सरगोधा	८३.६८	१४.८८
६. गुजरात	८५.५८	१४.२
७. मुलतान	७८.१	२०.५२

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

८. गुजरांवाला	७०.४५	२२.७०
९. सियालकोट	६२.०९	३१.१२
१०. लाहौर	६०.६२	३५.९

उपरोक्त जिलों में अगस्त, १९४७ से पूर्व तथा पश्चात हिन्दुओं (सिखों सहित) के सामूहिक संहार, उनकी महिलाओं के अपहरण, लूटपाट तथा उनके घरा को आग लगाने का क्रम अत्यन्त तेजी से चला।

उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत में तो हिन्दुओं की जनसंख्या और भी कम थी। हजारा जिला, जिसे मुस्लिम लीग ने जुलाई, १९४६ तथा बाद में दिसम्बर, १९४६ में सर्वप्रथम आक्रमणों के लिए चुना, में मुसलमानों की जनसंख्या ९४.९४ प्रतिशत थी। अन्य जिलों में यह प्रतिशत अनुपात इस प्रकार था:-

जिला	मुस्लिम	हिन्दू (सिखों सहित)
पेशावर	९०.३४	९.६५
कोहाट	९१.९९	८.१
बन्नू	८७.०६	१२.९३
मरदान	९५.४६	४.५२
डेरा इस्माईल खाँ	८५.७८	१४.२१

मुस्लिम आबादी की इस प्रबल बहुसंख्या के साथ-साथ पुलिस में भी उनकी भारी संख्या मौजूद थी। उस समय पंजाब में पुलिस कांस्टेबलों की कुल तादाद २४,०९५ थी, जिसमें मुसलमान १७८४८ थे, हिन्दू (सिख मिलाकर) ६१६७ तथा यूरोपियन व एंग्लो-इंडियन ८० थे। पुलिस में हिन्दू-सिखों का प्रतिनिधित्व उनकी जनसंख्या की तुलना में बहुत कम था।

ऐसी सभी विपरीत परिस्थितियों में भी संघ के स्वयंसेवकों ने जिस तत्परता, साहस, सामर्थ्य तथा शूरवीरता का परिचय दिया, वह अद्वितीय है। उदाहरणार्थ विभाजन के समय अकेले लाहौर में २२५ शाखाएँ लगती थीं। इनमें से कई शाखाओं में तो सर्दियों में भी १०० के लगभग दैनिक उपस्थिति रहती थी। इससे वहाँ के हिन्दुओं में जबरदस्त आत्म-विश्वास का भाव निर्मित हुआ। मार्च, १९४७ में रावलपिंडी व अन्य स्थानों पर हुए हिन्दुओं के हत्याकांडों से मुसलमानों के मन्सूबे स्पष्ट होते गये तथा स्वयंसेवकों ने स्थान-स्थान पर रक्षा योजनाएँ बनानी शुरू कीं। लोगों को संगठित करने, आत्मरक्षा के उपाय बताने और सहायता कार्य के लिए धन संग्रह करने के कार्य में वे जी-जान से जुट गये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अच्छी शाखा में प्रायः दो प्रकार के दल संगठित किये जाते थे। एक दल था खबरें लाने वाला। सुरक्षा के लिए प्रति-पक्ष की तैयारी के बारे में जानकारी रखना आवश्यक होता है। इस काम में कई स्वयंसेवक अति निपुण थे। कई स्वयंसेवकों की उर्दू भाषा पर अच्छी पकड़ थी। इस कारण केवल वेश-भूषा बदल कर ही काम बन जाता था। जहाँ अधिक खतरा होता, वहाँ जाने के लिए कई स्वयंसेवकों ने सुन्नत भी करा ली थी और कुरान की आयतें भी याद कर ली थीं।

दूसरा दल था सुरक्षात्मक। मुहल्लों में रात के समय गश्त लगाना, मोर्चे बनाना, महिलाओं और बच्चों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना, एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश पहुँचाना आदि कार्य इसके जिम्मे होते थे। अनेक कार्यों में बाल स्वयंसेवकों का भी काफी योगदान रहता।

शासन की नीति पक्षपातपूर्ण थी। हिन्दू अधिकारियों को दूर-दराज के या कम महत्त्व के क्षेत्रों में स्थानांतरित कर दिया गया था। पुलिस, मिलिट्री, फायर बिग्रेड तथा प्रशासनिक विभागों में ज्यादातर मुसलमान ही थे। अतः वीरता, योग्यता आदि अनेक गुण होने के बावजूद, अंग्रेज सरकार की भेदभावपूर्ण नीति के फलस्वरूप प्रशासनिक अधिसत्ता की कमी के कारण हिन्दुओं का पलड़ा कमजोर था। कर्फ्यू में भी मुसलमानों को तो घूमने-फिरने की छूट रहती किन्तु कोई हिन्दू यदि जरा भी बाहर निकलता, चाहे अपने घर की आग बुझाने के लिए ही क्यों न हो, उसे गोली का निशाना बना दिया जाता।

मार्च, १९४६ में रावलपिंडी आदि जिलों में मुसलमानों के योजनाबद्ध व भीषण आक्रमणों के कारण उन जिलों से पीड़ित तथा निर्वासित हिन्दुओं का ताँता पूर्वी जिलों की ओर लगना शुरू हो गया था। इन असहाय बन्धुओं के लिए कुछ करना आवश्यक था। सरकार तो जड़वत अकर्मण्य थी। ब्रिटिश शासन मुसलमानों का पक्षधर बना हुआ था। शासन में बैठे मुसलमान कर्मचारी अपने हम-मजहबों की हिंसक कार्रवाइयों के प्रति न केवल सहानुभूति ही रखते थे, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित भी करते। हिन्दू कर्मचारी अपने मुस्लिम वरिष्ठों के इस रुख के कारण असहाय होकर सब कुछ देखते और सहते रहते।

अतः आने वाले शरणार्थियों की सेवा तथा सहायता के लिए लाहौर में संघ की ओर से पंजाब रिलीफ कमेटी का गठन किया गया। एक अनुशासनबद्ध संगठन होने के कारण संघ का कोई भी कार्य देखते ही देखते सम्पन्न हो जाता था। अकेले लाहौर में ही जब संघ के अधिकारियों ने शाखाओं में सूचना दी कि प्रत्येक स्वयंसेवक कल

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

एक-एक बर्तन लाये, तो दूसरे दिन १०,००० बर्तन एकत्रित हो गये। फिर धन और कपड़ा भी आने लगा। वस्त्रों के तो पहाड़ ही लग गये। एक स्वयंसेवक जो उस समय ला-कालेज का विद्यार्थी थे, समिति के कार्यालय मंत्री बने।

तत्पश्चात पंजाब भर में सभी बड़े कस्बों में रिलीफ़ कमेटी की शाखाएँ खोली गईं। हज़ारों शरणर्थियों को भोजन, कपड़ा, किराया आदि सब प्रकार की सहायता दी जाने लगी। तदर्थ अनेक जीपें, ट्रक आदि वाहन भी प्राप्त किये गये। धीरे-धीरे पंजाब रिलीफ़ कमेटी के कार्यक्षेत्र की परिधि बढ़ती गई। अब केवल निर्वासितों की सेवा-शुश्रुषा तक ही कार्य सीमित न रहा। हिन्दू-समाज का सब परिस्थितियों में संरक्षण करने की दृष्टि से स्वयंसेवकों का अग्रिम पंक्ति में आ खड़ा होना भी आवश्यक हो गया। उदाहरण के रूप में दंगों के दिनों में संकटग्रस्त क्षेत्रों में से महिलाओं और बच्चों आदि को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना, जहाँ-जहाँ हमलों की आशंका हो, वहाँ सुरक्षात्मक प्रबंधों हेतु शीघ्रतापूर्वक पहुँचना, जरूरत के अनुसार जीपों, ट्रकों आदि की व्यवस्था वर्गरह अनेक कार्य समय की माँग बन गये और स्वयंसेवक इन कार्यों में जुट गये। जिन दिनों छुरेबाजी की घटनाएँ बढ़ने लगीं, तब आहत व्यक्तियों को अस्पताल पहुँचाने तथा मृतकों को श्मशान भूमि ले जाकर उनके दाह संस्कार के उचित प्रबंध की जिम्मेदारी मेडिकल कालेज के छात्र स्वयंसेवकों को दी गई। ऐसे कई कामों के लिए मुस्लिम बहुत क्षेत्रों में जान हथेली पर रखकर जाना पड़ता था। संघ के स्वयंसेवकों ने यह कार्य निडरतापूर्वक सम्पन्न किये। आग बुझाने के लिए स्वयंसेवकों ने पृथक फायर ब्रिगेड का भी प्रबन्ध लाहौर और अमृतसर में किया।

प्रांत भर में पंजाब रिलीफ कमेटी की ओर से सहायता केन्द्र खोले गये। इनमें अकेले अमृतसर जिला में ही तरनतारन, पट्टु, खेमकरण, खालड़ा, अटारी, अजनाला तथा डेरा बाबा नानक सात मुख्य सहायता केन्द्र थे। यद्यपि खेमकरण लाहौर जिला में और डेरा बाबा नानक गुरदासपुर जिला में थे, परन्तु व्यवस्था की दृष्टि से संचालन तरनतारन शाखा से होता था। जिला अमृतसर के इन केन्द्रों पर रोजाना लगभग ३५००० लोग भोजन करते थे। फिरोजपुर, मलोट, मुक्तसर, मोगा, जीरा, तलवंडी, फाजिलका तथा अबोहर में भी बड़े सहायता केन्द्र थे, जहाँ कई-कई हजार लोगों का भोजन नित्य वितरित होता था। नित्य भोजन के अलावा शरणार्थियों को कपड़ा तथा किसी-किसी परिस्थिति में धन की सहायता भी की जाती थी। यह कार्य कई मास तक चलता रहा।

इसी प्रकार दिल्ली में भी संघ की प्रेरणा से अप्रैल, १९४७ में हिन्दू सहायता

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

समिति का गठन किया गया। दिल्ली प्रांत के संघचालक ला. हंसराज गुप्त इसके अध्यक्ष थे और श्री वी.पी. जोशी, एडवोकेट, महासचिव। इस समिति ने सबसे प्रमुख जो कार्य अपने हाथ में लिया था, वह था हजारों की संख्या में प्रतिदिन दिल्ली आने वाले शरणार्थियों की कैम्पों में रहने, खाने-पीने, वस्त्र व दवा आदि की व्यवस्था। इसके लिए स्वयंसेवक प्रातः ५ बजे से रात के ११ बजे तक रेलवे स्टेशन पर उपस्थित रहते। पहले स्टेशन पर ही शरणार्थियों को अल्पाहार दिया जाता और बाद में नजदीक के क्वींस गार्डन कैम्प में उन्हें ले जाकर भोजन दिया जाता। इनमें चार प्रमुख कैम्प थे- बिरला हाई स्कूल के पास सब्जी मंडी कैम्प, हिन्दू महासभा भवन कैम्प, पंचकुइयाँ कैम्प और नरेला कैम्प। सैंकड़ों की संख्या में स्वयंसेवक रात-दिन इन कैम्पों में काम करते थे। डिप्टी कमिश्नर, डी.एस.पी., एम.एल.ए. वगैरह भी इन कैम्पों के निरीक्षणार्थ पहुँचे। श्रीमती सुचेता कृपलानी ने दो-बार आकस्मिक रूप में आकर कार्य के बारे में संतोष व्यक्त किया।

उधर पूर्वी पाकिस्तान में दिसम्बर, १९४७ से मार्च, १९५० तक हुए हिन्दुओं के कत्लेआम के परिणामस्वरूप पश्चिमी बंगाल तथा असम की तरफ भारी संख्या में हिन्दुओं का निष्क्रमण प्रारम्भ हो गया। निर्वासित बन्धुओं की सहायता के लिए संघ की तरफ से 'वास्तुहारा सहायता समिति' का गठन कलकत्ता में ८ फरवरी, १९५० को बैरिस्टर पी. रणदेव चौधरी की अध्यक्षता में हुआ। समिति की ओर से सहायता कार्य फरवरी से अगस्त मास तक लगातार चलता रहा। समिति ने बंगाल तथा असम में क्रमशः १५ तथा ११ सहायता केन्द्र खोले, जिनमें ५ हजार से अधिक स्वयंसेवक इस सारी अवधि में कार्य करते रहे। समिति के विभिन्न सहायता शिविरों में ८० हजार से अधिक निर्वासितों को नियमित भोजन दिया जाता रहा। १,५०,००० व्यक्तियों में कपड़े की १५०० गाँठें वितरित की गईं। स्वयंसेवकों की प्रेरणा से कई स्थानीय डाक्टर निर्वासितों के मुफ्त औषधोपचार के लिए तैयार हो गये और इस जिम्मेदारी को भली-भाँति निभाते रहे।

असम में लगभग १०० परिवारों को स्थायी रूप से बसाया गया और २०० से अधिक परिवारों को अस्थायी रोजगार दिलाया गया। निर्वासित विद्यार्थियों को पुस्तकों तथा छात्रवृत्तियों से भी सहायता की जारी रही।

(सूत्रः पांचजन्य, नई दिल्ली- १६ अगस्त, १९८७)

– मदन लाल विरमानी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जब संघ के जिला प्रचारक डी.एस.पी. बने

जून, १९४७ की बात है। दीपालपुर तहसील का प्रवास पूर्ण करके श्री रामदत्त मिंटगुमरी लौटे ही थे कि समाचार मिला कि आरिफवाला में बम बनाते समय विस्फोट हो जाने से तहसील प्रचारक श्री विश्वनाथ तथा नगर कार्यवाह श्री मदन लाल गंभीर रूप से घायल हो गये हैं और मरणासन्न अवस्था में पड़े हैं। पुलिस को बम विस्फोट की खबर मिलते ही शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया है और पुलिस विस्फोट-स्थल की तलाश में है।

श्री रामदत्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मिंटगुमरी जिला के प्रचारक थे। जिला की पाँच तहसीलें थीं: मिंटगुमरी, पाकपटन, दीपालपुर, ओकाड़ा और चीचावतनी। मिंटगुमरी तहसील प्रचारक के रूप में श्री विट्ठलराव देवघरे कार्य कर रहे थे। उन्होंने संघ के अधिकारियों के निर्देशानुसार नागपुर (महाराष्ट्र) से आकर मिंटगुमरी कालेज में प्रवेश लिया था। पढ़ाई तो एक निमित्त था युवकों से सम्पर्क करने का, उद्देश्य था हिन्दू संगठन का विस्तार एवं दृढ़ीकरण। श्री विश्वनाथ पाकपटन तहसील प्रचारक थे (वे गत दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्रीय प्रचारक थे, जिसमें पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर एवं दिल्ली का समूचा क्षेत्र शामिल है तथा इन दिनों संघ के धर्म जागरण विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख की जिम्मेदारी निभा रहे हैं)। श्री प्रकाश चन्द दीपालपुर तहसील प्रचारक थे, श्री देवदत्त ओकाड़ा मल चीचावतनी तहसील प्रचारक।

आरिफवाला के समाचार से श्री रामदत्त चिंतित हो उठे थे। समय बहुत कम था, और दुर्घटना की विकटता अत्यंत शीघ्रता की माँग कर रही थी। दोनों घायल कार्यकर्त्ताओं को पुलिस के पहुँचने से पहले ही दुर्घटना स्थल से निकालकर हस्पताल पहुँचाना आवश्यक था। आरिफवाला में संचारबंदी (कर्फ्यू) थी। ऐसे में शहर में प्रवेश कर जख्मी कार्यकर्त्ताओं के साथ बाहर आना, सचमुच एक अग्निपरीक्षा थी।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उन्होंने तुरंत गुप्तचर विभाग में काम करने वाले एक स्वयंसेवक को एक बाल स्वयंसेवक के द्वारा संकेत-स्थल पर अतिशीघ्र मिलने की सूचना भेजी। इसी स्वयंसेवक के माध्यम से श्री रामदत्त सरकार के विविध क्रिया-कलापों की जानकारी प्राप्त किया करते थे। वह था सरकार के गुप्तचर विभाग में संघ का गुप्तचर। संकेत-स्थल पर मिलने पर श्री रामदत्त ने उसे बताया, "अपने तहसील प्रचार विश्वनाथ और नगर कार्यवाह मदनलाल बम-विस्फोट से घायल होकर आरिफवाला में पड़े हैं। बोलो, क्या करें?"

उसने बताया, "आज शाम को डी.एस.पी. साहिब (पुलिस उप-अधीक्षक) आरिफवाला जाने वाले थे लेकिन अब वह सुबह जायेंगे। खास बात यह है कि उनका यहाँ तबादला हाल ही में हुआ है। उन्हें इस इलाका की जानकारी नहीं है।" श्री रामदत्त जी को तुंरत कुछ सूझा। गुप्तचर स्वयंसेवक से उन्होंने कहा कि क्या आप हमें डी.एस.पी. साहिब की वर्दी लाकर दे सकेंगे, और उनकी जीप का नम्बर भी ?

'क्यों नहीं!" उसने कहा, "यह तो आसान है, "मेरे क्वार्टर के पीछे ही धोबी है। वह पुलिस के कपड़े धोता है। आपका काम हो जायेगा। यह रहा जीप का नम्बर।" उसने एक कागज पर जीप का नम्बर लिख कर दे दिया। दोनों में और भी कुछ बातचीत हुई और वह शीघ्र ही वहाँ से चला गया, क्योंकि समय हर तरह से कम था।

शाम के लगभग सात बजे रामदत्त वर्दी पहने तैयार खड़े थे। वे पी कैप पहने थे और हाथ में था केन। इस वेश में उन्हें डी.एस.पी. बनकर आरिफवाला जाना था। विट्ठलराव देवघरे साथ हो लिए। वह साधारण पुलिस वेश में थे। दोनों जीप में सवार हुए। रामदत्त जी खुद ड्राइव कर रहे थे। आठ बजे उन्होंने मिंटगुमरी की हद पार की। आरिफवाला मिंटगुमरी से केवल ४० कि.मी. की दूरी है। रास्ते में कई जगह रुक कर परिस्थिति का जायजा लेते हुए रात के दस बजे यह लोग आरिफवाला पहुँचे। चालीस कि.मी. का यह रास्ता यद्यपि केवल १५-२० मिनिट में भी तय किया जा सकता था, किन्तु सावधानी बरतना आवश्यक जान उन्होंने वहाँ रात्रि में पहुँचना ही अधिक सुरक्षित समझा। आरिफवाला के बाहर एक पुराने खण्डहर से मकान की ओट में उन्होंने पुरानी नम्बरप्लेट बदल कर डी.एस.पी. की जीप की नम्बरप्लेट लगा ली।

आरिफवाला से बाहर जो पुलिस चौकी बिठाई गई थी, वहाँ ले जाकर जीप उन्होंने खड़ी कर दी। बेरिकेड (अवरोध) के पास पहुँचते ही विट्ठलराव ने जीव से उतर कर डी.एस.पी. साहिब को सेल्यूट किया। गुप्तचर स्वयंसेवक ने वहाँ की चौकी को टेलीफोन करके उन्हें पहले ही सूचित कर दिया कि शायद डी.एस.पी. साहिब अभी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

आरिफवाला के लिए निकलेंगे। अतः ड्यूटी पर तैनात कांस्टेबल ने बेरिकेड दूर कर दिया। डी.एस.पी. इन्हीं दिनों तबदील होकर आये थे, इसलिए उन्हें पहचानना किसी के लिए सम्भव न था। जीप ने शहर में प्रवेश किया। किसी ने कहीं न रोका। ड्यूटी पर तैनात सिपाहियों ने हर जगह सेल्यूट कर स्वागत किया। पेट्रोलिंग का थोड़ा नाटक कर रामदत्त जी ने जीप मदन लाल के घर की ओर जाने वाली गली की नुक्कड़ पर खड़ी की और घर के दरवाजे पर दस्तक दी।

"कौन है?" अन्दर से आवाज आई।

"पुलिस!" उत्तर दिया गया।

दरवाजा धीरे-धीरे खुला और डी.एस.पी. को देखते ही मदन लाल की माता भी भयभीत हो चक्कर खाकर गिरने को हुईं कि रामदत्त जी ने उनहें सम्भाला और कहा, "माता जी, घबराइये नहीं। मैं पुलिस वाला नहीं हूँ। आपका रामदत्त हूँ, रामदत्त! और यह रहा देवदत्त (परिस्थितियों की विकटता के कारण विट्ठलराव देवघरे का उन दिनों यही नाम निरूपित किया गया था)।" यह सुन माता जी को कुछ धैर्य हुआ। रामदत्त जी उनके बेटे को बचाने आये हैं, मानों भगवान आये हैं, ऐसे ही उन्हें लगा।

"आप गाय वाले कमरे में जाइये और देखिए उनकी क्या हालत है?" ऐसा कहकर वह रोने लगीं।

श्री विट्ठलराव बताते हैं:- हम दोनों वहाँ गये। देखा, विश्वनाथ और मदन लाल दोनों ही वेदनाओं के कारण सिसक रहे हैं। दोनो थे रक्त में भीगे हुए और पूरा शरीर छिदा हुआ। मुझसे यह अवस्था देखी न गई। चक्कर आ गया। गिरने को हुआ। यह देख रामदत्त जी कहने लगे, 'वाह रे मरहट्टा! ऐसे घबराओगे तो काम कैसे चलेगा? हम इन दोनों को यहाँ से ले जाने के लिए आये हैं। क्या मुझे ही तीनों को सम्भावना होगा?

मैंने स्वयं को सम्भाला। मेरा स्वाभिमान जागा। शिवाजी और तानाजी के पराक्रम का स्मरण किया। हिम्मत जुटाई।

अब महत्त्व का प्रश्न था कि दोनों जखिमयों को शहर से बाहर कैसे निकाला जाए? शहर में कर्फ्यू लगा था। शीघ्र ही एक स्वयंसेवक भेज कर दो काले बुरकों का प्रबन्ध करवाया गया। जखिमयों के घाव पोंछ कर प्राथमिक चिकित्सा दी गई। दोनों को बुरके पहना कर कंधों पर उठाया और जीप की ओर ले गये।

रात का समय था। संचारबंदी (कर्फ्यू) के कारण घरों के दरवाजे-खिड़कियाँ बन्द थीं। अतः हमारी गतिविधि किसी के ध्यान में आने की आशंका न थी। रामदत्त जी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के डी.एस.पी. वेश में होने के कारण भी सब काम निःशंक भाव से हो रहा था। विश्वनाथ और मदन लाल को जीप में लिटाया और शहर से बाहर निकल पड़े। रास्ते में एक चौक में पुलिस ने ठहराया। फिर हमारे डी.एस.पी. साहिब को देखकर सेल्यूट किया।

डी.एस.पी. साहिब ने बाहर देख कर पूछा, 'सब ठीक है?'

'हाँ साहिब!' पुलिस कांस्टेबल ने उत्तर दिया।

'गुड!' ऐसा कहकर हमारे डी.एस.पी. ने जीप चलाना शुरू किया। जीप की गति बढ़ा कर हम शहर से बाहर आये और मिंटगुमरी की ओर चल दिये। हमारी योजना सफल हुई थी। किन्तु इस सफलता के आनन्द की अपेक्षा अधिक चिन्ता यह थी कि जख्मियों के लिए उचित चिकित्सा-व्यवस्था कैसे और कहाँ सम्भव होगी।

श्री विट्ठलराव बताते हैं– रात के अंधेरे को चीर कर मार्ग तय करते हुए रात्रि तीन बजे हम मिंटगुमरी के कार्यालय, अरोड़ा हाल पहुँचे। विश्वनाथ और मदन लाल को सिविल हस्पताल ले जाने में खतरा था। इसलिए अगले दिन कुछ स्वयंसेवक डाक्टरों को कार्यालय में बुला कर ही यथासम्भव उपचार किया गया। उस समय अधिक कुछ सम्भव न था। तभी सूचना प्राप्त हुई कि संघ कार्यालय पर छापा पड़ने वाला है। यहाँ मिंटगुमरी में भी सायं साढ़े छः बजे संचारबंदी (कर्फ्यू) शुरू होने वाली थी। अतः शीघ्र ही दोनों जख्मियों को जीप में डालकर सुरक्षित स्थान पर ले जाना परम आवश्यक हो गया।

इधर हमारी जीप ने मिंटगुमरी शहर की सीमा पार की और उधर पुलिस ने कार्यालय पर छापा मारा। किन्तु कार्यालय प्रमुख ने बड़ी सावधानी से सभी दवाईयाँ, खून भरी पट्टियाँ आदि वहाँ से हटा दी थीं। शस्त्रास्त्र तो पहले ही कार्यालय में नहीं रखे जाते थे। अतः पुलिस को तलाशी में आपत्तिजनक अथवा संदेह-योग्य कुछ भी न मिला।

रामदत्त जी जीप को सीधे रास्ते से न ले जाकर खेतों के रास्ते से ओकाड़ा की ओर ले जा रहे थे। ओकाड़ा शहर से दो-तीन किलोमीटर के अंतर पर वहाँ के नगर कार्यवाह श्री केशवानन्द और उनके भाई रामानन्द की फैक्टरी और गोदाम थे। रात के दस बजे हम वहाँ पहुँचे। किन्तु दुर्भाग्यवश रास्ते में ही मदन लाल जी की मृत्यु हो गई। उनके साहस, धैर्य और समर्पण भाव का स्मरण कर हमारा मस्तक उनके चरणों में झुक गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रात को विश्वनाथ जी को एक डाक्टर स्वयंसेवक के हस्पताल में दाखिल किया गया। उन्हें जनरल वार्ड में न रखते हुए डाक्टर के घर में तीसरी मंजिल पर एक कमरे में ही उनकी व्यवस्था की गई, क्योंकि सब दृष्टि से सावधानी परम आवश्यक थी। मदनलाल जी की मृत्यु की सूचना श्री विश्वनाथ जी को नहीं दी गई। उनके बार-बार पूछने पर भी उन्हें यही बताया गया कि मदन जी दूसरे कमरे में हैं। लगता था कि विश्वनाथ जी को अपनी अपेक्षा मदन जी की ही अधिक चिन्ता है। स्वाभाविक ही था, क्योंकि मदन जी उन्हीं के बनाये हुए स्वयंसेवक थे। विश्वनाथ जी को मदन जी की मृत्यु की सूचना बहुत दिनों बाद जब मिली तो वे बहुत दुःखी हुए। मानों उनका सगा भाई ही चल बसा हो।

मदनलाल जी का मृत शरीर कहाँ रखें, अब यह चिंता हुई। अंत में हम श्री वेद प्रकाश भल्ला के घर पहुँचे। प्रातः सात बजे मदन लाल जी के पार्थिव शरीर को ओकाड़ा की श्मशान भूमि में अग्नि संस्कार किया गया। तब हम सभी स्वयंसेवक अपने आँसुओं को रोक न सके। आखिर संयम की भी कुछ मर्यादाएँ होती हैं। मदन लाल का मृत शरीर ज्वालाओं में लिपटा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो वे भगवा ध्वज के साथ एकाकार होकर स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर रहे हों, कंटकाकीर्ण मार्ग पर चिता के अंगारों पर चलते हुए अपने अंतिम गंतव्य की ओर हँसते-हँसते अग्रसर हों वे मानों कह रहे हों, "माँ, तेरी पावन पूजा में मैं इतना केवल कर पाया।" मैं बहुत देर तक विचारमग्न रहा। इतने में रामदत्त जी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। कहने लगे, "देवदत्त जी, जो होना था, हो गया।" मैं धीरे-धीरे उनके साथ चलने लगा। रास्ते में भल्लाजी से लोगों ने पूछा, "कौन थे? कोई रिश्तेदार?"

"जी हाँ" उन्होंने सजल नेत्रों से उत्तर दिया, "रिश्तेदार से भी ज्यादा। अचानक बीमार पड़े, चल दिये।"

अब समस्या थी की मदन लाल के स्वर्गवास होने की सूचना उनके घर के लोगों तक कैसे पहुँचे। पुलिस व सी.आई.डी. (गुप्तचर विभाग) जिला भर में स्वयंसेवकों के पीछे हाथ धोकर पड़ी थी। उसे आरिफवाला के विस्फोट बारे कुछ गंध मिल चुकी थी। प्रत्येक कदम फूँक-फूँक कर रखना जरूरी था। मदन लाल जी का छोटा भाई गोपाल रावलपिंडी जिला में प्रचारक था। रामदत्त जी ने उसे लाहौर आने का संदेश भेजा। वह आया, सोच में था कि क्यों बुलाया होगा।

रामदत्त जी से भेंट होने पर उन्होंने कैसे हुआ, क्या हुआ, सब बताया। गोपाल करुण दृष्टि से हमारी और देखने लगा। उसने मेरे गले लगकर फूट-फूट कर रोना शुरू

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

कर दिया। मैं भी अपने पर काबू न रख सका। हम दोनों की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। रामदत्त जी ने कहा, "हम सभी दुखी हैं। मदन लाल ने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। हमें उन पर गर्व है। किन्तु इस तरह अंत नहीं होना चाहिए था। पर कोई क्या कर सकता है ईश्वरेच्छा के आगे नतमस्तक होने के सिवा?" उनकी भी आँखें तर थीं।

"आप ठीक कहते हैं", श्याम ने आँसू पोछते हुए कहा, "अब मुझे क्या करना चाहिए?"

"तुम आरिफवाला के पते पर तार दो कि मदन लाल मेरे साथ लाहौर में है, और फिर बाद में दूसरी तार की मदन लाल को छुरा घोंपा गया है।" रामदत्त जी ने सुझाव दिया।

"हाँ", श्याम ने सहमति प्रकट की, "यदि छुरा घोंपकर मारा गया है, ऐसी तार भेजी तो माता-पिता सहन नहीं कर पायेंगे। न जाने उनकी क्या हालत बनेगी।"

मैं भावातिरेक के कारण कुछ भी बोल नहीं पा रहा था। श्याम ने वैसा ही किया। माता-पिता दो दिन तक लाहौर आ गये। सच्चाई का पता लगने पर वे अत्यधिक शोकाकुल हुए। फिर मदन लाल के पिता जी ने खुद को सम्भाला। कहने लगे, "मेरा पुत्र देश के लिए, समाज के लिए कार्य करते हुए बलिदान हुआ है, इसका मुझे गर्व है। वह मरा नहीं, अमर हो गया है। श्याम! तू भी धन्य है कि राष्ट्रकार्य में जुटा है। हम वृद्धों का क्या है, हम मो मदन लाल की स्मृतियों के सहारे ही जी लेंगे।" और वे मदन लाल की स्मृतियाँ हृदय में धारण कर तीर्थ यात्रा के लिए चल पड़े।

मदन लाल स्वयं ही तीर्थ बन गया था। सभी स्वयंसेवकों को शक्ति और प्रेरणा देकर वह चला गया। बलिदान की व्याख्या कृतार्थ कर गया।

– मदनलाल विरमानी

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सैनिक वेश में कार्रवाई

नूरशाह, जिला मिंटगुमरी का अच्छा खासा कस्बा है, जिला स्थान से १७-१८ किलोमीटर की दूरी पर। ३ जून, १९४७ को भारत के बटवारे की घोषणा होते ही मुसलमानों के हौसले बढ़ गये। उन्होंने पाकिस्तान का दूसरा नाम 'लूट-मार-स्तान' समझ लिया। दृष्टिकोण ही बदल गया। पुलिस अधिकारी भी क्यों पीछे रहते? उन्होंने अपने हम-मज़हब मुसलमान ज़मींदारों, जिनके पास पर्याप्त जन-शक्ति थी, के साथ मिलकर नूरशाह के धनाढ्य हिन्दुओं को डराना-धमकाना शुरू कर दिया और एक लाख रुपया ऐंठ लिया। मौत सिर पर खड़ी देख, हिन्दुओं ने सोचा कि यदि पैसा देने से ही यह टलती हो तो कोई महंगा सौदा नहीं। किन्तु 'मर्ज बढ़ता गया, ज़ूँ-ज़ूँ दवा की' के सदृश लुटेरों का लोभ बढ़ता ही गया और फिर जुलाई १९४७ में एक दिन इलाके के मुसलमानों ने इकट्ठे होकर नूरशाह पर आक्रमण कर दिया।

कसबे में हिन्दुओं की जनसंख्या ३५ प्रतिशत और मुसलमानों की ६५ प्रतिशत थी। आसपास के गाँवों में तो शत-प्रतिशत मुसलमान ही रहते थे। हालात यद्यपि काफी समय से तनावपूर्ण चल रहे थे, छुरेबाजी की इक्का-दुक्का घटनाएँ हो जाती थीं, किन्तु इस तरह का सामूहिक आक्रमण सर्वथा अप्रत्याशित था। अड़ोस-पड़ोस के सभी गाँवों के मुसलमान इकट्ठे होकर नूरशाह के हिन्दुओं पर टूट पड़े थे। स्थानीय मुसलमान आक्रमणकारियों का मार्गदर्शन कर रहे थे। हिन्दुओं ने ऐसी स्थिति की कल्पना तक न की थी। वे थे बिल्कुल बेखबर और असावधान।

सर्वसाधारण हिन्दू समाज की मानसिक अवस्था लापरवाही की तथा अपनी रक्षा के लिए पुलिस पर निर्भर रहने की ही थी। वह अपने आपको सर्वथा दुर्बल मानता हुआ शासकीय अधिकारियों की कृपा पर ही आधारित था। किन्तु संघ के स्वयंसेवकों की मनःस्थिति भिन्न थी। उनके लिए यह दुर्बलता व हीनता की भावना अपमानजनक थी, हेय थी।

नूरशाह में संघ की अच्छी शाखा थी। उपस्थिति भी अच्छी रहती थी। स्वयंसेवक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

साहसी थे। इन सबको तुरंत इकट्ठा करके शाखा-कार्यवाह ने समयोचित तथा संक्षिप्त भाषण दिया, "प्रिय स्वयंसेवक बंधुओं, आज शत्रु ने अचानक धावा बोला है, हमारे साहस और देशभक्ति को ललकारा है। यही हमारी परीक्षा की घड़ी है। हमें मालूम है कि इस विकट स्थिति में शासन हमारी कोई रक्षा करने वाला नहीं है। उससे कोई अपेक्षा करना व्यर्थ है। हमें यदि हिन्दू के नाते जिन्दा रहना है, तो हमलावरों से जूझना होगा। भेड़-बकरियों की भाँति मरने की बजाये संघर्ष करना होगा। शत्रु से दो-दो हाथ करने होंगे। उसके बल को तोलना होगा, पराजित करना होगा। स्वयंसेवक होने के नाते समाज की रक्षा के लिए आगे आना हमारा परम कर्त्तव्य है। हमने आत्मरक्षार्थ जो थोड़े बहुत शस्त्र इकट्ठे किये हैं, उन्हीं के द्वारा आज हम आक्रमणकारियों को परास्त करेंगे। छत्रपति शिवाजी, राणा सांगा, महाराणा प्रताप व गुरु गोबिन्द सिंह के महान आदर्श हमारे सामने हैं। आओ, कुछ कर दिखाएँ। बस यही अवसर है अपनी वीरता के जौहर दिखाने का।"

शाखा कार्यवाह के इस आह्वान पर सभी स्वयसेवक लड़ने-मरने के लिए तैयार हो गये। उनके इस साहस को देखकर कस्बे के अन्य युवक भी साथ हो लिए। कई गुट बनाये गये, उनके नेता नियुक्त किये गये। इस तरह सारे हिन्दु-मुहल्लों की रक्षार्थ वे चारों ओर फैल गये। आक्रमणकारियों की संख्या बहुत अधिक थी। किन्तु वे बाजारी भीड़ की भाँति थे। स्वयंसेवक जब अपने हाथों में दंड (लाठियाँ) घुमाते हुए आत्म-विश्वासपूर्वक आगे बढ़े और कुछ दस्ती बम फेंके तो आक्रमणकारी सहम गये और लगे पीछे की ओर भागने। किन्तु फिर कुछ देर बाद, जिस तरह नदी में बाढ़ आने पर जल की लहरें बेतहाशा मार करती हैं, उसी तरह पीछे चले आ रहे मुसलमानों के सशस्त्र जत्थों ने भागे आते अपने साथियों को पूरे जोर से पुनः आगे धकेल दिया और वे सब स्वयंसेवकों की रक्षा-पंक्तियों को तोड़कर आगे घुसने लगे। भारी संग्राम हुआ। 'अल्ला-हू-अकबर' और 'हर हर महादेव' के नारों से आकाश गूँज उठा। लाठियों के टकराने की आवाजें, शस्त्रों की खनखनाहट, कर्कश नारों और मारो-काटो, हाय-हाय आदि की चिल्लाहटों से भारी शोर-गुल मच रहा था। इस संघर्ष में हिन्दू धराशायी हो रहे थे और मुसलमान भी।

नूरशाह पर आक्रमण हुआ है, यह समाचार मिंटगुमरी (जिला स्थान) में पहुँचा, तो वहाँ के संघ के अधिकारियों ने अपने स्वयंसेवकों को शीघ्रतापूर्वक वहाँ चलने की सूचना दी। उन दिनों सभी स्थानों पर स्वयंसेवकों के 'आकस्मिक बुलावे' (Emergency Calls) होते रहते थे कि फलां स्थान पर इतने मिनट में पहुँचो। आज्ञा का अक्षरशः पालन होता। इस प्रकार का अभ्यास समय-समय पर चलता रहता था। कई बार रात्रि

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के समय नकली युद्धों का भी आयोजन किया जाता। इससे स्वयंसेवकों की नित्य-सिद्धता तथा नित्य संघर्ष-क्षमता बनी रहती। समाज से भी हर तरह का सहयोग मिलता था। अतः स्वयंसेवकों के एकत्र होने में देर न लगी। आधे घंटे से भी कम समय में स्वयंसेवक मिंटगुमरी से मिलिट्री जीपों (जो ऐसे अवसरों के लिए मिलिट्री के डिस्पोजल के सामान से खरीद कर तथा उनकी मुरम्मत करवा कर तैयार रखी जाती थीं) में मिलिट्री की पोशाकें पहनकर तथा बंदूकों आदि से लैस होकर नूरशाह की ओर चल पड़े। यह लोग सायंकाल लगभग छः बजे नूरशाह पहुँचे। चारों ओर से हवाई फायरिंग करते हुए वे कसबे में घुसे। उन्हें देखकर और सचमुच सेना के ही लोग समझकर दुष्ट आक्रमणकारी भाग खड़े हुए। सैनिक वेशधारी स्वयंसेवकों ने उनका पीछा किया, कईयों को मारा, कइयों को घायल किया।

उन्होंने देखा कि नूरशाह के जो हिन्दू युद्ध में मारे गये थे, उनके घरों में कुहराम मचा था। रोना-धोना इतना ज्यादा था कि असहनीय हो रहा था। स्त्रियों के झुंड आत्महत्या के लिए कुँओं की तरफ लपक रहे थे। अपनी आबरू पर कोई आँच आने से पहले मृत्यु का आलिंगन करना ही श्रेष्ठ है, यही सीखा है हिन्दू नारी ने, अपनी मान-मर्यादा की रक्षा को सर्वश्रेष्ठ धर्म माना है। अतः अपने शील-रक्षण हेतु वे कुओं की तरु चल पड़ी थी और कामांध मुसलमान उनका वस्त्र हरण व अपहरण करने के लिए उनके पीछे भाग रहे थे। स्वयंसेवकों ने ऐसे सभी दुष्टों को मौत के घाट उतारा तथा महिलाओं की रक्षा की।

संकट टल गया था। अनेक बलिदानों के बावजूद सबके मुख पर विजय का संतोष झलक रहा था। किन्तु एक दुःखद घटना घटित हुई। एक स्वयंसेवक की पत्नी ने अपने सम्मान की रक्षार्थ कुएँ में छलाँग लगा दी थी। उसे बचाना सम्भव न हो सका। भावना के आवेश में और अपनी इज्जत लुटने के भय से उसने मृत्यु का आलिंगन कर लिया था। इसका उसके पति के मन-मस्तिष्क पर कुप्रभाव हुआ। वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा, पागल हो गया। बहुत समझाने पर भी वह यही कहता कि वह कुएँ से बाहर आयेगी, अवश्य आयेगी, मुझसे अवश्य मिलेगी। बस इसी आशा में वह कुएँ के किनारे बैठा रहता। कई बार कुएँ के अन्दर झाँक कर आवाज देता। उसकी यह दयनीय अवस्था देखकर सभी दुःखी थे। उसने तब तक वहाँ से हिलने का नाम न लिया, जब तक उसके रिश्तेदार अन्ततोगत्वा उसे ज़बरदस्ती वहाँ से उठाकर न ले गये।

(सूत्रः विट्ठल राव देवधरे, तत्कालीन मिंटगुमरी तहसील प्रचारक)

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हमीद खान लाये रिवाल्वरों भरी बोरी और स्वयंसेवकों में बाँट दी

श्री दीनानाथ बत्रा, मंत्री, विद्या भारती (अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान) उन साहसी महानुभावों में से हैं, जिन्होंने देश-विभाजन के समय के न केवल संकट ही झेले, बल्कि उन दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में हिन्दू समाज के संरक्षण हेतु अग्रणी भूमिका भी निभाई। वे बताते हैं:-

"देश के विभाजन के परिणामस्वरूप पंजाब में स्थान-स्थान पर दंगे भड़क उठे थे। नेताओं की बेवफाई, मुस्लिम लीग की पाशविकता के ताण्डव नृत्य तथा काल की करालता ने पंजाब को दो खण्डों में विभाजित कर इसके नाम की निरर्थकता सिद्ध कर दी थी।

"फगवाड़ा संघ शिक्षा वर्ग में मैं द्वितीय वर्ष का शिक्षार्थी था। परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुए संघ अधिकारियों ने यह वर्ग १२ अगस्त की बजाए कुछ दिन पूर्व ६ अगस्त को ही समाप्त कर दिया। हम सबको आदेश हुआ कि अपने-अपने स्थान पर जाकर हिन्दू बान्धवों को आत्मरक्षण के लिए भलीभाँति तैयार करें। हम चार स्वयंसेवक लाहौर होते हुए मुलतान और डेरा गाज़ीखान जाने वाले थे। गाड़ी पर सवार हुए। एक छोटा सा दण्ड था हमारे पास। इसी से हमें आत्मरक्षण करना था और आवश्यकता अनुसार अवरोध भी। गाड़ी जब लाहौर स्टेशन पर पहुँची तो मरघट सा सन्नाटा था। चहुँ ओर व्याप्त भय के उस वातावरण में सब कुछ ईश्वर के चरणों में छोड़ने के सिवा हमारे लिए कोई अन्य मार्ग नहीं था।

"लाहौर से अगले स्टेशन पर हमारी गाड़ी रोक दी गई। 'अल्ला-हू-अकबर' के गगनभेदी नारे थे। डब्बों पर आक्रमण और उनकी तोड़-फोड़ जारी हो गई। युवक, वृद्ध तथा बाल, सबकी चीत्कारों ने मिलकर हृदयों में एक अजीब सी सनसनी पैदा कर दी थी। मैंने साथी स्वयंसेवक बन्धुओं से कहा कि गायत्री मंत्र का जाप करें, यही एकमात्र

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सहारा है।

"हमारे कम्पार्टमेन्ट में जो मुसलमान थे, वह डब्बों से नीचे उतर गये, शायद इस भय से कि कहीं हम ही पहले उन पर प्रहार न करने लग जाएँ। उनके मन का चोर! हमने दरवाजे तथा तथा खिड़कियाँ बन्द कर दीं। पीछे के डब्बों में असहाय हिन्दुओं को गाजर-मूली के समान आतताइयों ने काटना आरम्भ किया हुआ था। अब वह यमदूत हमारे डब्बे के सामने थे। दरवाजा खोलने का प्रयास निष्फल होता देख उसे वह आग लगाने पर उतारू थे। पर 'जाको राखे साईयां मार सके न कोय' के सदृश प्रभु की करनी ऐसी हुई कि मराठा सैनिक पहुँच गये और हमारे डब्बे में सवार सभी लोग बच गये। उन्हीं सैनिकों के संरक्षण में हम मुलतान पहुँचे। वहाँ चहुँ ओर आग ही आग थी।

"जैसे-कैसे डेरा गाजी खान पहुँच पाये। वहाँ अभी दंगे नहीं भड़के थे। ग्रामीणांचल में छुट-पुट घटनाएँ घटित हुई थीं। पर शेष पंजाब सा भयानक दृश्य यहाँ भी उपस्थित होते ज्यादा देर न लगी। अतः हमारे डेरा गाजीखान पहुँचते ही सुरक्षा कार्यों की दृष्टि से स्वयंसेवकों की आवश्यक बैठकें शुरू हो गईं।"

इस जिले में हिन्दुओं और सिखों की आबादी ७० हजार से भी कम थी, जो कि जिला की जनसंख्या का मात्र २३ प्रतिशत ही था। हिन्दू-सिखों की अधिकांश आबादी डेरा गाजीखान, जामपुर, राजन पुर और तौंसा में ही थी। गाँवों में उनके बहुत कम परिवार थे। जब सिंधु नदी के पार हो रही गड़बड़ की सूचना डेरा गाजी खान पहुँची तो इस जिला के गाँवों से हिन्दुओं का निष्क्रमण शुरू हो गया। उनके गाँवों से निकलते ही मुसलमानों ने उनकी पीछे छोड़ी सारी जायदादें लूट लीं। दूर के कुछ गाँवों में हिन्दुओं पर आक्रमण किये गये और उन्हें मुसलमान बनने के लिए विवश किया गया। जिस किसी ने प्रतिरोध किया, उसे मौत के घाट उतार दिया गया। कुछ जगहों पर डेरा गाजी खान या राजनपुर जा रहे ग्रामीण शरणार्थियों पर रास्ते में आक्रमण किये गये और उन्हें लूटा गया। गाँवों में कुछ वारदात आग लगाने की भी हुईं किन्तु बाद में इस सरकारी घोषणा होने के बाद कि गैर मुस्लिमों की सारी जायदाद अब पाकिस्तान की ही है और इसे नष्ट नहीं किया जाना चाहिए, यह सिलसिला बन्द कर दिया गया।

जिला में स्वेच्छाचार की सबसे पहली घटना लेघारी जाति के नेता के मुख्य स्थान 'चोटी' में हुई, जो कि यूनियनिस्ट पार्टी का सदस्य और कुछ समय मंत्री भी रहा था। उसका बेअरा मोहम्मद खान इस गड़बड़ के लिए उत्तरदायी था। १५ अगस्त, १९४७ को वहाँ १५ व्यक्ति कत्ल कर दिये गये, ९८५ को मुसलमान बनने के लिए विवश कर दिया गया तथा भारी पैमाने पर लूटपाट की गई।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

श्री बत्रा बताते हैं, "संघ के अधिकारियों की योजनानुसार मैं मुसलमान बना। नाम रखा हमीद खान। हाथ पर भी यह नाम गुदवा लिया। संरक्षण के लिए कुछ आग्नेय अस्त्र इकट्ठे करने आवश्यक थे। अतः इसी हमीद खान को डेरा इस्माईल खान से रिवाल्वरों की बोरी लाने का साहसिक कार्य सौंपा गया। उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत का यह जिला अप्रैल, १९४७ में ही मुस्लिम लीगियों के जनून का शिकार हुआ था। इस क्षेत्र से काफी संख्या में शस्त्रास्त्र सस्ते दामों पर उपलब्ध थे और यह हमारे जिला डेरा गाजी खान के निकट भी था। वहाँ से रिवाल्वर आदि लाकर स्वयंसेवकों में बाँटे। तत्पश्चात इस दृष्टि से उनका प्रशिक्षण हुआ। मस्जिद में जाना, नमाज पढ़ना और मुस्लिम नेताओं से सम्पर्क स्थापित कर उनके रहस्यों एवं योजनाओं का पता लगाना भी मेरे जिम्मे किये गये कार्यों में शामिल था।

"परिस्थिति दिन-ब-दिन गम्भीर होती जा रही थी। अतः डेरा गाजी खान नगर में सुरक्षा की दृष्टि से सभी हिन्दुओं ने घरों से निकल कर सुरक्षित स्थानों पर एकत्रित होने का निर्णय किया। हमारे क्षेत्र के लोग स्थानीय श्री जगन्नाथ मन्दिर में इकट्ठे हो गये थे। यह मन्दिर किले की ही भाँति था। आखिर ३० अगस्त की वह काली रात आ गई, जब मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इस मंदिर को घेर लिया। हम भी मुकाबले के लिए तैयार थे। पूर्व जानकारी मिल ही चुकी थी। अन्दर तथा बाहर से गोलियाँ चलने लगीं। तभी अचानक पड़ोसी मुसलमान के घर की ओर से बम विस्फोट होने लगे। स्वयंसेवकों तथा अन्य हिन्दू युवकों ने भरपूर साहस का परिचय दिया। बहू-बेटियों के मान-सम्मान की रक्षा करते हुए एक-एक कर कितने ही शहीद हो गये। इस मुठभेड़ में लगभग ४० हिन्दू अपने बलिदान की गाथा अमर कर गये। मुसलमान आक्रमणकारियों की हानि इससे कहीं अधिक थी। अंततोगत्वा वे घबरा कर पीछे हट गये।"

इस दौरान जिला के अनेक गाँवों से भी निष्कासित हिन्दू डेरा गाजीखान में एकत्र होने शुरू हो गये। वहोवा के आसपास के गाँवों के निवासी अपने घर-बार छोड़कर वहोवा में इकट्ठे हो गये थे। वहाँ कुछ समय रहने के बाद वे डेरा गाजी खान आ गये। सुलेमान, काशा धिंगाना, गदाई, पारो तथा हरनन्द के गाँवों में भी लूटमार हुई। मंगरोठा शरकी में हिन्दू व्यापारियों के १०० घर और दर्जन भर दुकाने थीं। अगस्त अंत में सोकर तथा बुगलानी के निकटवर्ती गाँवों पर मुसलमानों ने हमला किया। मंगरोठा शरकी के सभी निवासी भयभीत हो गये और अपनी दुकानों व घरों को ताले लगाकर ३ सितम्बर को वहाँ से चले गये। उन्होंने तौंसा थाने में शरण ली। ज्यों ही वे घरों से निकले, उनके घरों के ताले तोड़ दिये गये और लूटपाट की गई। एक

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सुनार, जो कि पीछे रह गया था, उसे कत्ल कर दिया गया। बाद में मंगरोठा शरकी के सभी निवासी पुलिस अधीक्षक द्वारा डेरा गाजी खान पहुँचाये गये। गजानियाँ पर ३ सितम्बर को मुस्लिम हजूम ने आक्रमण किया। २३ व्यक्ति मारे गये और ७ घायल हुए। डोगरा सैनिकों के आ जाने से और अधिक लोग मारे जाने से बच गये। बचे हुए व्यक्तियों को डेरा गाजी खान ले जाया गया। ममोरी पर मुस्लिम भीड़ ने ३० अगस्त को आक्रमण कर दिया था। कई हिन्दू मारे गये थे। चार कन्याओं का अपहरण हुआ। शेष हिन्दुओं को जबरदस्ती इस्लाम में धर्म परिवर्तन किया गया। कुछ दिनों के बाद उन्हें सेना ने आकर बचाया और डेरा गाज़ी खान पहुँचाया।

३१ अगस्त को चाह पटोली वाला के हिन्दुओं ने मुस्लिम हजूम को गाँव की ओर आते देखा तो खेतों की ओर भाग गये। हिन्दुओं के घर और दुकानों को जी भरकर लूटा गया, जबकि इनके मालिकों ने खेतों में छुपकर रात गुजारी। अगली सुबह वे समीना गये, जहाँ से पुलिस ने उन्हें डेरा गाजी खान पहुँचाया।

इस प्रकार जिला के अनेक गाँवों से आने वाले हिन्दू व सिखों को डेरा गाजी खान के शरणार्थी शिविर में ठहराया गया, जो धीरे-धीरे २४-११-१९४७ तक भारत पहुँचाये जाते रहे। श्री बत्रा कहते हैं, "इस बीच हम लोग, जो डेरा गाजी खान शहर में टिके हुए थे ५ सितम्बर को भारत के लिए निकल पड़े। १० सितम्बर को हम जालंधर पहुँच सके। आज भी यादें ताजी हैं। सभी जख्म हरे हैं, मृत्यु पर्यन्त हरे ही रहेंगे। भुलाये कुछ भी तो नहीं भूलता।"

प्रस्तुति- मदन लाल विरमानी

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

छोटे गाँव की महान गाथा

सन् १९४६-४७ के दिनों में मुस्लिम लीगियों के उत्पात के जो समाचार स्थान-स्थान से प्राप्त होते रहते थे, उनके दृष्टिगत हिन्दू समाज में सर्वत्र असुरक्षा का भाव व्याप्त हो रहा था। भविष्य के प्रति चिंता भी स्वाभाविक थी। आत्मरक्षा के लिए जहाँ जो भी उपाय सूझते, उनका सहारा लेने के लिए हिन्दू सक्रिय हो उठते। यही कारण था कि पंजाब में गाँव-गाँव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखायें तो पहले खुल जातीं और इनकी सूचना संघ के अधिकारियों को बाद में मिलती। गाँव के युवक किसी भी खुली जगह पर प्रातःकाल नित्यप्रति इकट्ठे होकर कबड्डी खेलना शुरू कर देते। कुछ दिनों के बाद जिला या तहसील स्थान अथवा निकटवर्ती किसी बड़े कस्बे में जाकर संघ के अधिकारियों को खोज निकालते। उन्हें कहते कि "हमने अपने गाँव में संघ की शाखा खोल दी है, आप किसी को हमारे मार्गदर्शन के लिए हर रोज भेजने की व्यवस्था करें।"

इस पर मुख्य स्थान से जिम्मेदार स्वयंसेवक प्रतिदिन कई-कई मील साइकिल पर जाकर गाँवों की शाखाओं की देखरेख शुरू कर देते। युवकों को निक्करें सिलवाने के लिए कहा जाता। सामान्य शारीरिक व्यायाम हेतु संघ शाखा में दी जाने वाली आज्ञाओं का ज्ञान कराया जाता। 'दक्ष' की आज्ञा होने पर अंग-प्रत्यंग की स्थिति क्या होनी चाहिए, 'आरम' की आज्ञा पर क्या करना है, आदि-आदि सामान्य आचार-पद्धति का ज्ञान कराया जाता। फिर लाठी चलाना सिखलाना शुरू हो जाता। देशभक्ति के गीत और उनके स्वर आदि का अभ्यास चलता। संघ की प्रार्थना संस्कृत में है। उसका अभ्यास शुरू हो जाता। फिर उसके अर्थों का बोध कराया जाता। एकत्रीकरण के स्थायी रूप लेने के बाद उसे विधिवत् शाखा घोषित किया जाता। फिर शाखा के एक घंटा के समय नित्य भगवा ध्वज लहराने की अनुमति दे दी जाती।

इस प्रकार गाँव-गाँव में संघ शाखाओं का जाल फैलता चला जा रहा था। समाज में 'हिन्दुत्व' का भाव तो पहले से ही विद्यमान था केवल उसे दृढ़ करने की आवश्यकता थी। शाखा के नित्य के संस्कारों के द्वारा व्यक्तिवाद को समष्टि भाव का

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रूप देना होता था, जैसे बिखरे मोतियों को कोई कुशल कलाकार सुंदर माला के रूप में पिरोता है। स्वार्थ केन्द्रित व्यक्तिपरक जीवन को सामूहिक जीवन में परिवर्तित करने हेतु अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता। सहभोज, जो उन दिनों 'चन्दन' के नाम से विख्यात था तथा अंत्याक्षरी के कार्यक्रम सर्वप्रिय थे। बलिदानी तथा त्यागी महापुरुषों की कहानियाँ सुनाकर वीरवृत्ति का संचार किया जाता। इस प्रकार बिखरे समाज को अनुशासित तथा संगठित स्वरूप प्रदान कर सामूहिक जीवन का एहसास कराया जाता तथा "कंकर-पत्थर बन-बन हम को राष्ट्र नींव को भरना है। ब्रह्म तेज के क्षात्र तेज के अमर पुजारी बनना है" का पवित्र भाव जगाकर प्रत्येक स्वयंसेवक को कर्त्तव्यशील बनाते हुए प्रत्येक शाखा को एक सुदृढ़ शक्ति केन्द्र का स्वरूप प्रदान करने का यत्न होता।

अन्य अनेक गाँवों की ही तरह मुलतान जिला की शुजाबाद तहसील के एक छोटे से गाँव जलालपुर पीरवाला में भी संघ कार्य के फैलाव के लिए संघ के विभाग प्रचारक श्री लेखराज शर्मा ने जिस युवक की 'विस्तारक' के रूप में नियुक्ति की थी, उसका शुभ नाम था कृष्ण कुमार। उभरती जवानी तथा बलिष्ठ शरीर का यह युवक कबड्डी का अच्छा खिलाड़ी तथा मधुर स्वभाव का था। उसके परिश्रम से इस क्षेत्र में गाँव-गाँव में संघ कार्य की वृद्धि व विस्तार हो रहा था, हिन्दू समाज में आत्म विश्वास जागृत हो रहा था एवं किसी भी सम्भावित संकट से जूझने की उसकी तैयारी भी।

उन्हीं श्री कृष्ण कुमार के शबदों में:-

जलालपुर पीरवाला के छोटे से गाँव में लगभग १२०० हिन्दू रहते थे। संघ ६ाखा काफी अच्छी थी। भारत विभाजन की चर्चा शुरू होते ही ज्यों ही इधर-उधर मारकाट शुरू हुई, इस क्षेत्र के मुसलमान जमींदार तथा थानेदार ने हिन्दुओं को आश्वासन दिया कि आप लोग किसी तरह की चिंता न करें, हम हर तरह से आपके साथ हैं। सभी कुछ आश्वस्त हुए।

अगस्त, १९४७ के अंतिम सप्ताह के एक दिन गाँव के प्रसिद्ध विद्वान तथा शिक्षा-सेवी एवं ऋषिकुल के संस्थापक पंडित बद्रीनाथ जी, जो संघ के स्थानीय प्रमुख भी थे, तथा बहादुरपुर के महता साहिब किसी कार्यवश एक बस द्वारा तहसील स्थान सुजाबाद के लिए रवाना हुए थे कि गाँव से निकलते ही मुस्लिम गुंडों की भीड़ ने बस पर हमला कर दिया। उसमें सवार अनेक हिन्दुओं की हत्या कर दी गई। पंडित बद्रीनाथ जी ने उस समय बस से निकलकर भागनेवाले एक हिन्दू से चिल्लाकर कहा कि "गाँव जाकर सभी हिन्दुओं को मेरा अंतिम संदेश दे देना कि इन मुसलमानों पर कदापि विश्वास न करें। या तो सुरक्षित निकल जायें या गाँव में ही जौहर करके बलिदान हो जायें।"

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पं. बद्रीनाथ जी पर जैसे ही एक आतताई ने छुरे से वार किया, वे 'हर-हर महादेव' के जयकारे के साथ अपनी पिस्तौल से आक्रमणकारियों पर झपट पड़े और सात व्यक्तियों को जहन्नुम रसीद किया। फिर चारों तरफ से घिर जाने पर वे अपनी ही गोली से शहीद हो गये।

जलालपुर पीरवाला के हिन्दुओं ने मंदिर में इकट्ठे होकर परस्पर विचार-विमर्श किया कि जब मुस्लिम गुंड़ों ने पंडित बद्रीनाथ जी जैसे नेक आदमी तथा निर्दोष बस यात्रियों को ही नहीं छोड़ा, तो वह भला हम पर भी हमला करने से कब चूकेंगे। अतः हमारे लिए उनसे संघर्ष करते हुए अपने धर्म की रक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग करना ही उचित हैं

इस बीच चारों ओर के गाँवों के आततताइयों ने जलालपुर पीरवाला को आ घेरा। चारों तरफ से "अल्ला-हू-अकबर" के नारे सुनाई देने लगे। हिन्दुओं के घरों पर हमले शुरू हो गये।

गाँव के १२०० के लगभग सभी हिन्दू पुरुष, महिलाएँ व बच्चे एक मैदान में इकट्ठे हो गये। इनमें २०० के करीब महिलाएँ थीं। उन्होंने अपने ही हाथों से लकड़ियाँ इकट्ठी करके पाँच चिताएँ बनाईं। स्नान कर, भगवान की पूजा के बाद वे मैदान में इकट्ठी हो गईं और देखते ही देखते प्रज्ज्वलित चिताओं में कूद-कूद कर स्वाहा होने लगीं। अपार उत्साह था उनमें स्वधर्म रक्षार्थ इस बलिदान यज्ञ में अपनी आहुति देने का।

मुसलमानों को खबर मिली तो उन्होंने आकर उस मैदान को घेर लिया। हिन्दू हाथों में भाले व बरछे लिए हुए 'जयकारा-ए-बीर बजरंगी, हर-हर महादेव' के उद्घोषों के साथ यवनों पर टूट पड़े। सिर-धड़ की बाजी लगा दी थी उन्होंने। प्रत्येक ने कई-कई आततताई यमधाम पहुँचाये और इस तरह लड़ते-लड़ते स्वयं वीरगति को प्राप्त हो गये। पूरा मैदान हिन्दू और मुस्लिम दोनों के रक्त से सिंचित था। दोनों ही वर्गों की तड़पती लाशों के ढेर लग गये। इनमें मुस्लिम आक्रमणकारियों की ही लाशें अपेक्षाकृत कई गुना अधिक थीं। दोनों वर्गों की लाशों के चेहरे अलग-अलग भावों को प्रतिबिम्बित कर रहे थे। मुस्लिम लाशों के चेहरों पर छायी थी मुर्दनी, मानों अपने गुनाहों पर आत्मग्लानि से पछता रहे हों। इसके विपरीत हिन्दू शवों के चेहरों पर बिखरा था तेज और शौर्यसूचक सुशांत भव, जो उनकी कर्त्तव्यपूर्ति के संतोष और समाधान को परिलक्षित कर रहा था। वे स्वधर्म रक्षा हेतु बलिदान हो गये थे और पीछे छोड़ गये थे आत्मोत्सर्ग का एक अनुसरणीय इतिहास, जो युग-युगों तक भावी पीढियों को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसी शौर्यपूर्ण थी उस छोटे से गाँव की महान गाथा।

– मदन लाल विरमानी

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जड़ांवाला का पैशाचिक नरमेध

जड़ांवाला (जिला लायलपुर) के मूल निवासी श्री हीरानन्द शर्मा (वर्तमान पत्रकार, अम्बाला शहर) बताते हैं कि जड़ांवाला में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य अति प्रभावी एवं व्यापक था। पाकिस्तान के अस्तित्व में आने से पहले मुस्लिम लीगियों द्वारा कई बार जड़ांवाला पर हमले की योजना बनाई गई थी किन्तु संघ के सुदृढ़ तथा सजग संगठन के कारण उन्हें कोई दुस्साहस करने की हिम्मत न हुई। स्थानीय आर्य समाज मंदिर में संघ की शाखा लगती थी, जिसमें कस्बे के स्वयंसेवक नित्यप्रति व्यायाम करते तथा उभर रही परिस्थितियों के विषय में परस्पर चर्चा करते, आवश्यक योजना बनाते। मुस्लिम लीगी वर्कर इस शक्ति से अनभिज्ञ न थे। अतः कई बार चाह कर भी वे जड़ांवाला में कोई गड़बड़ करने का साहस न जुटा पाए और कस्बा सुरक्षित रहा।

पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री (जिन का पद तब 'प्राइम मिनिस्टर', अर्थात् प्रधानमंत्री कहलाता था) मलिक खिजर हयात खां टिवाणा के विरुद्ध मुस्लिम लीग का आंदोलन चल रहा था। पंजाब में सन् १९४६ में विधान सभा की कुल १७१ सीटों में से मुस्लिम लीग को ७५, कांग्रेस को ५१, अकाली दल को २२ व यूनियनिस्ट पार्टी (ज़मींदारा पार्टी) को २३ सीटें मिलीं थीं।

इन चुनावों में यद्यपि मुस्लिम लीग सबसे बड़ी अकेली पार्टी के रूप में उभरी थी, तथापि कांग्रेस, अकाली दल तथा यूनियनिस्ट पार्टी आपस में मिल गये और उनकी कोलीशन (मिली-जुली) सरकार बनी। तब मलिक खिज़र हयात खाँ टिवाणा मुख्यमंत्री बने थे। मुस्लिम लीग ने उनके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया था। स्थान-स्थान पर लीगियों ने दंगे-फसाद शुरू कर दिये। खिज़र हयात के विरुद्ध यह नारा बड़े जोरों से लगाया जाता, "सज्जा पैर जुत्ती दा, ख़िज़र पुत्तर कुत्ती दा।" लगभग एक वर्ष तक खिज़र हयात की सरकार चली। फिर आन्दोलन में तेजी आने पर न तो उन्हें पुलिस की ओर से पूर्ण सहायता मिली, क्योंकि पुलिस की अंदरूनी सहानुभूति मुस्लिम लीग

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

के साथ थी, और न ही गवर्नर की ओर से पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अतः खिज़र हयात ने कहा, "मुस्लिम लीग को अन्य पार्टियों के साथ समझौता करने के लिए खुला मार्ग छोड़ने की भावना से मैं यह त्यागपत्र दे रहा हूँ।" इस पर मुस्लिम लीग ने अब नया नारा बुलन्द किया, "ताजा खबर आई है, खिज़र हमारा भाई है।"

खिज़र हयात के त्यागपत्र के बाद पंजाब में गवर्नरी राज लागू हो गया, जो कि १४ अगस्त, १९४७ तक जारी रहा। किन्तु इस बीच पंजाब में जगह-जगह दंगे-फसाद जारी रहे।

अन्य स्थानों की तरह जड़ांवाला में भी संघ के स्वयंसेवक काफी जागरूक थे। शेष हिन्दू समाज को साथ लेकर उन्होंने सुरक्षा संबंधी तैयारियाँ कीं और उन्हें अधिकाधिक सुदृढ़ करने के लिए यत्नशील रहे। फलस्वरूप लीगी गुंडे जड़ांवाला शहर में न घुस सके। किन्तु पाकिस्तान बन जाने के बाद उनमें नई जान आ गई। पाकिस्तानी सशस्त्र पुलिस तथा बलोच फौज उनके साथ मिलकर, बल्कि उनसे भी अधिक आक्रामक होकर स्थान-स्थान पर धावा बोलने लगीं। गाँव-गाँव में हिन्दुओं पर हमले शुरू हो गये। लक्ष्य था हिन्दुओं (सिखों सहित) को पाकिस्तान से निर्मूल करना।

परिणामतः जड़ांवाला के आसपास के गाँवों के केशधारी तथा सहजधारी, सभी हिन्दू वहाँ से पलायन कर अपना-अपना सामान गड्डों आदि पर लाद कर जड़ांवाला मंडी में आ गये। हजारों लोगों ने अनाज मंडी, मंदिरों तथा गुरुद्वारों में पहुँच कर पनाह ली। १४ अगस्त को पाकिस्तान बन जाने के बाद भी मुस्लिम लीगी गुंडों को संघ के स्वयंसेवकों ने शहर में न घुसने दिया।। ३१ अगस्त, १९४७ को पुलिस व फौज के हिन्दू सिपाही व अधिकारी सरकारी आदेशानुसार हिन्दुस्थान चले गये।

पाकिस्तान के जन्मदाता मोहम्मद अली जिन्ना, जो इसके प्रथम गवर्नर जनरल बने, ने अपने भाषण में कहा था कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यक सुरक्षित जीवन व्यतीत कर सकेंगे। किन्तु उन का यह आश्वासन सर्वथा खोखला साबित हुआ। सारे पश्चिमी पंजाब में मुस्लिम लीगियों ने पाकिस्तानी पुलिस तथा सेना की सहायता लेकर हिन्दुओं का कत्लेआम शुरू कर दिया और लाखों लोगों को अपना घर-बार छोड़कर शरणार्थी शिविरों में पनाह लेने के लिए विवश किया।

सितम्बर, १९४७ के प्रारम्भ में अमृतसर से मुस्लिम जड़ांवाला आकर बसे। उन्होंने आसपास के गाँवों में जाकर मुसलमानों को उकसाया कि "यहाँ से हिन्दुओं को निकालो या फिर हाथों में चूड़ियाँ पहन कर बैठ जाओ।" इस ताने ने जलती पर तेल का काम किया। बलोच फौज का सहारा लेकर हजारों लीगी गुंडे ८ सितम्बर, १९४७

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

को जड़ांवाला पर पिल पड़े। संघ के स्वयंसेवकों ने नवाँ बाजार, मंदिर वाली गली व अन्य कई मुहल्लों में मोर्चे बना कर सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक पग उठाये। अच्छा मुकाबला किया। मकानों की छतों से देसी बमों, दोनाली बन्दूकों का प्रयोग करते हुए गुंडों को दूर रखा। किंन्तु फौज के आ जाने पर वे बेबस थे। गुंडों ने बलोच फौजियों की सहायता से अनाज मंडी व अन्य सभी स्थानों पर जहाँ-जहाँ गाँवों से आकर हिन्दू-सिख ठहरे थे, कत्ले-आम शुरू कर दिया। नृशंसों ने जी भरकर खून की होली खेली।

श्री हीरानंद शर्मा अपनी आप-बीती सुनाते हुए बताते हैं कि जब गोलियाँ चल रही थीं और हमारे मकान के दरवाजे को तोड़ा जा रहा था तो मैं छत पर चढ़ गया। सामने ही श्री सनातन धर्म मन्दिर था, जहाँ मैं प्रतिदिन माथा टेकने जाता था। मैंने मंदिर की तरफ मुँह करके हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "हे हनुमान जी, मेरी रक्षा करो।" मैंने यह कहा ही था कि एक गोली सनसनाती हुई आई, किन्तु पास से गुजर गई। मुझे लगा कि हनुमान जी ने ही मेरी रक्षा की है। मैं अपने मकान के साथ लगते दूसरे मकान से होकर पास के पंजाब एंड सिंध बैंक की छत पर गया। बैंक में उस समय किसी के होने का सवाल ही पैदा न होता था। मैंने छत से देखा की लीगी गुंडे अनेक हिन्दू सिख युवतियों को कई टोलियों में बाँट कर भगाकर ले जा रहे हैं और मासूम शिशुओं को ऊपर हवा में उछाल कर नेजों से निशाना बना रहे हैं। मैं खून के घूँट पीकर रह गया। अनाज मंडी में सभी हिन्दू-सिखों को खत्म करके गुंडों ने उनका सारा सामान लूट लिया। हजारों कत्ल कर दिये गये। बलोच फौज स्वयं इस लूटपाट में शामिल थी। मै। सारी रात भयभीत होकर छत पर अकेला ही छिपा रहा। प्रातः मुँह-अंधेरे वहाँ से नीचे उतर कर लायलपुर से लाहौर जाने वाली सड़क पर आ गया। वहाँ से एक काफिला गड्डों में सेना के संरक्षण में लाहौर जा रहा था। मैं भी उसमें शामिल हो गया। जैसे-तैसे कुछ दिन बाद लाहौर में डी.ए.वी. कालेज में हिन्दू शरणार्थियों के शिविर में पहुँच गया।

वहाँ की व्यवस्था भी संघ के ही स्वयंसेवकों ने सम्भाल रखी थी। मैं कुछ दिन वहाँ रहा। फिर वहाँ से शरणार्थियों को अमृतसर ले जा रही बसों में से एक में बैठकर अमृतसर पहुँच गया, जहाँ प्रभु की अपार कृपा से अपने परिवार के बाकी लोगों से मिला, जो किसी तरह जड़ांवाला से तीन-तीन कपड़ों में ही बड़ी मुश्किल से बचकर आ सके थे।

श्री हीरानंद शर्मा की ही तरह जड़ांवाला की एक दुखियारी श्रीमती अमरकौर अपनी संताप-गाथा निम्नानुसार बयान करती हैं। लिखने की आवश्यकता नहीं कि यह

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

करुणाजनक गाथा केवल जड़ांवाला की एक अबला की ही नहीं है, विभाजित भारत की हजारों पीड़ित-प्रताड़ित माँ-बहनों की ही आप बीती है, जो उस समय की मुस्लिम दुष्प्रवृत्ति की शिकार हुईं।

श्रीमती कौर के अपने शब्दों में:- अगर यह कभी मालूम हो जाता कि पंजाब में प्रलय आने वाली है तो हम औरतें अपने पतियों से पहले ही जहर खाकर परलोक सिधार जाती। मगर हमारे दिल में कभी यह विचार पैदा ही न हुआ था कि हमारे आदमी यूँ गाजर-मूली की तरह काट दिये जायेंगे और बेबस औरतें दुष्ट मुसलमानों के कब्जे में आ जायेंगी।

जड़ांवाला में ८ सितम्बर के मनहूस दिन शहर के लोग दानों की तरह भुने जा रहे थे। जो बाहर निकलता, उसे मिलिट्री की गोलियाँ निगल जातीं।

मेरे पति सरदार करतार सिंह जी बाहर थे। मैं व्याकुल हो रही थी। इतने में खबर आई कि वे तो शहीद हो गये हैं। मेरी चीख निकल गई। देवर कृपाल सिंह अपने भाई की लाश उठाने के लिए बाहर निकला तो मिलिट्री की गोली उसके सीने को छलनी करती हुई पार निकल गई। मैं बेहोश हो गई। आधे घंटे बाद होश आया, तो देखा कि मुसलमानों का एक सशस्त्र गिरोह हमारी गली में आ गया है। हमारा मकान बहुमूल्य सामान से भरा पड़ा था। रेडियो, पंखे, साड़ियाँ व बढ़िया फर्नीचर, क्या कुछ नहीं था, किसी चीज की कमी न थी किन्तु मेरे लिए किसी वस्तु के लिए आकर्षण न रह गया था। सुहाग लुट गया। देवर भुन गया। सोचा मर जाऊँ, ऐसी जिन्दगी का क्या फायदा? सारी उमर रो-रोकर दुःखी होती रहूँगी, क्यों न जहर खा लूँ? ख्याल किया, अभी ही अपनी जीवन-लीला समाप्त कर लूँ। लेकिन दो बच्चों के विचार ने ऐसा करने से मना किया। मगर फिर दिल ने फैसला मौत के हक में ही दिया। सोचने लगी, घर में कोई जहरीली चीज है? अफीम पड़ी थी। सुन रखा था, ज्यादा खा लेने से मृत्यु हो जाती है। दौड़ी-दौड़ी अंदर गई। अफीम की पुड़िया उठा ली। किन्तु वह अपर्याप्त सिद्ध हुई। अभी मैंने मुँह में डाली ही थी कि पाकिस्तानी गुंडों की भीड़ हमारे दरवाजों को तोड़कर अंदर घुस आई। घर में कुहराम मच गया। एक-एक को दस-दस सशस्त्र गुंडों ने पकड़ लिया। मेर सामने ही मेरे ससुर से जेवरात व नकदी की चाबियाँ ले ली गईं। सारा सामान लूट लिया गया। बाद में उन्हें वहीं पर छुरों से क्रूरतापूर्वक शहीद कर दिया गया।

मुझसे यह दर्दनाक दृश्य न देखा गया। आँखें बंद कर लीं। सोचा कि खाया हुआ जहर मेरे काम आयेगा। लेकिन मैं कर्मों की मारी अभी यह सब कुछ सहने के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लिए जीवित बची थी। मेरे भाई को वे लोग मकान के ऊपर ले गये और वहाँ से नीचे पटक दिया। इतनी ऊँचाई से जमीन पर गिरते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये। लेकिन उन दुष्टों के लिए इतना ही काफी न था। उन्होंने उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और उन टुकड़ों को कुत्तों और कौओं के लिए छोड़ दिया। हमारे नौकर की हत्या कर दी गई। मेरी पाँच वर्षीय बच्ची को मेरी आँखों के सामने ही नेज़े मार-मारकर बोटी-बोटी कर दिया गया। मैं रोती-बिलखती उनके पाँव पड़ती रही पर उन राक्षसों पर इसका क्या असर? मेरा डेढ़ वर्षीय लड़का मेरी छाती से चिमटा रहा। घर की हम सरीखी औरतों को गुंडों ने अपनी गिरफ्त में ले लिया। देवरानी की उम्र १६ वर्ष की थी, एक ननद १७ की और दूसरी १४ वर्ष की होगी। मेरी आयु तब २५ के लगभग थी। हम चारों को उन बदमाशों के सख्त हाथों ने पकड़ लिया। हमने हर ढंग से कोशिश की कि वे और अधिक उत्तेजित होकर हमें कत्ल कर दें किन्तु उनका उद्देश्य हमें जिंदा रखना था। मेरी खाई हुई अफीम भी काम न आई। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज को याद किया। मौत माँगी, पर न आई। आखिर उन्होंने हमें भेड़ों की तरह हाँक लिया। हमने हुज्जत की पर उन्होंने सरेआम नंगा करके ले जाने की धमकी दी। रास्ते में अत्यन्त शर्मनाक बातें करते रहे। हम दुःख के समुद्र में डूबी हुई, जग और जीवन से निराश थीं ओर वे लोग थे प्रफुल्लित और प्रसन्न, मानो जन्नत के दरवाजे पर पहुँच गये हों। कभी हमारे स्तनों को मसलते, कभी होठों पर चुम्बन लेते। यह हाल सारा रास्ता रहा।

उनकी बकवासबाजी भी कम न हुई कोई कहता, मैं इस कँवारी को ले जाऊँगा। कोई कहता, मैं.....। हमारे कदम मनों भारी हो रहे थे। चला न जाता था। ऐसा लगता था कि पाँव जमीन में धँसते जा रहे हैं। वे नेज़ों की नोकों से धकेलते हमें किसी अज्ञात स्थान की ओर ले जा रहे थे। आखिर एक बड़ी हवेली में हमें इकट्ठा किया गया, जहाँ पाँच सौ के लगभग और भी हमारी तरह अभागी देवियाँ मौजूद थीं। साथ ही वहाँ कई हजार लोफर भी एकत्रित थे, जिनमें अधिसंख्य थे हमारे ही मजदूर कर्मी। कई मोची थे, कई नाई, कई कुम्हार, कई कसाई। इनमें से बहुत से हमें जानते थे। कइयों ने सुझाव दिया, इन्हें यहाँ ही बाँट लिया जाये। कइयों ने कहा, इन्हें नंगा करके जलूस निकाल जाये। कइयों ने प्रस्तावित किया, इनके स्तन काट लिये जायें। सारांश यह कि उनकी राय एक से एक ज्यादा भयानक और अधिक खतरनाक थी। दम घुटने लगा। भगवान से चाहा कि बहुत देर हो चुकी है, अब मौत आ जाये। लेकिन बुरे दिन देखने थे, न आई। आखिर गुंडों की यह राय पक्की हो गई कि इन्हें आपस में बाँट

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लिया जाये और अगर कोई चूँ-चरां करे तो उसके साथ बुरे से बुरा सलूक किया जाये।

हमें एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया। हम सबकी निगाहें झुकी हुई थीं, सबने सिर नीचे फैंके हुए थे, आँखों के आगे अंधेरा छा रहा था। इतने में गुंडों का आपस में झगड़ा हो गया। मिलिट्री वालो ने कहा, पहले हम छाँटेंगे, और आधा हिस्सा हमारा होगा। इस पर गुंडों और बलोच मिलिट्री में अन-बन हो गई थीं कि आपाधापी शुरू हो गई। कइयों ने अपनी मनपसंद लड़कियों को उठाकर भागना शुरू कर दिया। मैंने देखा, कई लड़कियों को नाई उठाकर ले जा रहे हैं, कइयों को धोबी, कइयों को मोची और चमार तथा कइयों को कसाई। मैं एक धोबी के हाथ लगी। मुझे पता नहीं मेरी दोनों ननद कहाँ गईं, और देवरानी किसके हाथ आई। मैंने रास्ते में धोबी की बड़ी मिन्नत-समाजत की कि या तो मुझे छोड़ दे या कत्ल कर दे। लेकिन वह न माना। रास्ते में दो अफसरों को आते देखा तो मैंने शोर चमा दिया इन अफसरों ने मेरी हालत पर तरस खाकर मुझे हिन्दू मिलिट्री के हवाले कर दिया। उन्होंने मुझे बहुत सांत्वना दी। किन्तु मेरे लिए दुनिया अंधेरी नगरी से ज्यादा महत्त्व न रखती थी। हम ११ व्यक्तियों के भरे पूरे परिवार में से रह-सहकर अब छाती से चिपका एक डेढ़ साल का बच्चा ही मेरी जायदाद रह गया था। सोचती रहती, जीवित रहूँ तो क्यों और किसके लिए? न ननदों का कुछ पता है और न देवरानी का। न जाने जड़ांवाला की हमारी जैसी अन्य महिलाओं का क्या हश्र हुआ होगा।

जड़ांवाला के नरमेध के बहुत बाद वहाँ हिन्दू मिलिट्री पहुँची। सभी घायलों तथा बचे-खुचे हिन्दुओं (सिखों सहित) को एक शरणार्थी शिविर में एकत्र किया गया। यह शिविर २ दिसम्बर, १९४७ को खाली हुआ और वे लोग भारतभूमि में पदार्पण कर सके।

– मदन लाल विरमानी

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

प्राण त्यागे, धर्म नहीं त्यागा

जिला सियालकोट की तहसील नारोवाल का गाँव 'लाला', किला सोभा सिंह के रेलवे स्टेशन से दो मील पर स्थित है। छोटा सा स्थान होने के बावजूद वहाँ की संघ शाखा अच्छी थी। सारे गाँव की श्रद्धा और विश्वास प्राप्त था इसे। इसके माध्यम से सभी हिन्दू परस्पर स्नेह सम्बन्धों में जकड़े थे। एक का सुख-दुःख सारे गाँव का सुख-दुःख बन जाता था।

वहाँ के तुलसीराम जी इलाका के बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और साहूकारी का धंधा करते थे। तहसीलदार सैयद नूरदीन का उनसे लेन-देन था। व्यक्तिगत घनिष्ठता भी थी। तहसीलदार जानता था कि श्री तुलसी राम गाँव का अति प्रभावी व्यक्ति है। सन् १९४७ में गड़बड़ शुरू हुई तो उसने सोचा कि यदि तुलसीराम मुसलमान बन जाये, तो उसकी देखा-देखी गाँव के सभी हिन्दू मुसलमान बनने के लिए तैयार हो जायेंगे। इसलिए उसने उन्हें संदेश भेजा, "आप कुछ दिनों के लिए मुसलमान हो जायें। हम आपको गौ का मांस नहीं खिलायेंगे। आपको केवल हुक्का ही हमारे साथ पीना होगा। इस तरह आप और आपका परिवार सभी बच जायेंगे। चारों तरफ के आज के हालात से आप वाकिफ़ हैं। आप समझदार हैं।"

तुलसीराम जी परिस्थिति की गम्भीरता को समझ गये। यह संदेश भले ही उनके लिए हो, सारे गाँव के लिए एक चेतावनी भी था। उन दिनों पूरे पंजाब का वातावरण विषैला हो चुका था। हर तरफ से तबाही की खबरे आ रही थीं। एक रोज़ खबर आती कि सियालकोट तबाह हो चुका है, तो अगले रोज वजीराबाद के नष्ट होने का समाचार आता। फिर गुजरात की बर्बादी की खबर आती। हर तरफ कुहराम मचा हुआ था। गाँव के कुछ समृद्ध लोगों ने इसी में सलामती सोची थी कि वहाँ से निकल कर नारोवाल के शरणार्थी शिविर में चले जायें, और २०० व्यक्तियों का एक टोला २७ अगस्त, १९४७ को लाला से नारोवाल के लिए जा भी चुका था। किन्तु उस टोले पर पहले गाँव से ही हमला की शुरूआत हो गई थी। दीपोके गाँव के मुसलमानों ने उन पर सशस्त्र हमला कर दिया था। प्राप्त खबर के अनुसार, उनसे सभी आभूषण व नकदी आदि, जो अनुमानतः एक करोड़ रुपये की रही होगी, छीन ली गई थी। वे आगे बढ़े थे

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

तो खानपुर में आतताइयों का दूसरा हमला हुआ था, जिसमें अनेकों के मारे जाने तथा अनेक युवतियों के अपहरण का समाचार प्राप्त हुआ था। सारांश यह कि स्थितियाँ अच्छी न थीं।

इन सभी हालात के मद्देनजर तहसीलदार के संदेश पर विचार करने के लिए श्री तुलसीराम जी ने गाँव के सभी प्रमुख व्यक्तियों की बैठक बुलाई। विचार-विमर्श के बाद सबकी यही राय बनी कि पहले यहाँ से नारोवाल गये व्यक्तियों की जो दुर्दशा हुई है, उसे देखते हुए तो यहीं पर टिके रहकर आक्रमणकारियों का मुकाबला करते हुए आत्म बलिदान दे देना ही अधिक अच्छा है।

अतः तुलसीराम जी ने सैयद नूरदीन को उसके संदेश का बेबाक जवाब लिख भेजा, "सहानुभूति के लिए धन्यवाद। मुझे भगवान ने हिन्दू के घर में पैदा किया है। यह जीवन हजारों वर्षों का हो या कुछ क्षणों का, मैं अपने पवित्र धर्म को नहीं छोड़ सकता, मृत्यु के भय से तो कदापि नहीं। क्या आप मुझे यह विश्वास दिला सकते हैं कि मुसलमान बन जाने के बाद मुझे मौत कभी आयेगी ही नहीं? आपको शायद मालूम नहीं कि वीर हकीकत राय को जब मुसलमान बनने के लिए कहा गया था तो उस बालक ने क्या जवाब दिया था कि मैं शीश कटा सकता हूँ, धर्म नहीं त्याग सकता। वह एक बालक था, मैं तो फिर भी जवान हूँ :-

जब फना ठहरी तो फिर क्या सौ बरस, क्या एक दिन!
जो यहाँ आया है उसको होगा जाना एक दिन!
क्या हुआ दारा सिकन्दर, क्या हुए शाहे-जहाँ!
सबको होगा खाक में आखिर को मिलना एक दिन!"

फिर पत्र के अंत में उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा था, "मुझे मालूम है, चारों तरफ के हालात हमारे खिलाफ़ हैं लेकिन हम अपने प्यारे धर्म को तिलांजलि नहीं दे सकते। हम जियेंगे तो हिन्दू होकर और मरेंगे तो हिन्दू होकर।'

उनके इस पत्र में सारे गाँव की आत्मा की आवाज ही गूँज रही थी। जिस दिन यह पत्र सैयद नूरदीन को मिला, उससे अगले ही दिन मुसलमानों ने गाँव को पूरी तरह घेरकर आक्रमण कर दिया। गाँव के हिन्दुओं ने इस हमले का पूरी तरह प्रतिरोध किया। एक-एक ने कई-कई पर हाथ साफ किया। संघर्ष में श्री तुलसीराम जी सहित लगभग अढ़ाई सौ स्वयंसेवकों तथा अधिकारियों ने लड़ते-लड़ते स्वधर्म तथा स्वदेश की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति दे दी। धरती उनके खून से रक्तरंजित हो गई। यवन दल को भी इस आक्रमण की भारी कीमत चुकानी पड़ी।

धन्य थे वे साहसी वीर, जिन्होंने प्राण त्याग दिये, किन्तु धर्म नहीं त्यागा।

(सूत्र : प्रो. धर्मवीर)

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

स्वयंसेवकों ने कैसे बचाया अबोहर ?

भारत-विभाजन की घोषणा के बाद लार्ड माऊंटबेटन के आदेशानुसार सर सिरिल रैडक्विफ ने मानचित्र पर सीमा-रेखा खींचकर यह तय कर दिया था कि कौन सा क्षेत्र किधर जायेगा। तब दोनों ओर के अन्य-कर्मी पुलिस कर्मियों से वर्दी एवं शस्त्र ले लिये गये। परन्तु सेना का विभाजन अभी न हुआ था। प्रशासनिक दृष्टि से विभाजन एवं हस्तांतरण यद्यपि अभी शेष था, पर स्थान-स्थान पर दिलों का विभाजन तो कब का हो चुका था। अतः अगस्त, १९४७ की एक शाम जब बलोच (मुसलमान) रेजिमेंट को अबोहर शहर की सुरक्षा के लिए भेजा गया तो स्थानीय मुसलमानों के कुछ प्रमुख व्यक्ति रेजिमेंट के मुख्य अधिकारी को मिले और झूठी-सच्ची कहानियाँ सुनाकर उसे अबोहर के हिन्दुओं के सर्वनाश हेतु उकसाया। इस पर सेना अधिकारी ने उन्हें आश्वासन दे दिया, "आप चिंता न करें। आज रात को ही सब हिन्दुओं को समाप्त कर दिया जायेगा।"

इस बात का पता गुप्तचर विभाग को चल गया। अबोहर के उस समय के बड़े थानेदार ने स्वयं संघ कार्यालय में आकर यह बात बताई और कुछ करने के लिए कहा। पूछने पर उसने बताया कि उसके पास मात्र एक हवलदार और १२ सिपाही हैं। शेष मुसलमान थे, जिन्हें छुट्टी दी जा चुकी है।

अबोहर में उन दिनों श्री बलबीर शर्मा संघ कार्य के प्रमुख थे। वे १९३५ से १९४५ तक संघ के प्रचारक के रूप में कार्य करते रहे थे। तदोपरांत गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया था। बताने की आवश्यकता नहीं कि संघ के प्रचारक अविवाहित, अवैतनिक तथा पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता होते हैं। विवाहोपरांत श्री बलबीर शर्मा फिरोजपुर में डिप्टी कंट्रोलर मिलिट्री एकाऊँट आफिस में कार्य करने लगे थे। संघ के प्रांत प्रचारक श्री माधव राव मुले के कहने पर उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र देकर अब पुनः पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वे दिन ऐसे थे कि आवश्यकता पड़ने पर पुलिस एवं अन्य विभागों के हिन्दू अधिकारी किसी भी प्रकार की सहायता प्राप्त करने के लिए संघ के कार्यालय में ही पहुँचते तथा संघ के अधिकारियों से परामर्श करते। श्री बलबीर शर्मा ने थानेदार को सलाह देते हुए कहा, "देखिये, ऐसी स्थिति में हमें दो काम करने होंगे।"

"वह क्या?" थानेदार ने पूछा।

"एक तो हमें तहसीलदार (अबोहर उस समय फिरोजपुर जिला की एक तहसील थी) से मिलकर सेना प्रमुख के पास उनका पत्र लेकर जाना चाहिए कि आज की रात वे ड्यूटी न दें, थके-माँदे आये होंगे। दूसरे, इर्द-गिर्द के क्षेत्रों के उन बड़े जमींदारों को तुरंत मिलना होगा, जिनके पास काफी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र हैं और जो उनका प्रयोग करने वाले व्यक्ति भी दे सकते हैं। बाकी की कमी यथावश्यकता हम यहाँ की स्थानीय शाखा के स्वयंसेवकों से पूरी कर लेंगे" बलबीर जी ने कहा। थानेदार ने उनसे सहमति व्यक्त की और दोनों निकल पड़े इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए।

संघ कार्य की व्यापकता के कारण श्री शर्मा की उस क्षेत्र के ऐसे सभी हिन्दू जमींदारों से घनिष्ठता थी, जिनके पास विपुल मात्रा में घोड़े, शस्त्रभंडार तथा शस्त्र-चालक थे। उन्होंने धर्मपुरा के चौधरी रत्ती राम (इन्हें बाद में धर्मपुरा का संघचालक नियुक्त किया गया था), विश्नोइयों के गाँव सीतो तथा अन्य कुछ गाँवों के स्वयंसेवकों को संदेश भेजा कि नगर में परिस्थिति अति भयानक बन गई है, जितनी संख्या में सम्भव हो सशस्त्र व्यक्तियों को शीघ्र भेजें। आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ।

श्री शर्मा थानेदार महोदय को साथ लेकर तहसीलदार, जो कि एक केशधारी सज्जन थे, के पास गये। सारी जानकारी उन्हें देने के बाद कहा कि वह एक पत्र बलोच सेना- अधिकारी के नाम लिख दें कि वे इस रात पहरा न दें, क्योंकि वे थके हुए आये हैं। इससे इस रात का फौरी संकट किसी तरह टल जायेगा और बाद की योजना बनाने के लिए कुछ समय मिल जायेगा। परन्तु तहसीलदार ने ऐसा करने से न कर दी। बोला, "मरने दो इन लाला लोगों को।" पूछने पर पता चला कि तहसीलदार ने कुछ ही दिन पूर्व वहाँ के एक धनाढ्य लाला कुंदनलाल से किसी काम के लिए कार माँगी थी। पर 'कार खराब है' ऐसा बहाना बनाकर लाला कुंदन लाल ने मना कर दिया था। तहसीलदार के इन शब्दों ने कि "मरने दो इन लाला लोगों को", श्री बलबीर शर्मा को आहत कर दिया था। वे अपने गुस्से को न रोक सके और कहा, "सरदार जी, यदि लाला लोग मरेंगे तो जीवित आप भी नहीं रहेंगे। यह बलोच रेजिमेंट वाले आपको पहले निशाना बनायेंगे, और यदि आप उनसे बच भी गये तो आप जैसे विचार रखने वालों

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

को मैं खुद गोली का निशाना बना दूँगा।"

तहसीलदार महोदय कुछ सहमे। संघ की धाक उन पर भी कम न थी। उन्हें महसूस हुआ कि वह कुछ गलत कह गये हैं। फिर मुस्करा कर कहने लगे, "शर्मा जी, आप मुझे गलत मत समझिये। मैं तो लाला कुंदन लाल के बारे में कहा रहा था। आखिर हिन्दू तो मैं भी हूँ।"

फिर उन्होंने थानेदार से पूछा कि "आप के पास तो पुलिस अधिक है नहीं। कहाँ सेना की पूरी कम्पनी और कहाँ तुम्हारे मुट्ठी भर सिपाही! कैसे करोगे तुम?" बलबीर शर्मा ने थानेदार को आश्वासन दिया था कि 'बन्दूक चलाने के लिए जितने स्वयंसेवक चाहिए, हम दे सकते हैं, वर्दियाँ और शस्त्र आप देंगे। हमारे स्वयंसेवक सुरक्षा की दृष्टि से सिपाहियों की ड्यूटी निभायेंगे।' उसी आधार पर थानेदार ने तहसीलदार को झूठ-मूठ कह दिया, "फिरोजपुर से पुलिस के काफी सिपाही आ गये हैं, और अधिक आने वाले हैं।"

तहसीलदार का पत्र बलोच सेना के प्रमुख के नाम लेकर थानेदार और श्री शर्मा रैस्ट हाऊस (विश्राम गृह) जहाँ सेना की कम्पनी ठहरी हुई थी, गये और वह पत्र दे दिया। सेना प्रमुख बोला, "सेना को थकावट नहीं होती। वही रात को ड्यूटी देगी।" वास्तव में उसके मन में खोट था। उसने पहले ही हिन्दुओं को मारने की योजना बना रखी थी।

थानेदार ने बलबीर जी का परिचय नायब तहसीलदार के रूप में कराया था। इस नाते, श्री शर्मा बोले, "जनाब, यह तहसीलदार साहिब का 'आर्डर' है, क्योंक 'एरिया इंचार्ज (क्षेत्रीय अधिकारी) वही हैं।" इस पर सेना प्रमुख ने अपने दिल में गुस्सा दबाकर विवशतापूर्वक वह पत्र ले लिया और पत्र-प्राप्ति की रसीद दे दी।

यद्यपि उसने पत्र ले लिया था और श्री बलवीर शर्मा के जोर देने पर उसकी रसीद भी दे दी थी, किन्तु थानेदार और शर्मा जी को उसकी नीयत पर विश्वास न था। उनका मन नहीं मान रहा था कि वह रात को चुपचाप सो जायेगा। थानेदार ने सेना प्रमुख के बारे में अपनी राय बताते हुए कहा, "यह व्यक्ति रात को कुछ भी शरारत कर सकता है। हमें सतर्क रहना होगा।"

सारी स्थिति की जानकारी अबोहर तहसील संघचालक श्री मुकंदलाल सेतिया तथा नगर संघचालक डा. श्रीराम एवं अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को दी गई। तुरन्त योजना बनी। चार जीपों में संघ के स्वयंसेवक तथा बाहर के गाँवों से आये सशस्त्र व्यक्ति पुलिस की वर्दी में बिठाये गये। यह जीपें थोड़ी-थोड़ी देर के बाद विश्रामगृह के

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सामने से गुजरती रहीं ताकि सेना के लोगों को वहाँ से निकलने का साहस न हो और वे महसूस करें कि स्थानीय पुलिस पूरी तरह सतर्क है।

सारी योजना इस तरह बनायी गई कि सेना विश्रामगृह से बाहर न निकल पाये। अबोहर रेलवे स्टेशन से शहर की ओर आते हुए दाहिने हाथ विश्रामगृह था, जिसकी पीठ रेलवे क्वार्टरों के साथ लगती थी। अतः रेलवे क्वार्टरों की छतों से होकर विश्रामगृह की छत पर १० स्वयंसेवक चढ़ा दिये गये। इन्हें हैंडग्रेड (हथगोले) दिये गये और बताया गया कि यदि सेना के जवान विश्रामगृह से बाहर निकलने का यत्न करें तो वे तुरन्त इन हथगोलों से उनके परखचे उड़ा दें। सेना के लिए बाहर निकलने का जो फाटक था, उसके सामने मंडी की दुकानों के ऊपर बने चौबारों पर भी सशस्त्र व्यक्ति, जो गाँवों से बुलाये गये थे, बिठाये गये ताकि जो सैनिक हथगोलों की मार से बचकर बाहर निकलने का प्रयास करें, उन्हें वे अपनी गोलियों का निशाना बनाकर वहीं समाप्त कर दें।

संघ कार्यालय पर बहुत ऊँचे बाँसों पर बिजली के दो बल्ब लगा दिये गये, एक लाल (खतरे की निशानी) और दूसरा हरे रंग का ('सब ठीक है' की निशानी)। शहर के लोग रात को अपने-अपने मकानों की छतों पर चढ़कर बैठे थे और सबकी निगाहें संघ कार्यालय पर लगे इन बल्बों पर थीं।

ईशकृपा से वह रात कुशलतापूर्वक बीत गई और अगले दिन डोगरा रेजिमेंट आ गई। बलोच रेजिमेंट को वहाँ से किसी अन्य स्थान के लिए प्रस्थान करना पड़ा। डोगरा फौज के अफसरों को संघ के अधिकारियों ने गत रात की अपनी योजना के बारे में सविस्तार बताया तो वे हैरान रह गये और बोले कि "ऐसी प्लैनिंग तो फौज वाले ही करते हैं। अब पता चला है कि संघ के लोग भी हमसे किसी तरह कम नहीं।"

उसी शाम पता चला कि स्थानीय मुसलमानों ने बलोच नेता के साथ मिल कर बनाई अपनी पहली योजना की विफलता के बाद नई योजना बनाई है। इसके अनुसार अबोहर के आस-पास के गाँवों के मुसलमानों ने घोड़ों पर सवार होकर रात को शहर पर धावा बोलना था। तुरन्त अच्छे साहसी और निशानाबाज स्वयंसेवकों की बैठक बुलाई गई। योजना बनी कि अंधेरा होते ही गाँवों के रास्तों पर लगे वृक्षों पर दो-दो सशस्त्र स्वयंसेवक बड़ी टार्चों के साथ बैठ जायें। जैसे ही आक्रमणकारी शहर के निकट आने लगें, आगे के दो-चार घुड़सवारों को निशाना बनाकर मार डाला जाये। तब उनके पीछे आने वाले आक्रमणकारी स्वयं ही डरकर भाग जायेंगे।

हुआ भी ऐसा ही। वे लोग दो ओर से आक्रमण करने आये। दोनों ओर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

स्वयंसेवक वृक्षों पर पहले से तैयार बैठे थे। मुसलमान घुड़सवार जैसे ही निकट आये वृक्षों पर बैठे एक स्वयंसेवक ने उन पर टार्च मारी और दूसरे ने सामने से गोलियों की बौछार करके पहले दो घुड़सवारों को मार गिराया।

अपने साथियों को गिरते देखकर और बंदूकों की आवाजों से भयभीत होकर बाकी लोग वापस भाग गये। ऐसा ही दूसरे मार्ग पर भी हुआ। उधर स्वयंसेवकों ने तीन घुड़सवार गिरायें। बाकी आक्रमणकारी डरकर भाग गये। स्वयंसेवकों का साहस तथा आज्ञापालन का भाव देखते ही बनता था। योजना पूर्णतः सफल रही और शहर सुरक्षित रहा। दिन का प्रकाश होने से पहले सभी स्वयंसेवक-संघ कार्यालय में वापस आ गये। योजना की कामयाबी पर सभी अति प्रसन्न थे।

अबोहर में ऐसी ही एक घटना और घटी। बीघड़ (हिसार), जो अब हरियाणा में है, के मुसलमान अबोहर के रास्ते से बहावलपुर (पाकिस्तान) जाना चाहते थे। जब वे लोग अबोहर पहुँचे तो पुलिस ने उनकी तलाशी लेकर उनसे अस्त्र-शस्त्र ले लिये। यह लोग बहावलपुर-नहर के किनारे-किनारे बहावलपुर जा रहे थे। जैसे ही वे मुख्य सड़क से २ मील आगे बढ़े तो कुछ गाँवों के लोगों ने उन्हें लूटने के लिए उन पर हल्ला बोल दिया। इन मुसलमानों के काफिले के कुछ लोगों ने ऊँटों पर खांड के बोरे लदे हुए थे। तभी उन्होंने इन बोरों में छुपाई हुई अपनी बंदूकें निकाल कर ग्रामीणों का मुकाबला शुरू कर दिया। उस समय जो स्वयंसेवक इन निर्वासित मुसलमानों को सीमा पार कराने के लिए सशस्त्र साथ चल रहे थे, उन्होंने ग्रामीणों को कोई भी लूटमार करने से ऊँची आवाज में मना किया। किन्तु इसके बावजूद वे बाज न आये। उस समय श्री बलबीर शर्मा घोड़े पर सवार थे। वे घोड़ा दौड़ाते हुए पीछे वापस आये और हवा में गोलियाँ चलाकर ग्रामीणों को ललकारा कि 'खबरदार, यह लूटा हुआ माल कोई भी व्यक्ति अपने घर नहीं ले जायेगा। यह अब उन हिन्दुओं को देना होगा, जो पाकिस्तान से लुट-पिट कर आये हैं।' मुसलमानों के पास जब गोलियाँ खत्म हो गईं तो उन्होंने आत्म-समर्पण कर दिया। लोगों में बड़ा गुस्सा था। ऐसे समाचार भी आ रहे थे कि पाकिस्तान में चले गये क्षेत्र में हिन्दुओं (केशधारी व सहजधारी) की माताओं-बहनों को नग्न करके जुलूस निकाले जा रहे हैं। वह ग्रामीण चाहते थे कि इस काफिले में जो महिलाएँ हैं, उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जाये, जैसा पाकिसतान में मुसलमान कर रहे हैं। तभी बलबीर शर्मा ने उन ग्रामीणों के प्रमुख लोगों को इकट्ठा करके समझाया कि हमारी सभ्यता हमें ऐसा करने की इजाजत नहीं देती। वे मान गये और किसी भी मुस्लिम महिला के साथ कोई दुर्व्यवहार न हुआ।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अबोहर के इर्द-गिर्द के गाँवों में मिली-जुली आबादी थी, अर्थात् हिन्दू तथा मुसलमान लगभग बराबर थे। कुछ गाँवों में मुसलमानों की आबादी अधिक थी और वे हावी थे। वहाँ से संदेश मिला कि मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आक्रमण कर दिया है। इस पर अबोहर शहर के स्वयंसेवकों ने तुरन्त उधर का रुख किया। इस सुरक्षा अभियान में भी उन्हें सफलता मिली, किन्तु एक प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री कुलभूषण के हाथ में ही एक हथगोला फट जाने से वे काफी जखमी हो गये। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरी सलाह के मुताबिक बाद में उनका वह हाथ काट देना पड़ा। इसी प्रकार एक अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री प्रेमचंद जी का भी एक हाथ काटना पड़ा। उन दिनों की विकट परिस्थितियों में समाज रक्षा हेतु किये गये कार्यों में स्वयंसेवकों ने जिस प्रबल साहस, अतुलित वीरता तथा कुशल नेतृत्व का परिचय दिया, वह हमारे इतिहास का एक अद्वितीय एवं प्रशंसनीय अध्याय है।

(सूत्रः श्री बलबीर शर्मा, वर्तमान जालंधर)

☆

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

स्वयंसेवक हिन्दुओं पर ही क्यों टूट पड़े?

"लाल ईंटों से बना अमृतसर का रेलवे-स्टेशन किसी शरणार्थी-शिविर का रूप पा गया था। पश्चिमी पंजाब से आये हजारों हिन्दू स्टेशन पर डेरा डाले बैठे थे। प्रतीक्षालयों और प्लेटफार्मों में वे समा नहीं रहे थे। ज्यों ही कोई ट्रेन आती, वे टिड्डी दल की तरह उसकी दिशा में लपक जाते। सबका कोई-न-कोई दोस्त, रिश्तेदार बच्चा पीछे छूट गया था। वे हर ट्रेन में उन खोये हुओं को पुकारते हुए झाँकते। चिल्लाते। सींखचों पर सिर पटकते।

"१५ अगस्त की झुकती दोपहरी को, स्टेशन-मास्टर चानीसिंह, विलाप और उन्माद में डूबी शरणर्थियों की भीड़ को काटता हुआ आगे आ रहा था। वह नम्बर दस, डाउन एक्सप्रेस की अगवानी की तैयारी में था।

"ट्रेन ने प्लेटफार्म में प्रवेश किया। चानीसिंह ने लाल झंडी दिखाई और भारी-भरकम इंजन ने सीना फुलाकर ट्रेन रोक दी। चानीसिंह अब एक ऐसे दृश्य के आमने-सामने आने वाला था, जिसे वह जीवन भर नहीं भूल पाया।

"उसने देखा कि इंजन-ड्राइवर का चेहरा एकदम फक हुआ जा रहा है और चार सशस्त्र सैनिक उसकी रक्षा पर तैनात हैं। स्टेशन-मास्टर को समझते देर न लगी कि अवश्य कोई बेहद गम्भीर घटना घटी है।

"प्लेटफार्म पर खड़ी शरणार्थियों की बिलबिलाती भीड़ चकित रह गई थी। चानीसिंह ने ट्रेन की आठों बोगियों को घूर कर देखा। सारी खिड़कियाँ खुली थीं, लेकिन भीतर एक भी आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। एक भी दरवाजा न खुला। एक भी आदमी बाहर न निकला। क्या उस ट्रेन में केवल अदृश्य भूत यात्रा कर रहे थे?

"स्टेशन-मास्टर ने आगे बढ़कर पहली बोगी का दरवाजा खोला और अन्दर कदम रखे। सन्नाटे भरे एक ही क्षण में वह समझ गया कि उस शाम, अमृतसर स्टेशन पर दस डाउन एक्सप्रेस से एक भी यात्री उतर क्यों नहीं रहा था। नहीं, उस ट्रेन से

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

केवल अदृश्य भूतों ने यात्रा नहीं की थी। उस ट्रेन में सिर्फ लाशें लदकर आई थीं। डब्बों के फर्श पर मानवीय लाशों के ढेर-के-ढेर गडमड पड़े हुए थे। कटे हुए गले, फटी हुई खोपड़ियों, बाहर निकली जा रही आँतें...कटे-कटाए हाथ-पैर और धड़ डिब्बे के गलियारे में बिखरे पड़े थे। उस भयंकर, बीभत्स सन्नाटे में, स्टेशन मास्टर ने सहसा, किसी के कराहने का हल्का आभास पाया।

"यह सोचकर कि शायद कोई जिंदा बच गया हो, चानीसिंह ने पुकारा, 'सुनते हो? यह अमृतसर है। तुम लोग हिन्दुओं और सिखों के बीच आ गये हो। पुलिस मौजूद है। डरो नहीं....

"इन शब्दों को सुनकर कुछ लाशों ने हिलना शुरू किया। जो लोमहर्षक दृश्य अचानक उठ पड़ा, उसकी भुतही छाप स्टेनश मास्टर के मस्तिष्क पर सदा के लिए अंकित हो गई। एक औरत ने अपनी बगल में बन गये रक्त के चहबच्चे में से पति का कटा हुआ सिर उठाया और उसे बाहों में भरकर, दहाड़ें मार-मार कर रोना शुरू कर दिया। चानीसिंह ने कत्ल हो चुकी माँओं की गोद में बिलख रहे बच्चों को देखा। लाशों के ढेर में से कुछ मर्द अपने प्रियजनों के शरीर खींचकर बाहर निकाल रहे थे। जब उन्होंने देखा कि वे प्रियजन भी लाशें बन चुके हैं, तो उनके आघात की सीमा न रही। प्लेटफार्म पर खड़ी भीड़ को जब समझ में आया कि कैसा और क्या घट गया है, तो एक-एक व्यक्ति क्रोध और उन्माद से फट पड़ा।

"स्टेशन-मास्टर की बोलती बंद हो गई थी। उसने पूरी ट्रेन के डब्बों को चेक किया। सभी में वह दृश्य था। अंतिम डब्बे तक पहुँचते-पहुँचते चानीसिंह की तबीयत खराब होने लगी। रक्त और लाशों की गंध से उसकी नाक फटी जा रही थी। लड़खड़ाहट को रोकने की चेष्टा के साथ वह प्लेटफार्म पर थमा रह गया। उसके सनसनाते दिमाग में एक ही सवाल गूँज रहा था, 'ईश्वर ने ऐसा क्यों होने दिया? क्यों होने दिया?'

"आखिर वह ट्रेन के पिछले हिस्से की तरफ बढ़ा। उधर, बड़े-बड़े सफेद अक्षरों में हत्यारों का चुनौती-संदेश अंकित था- 'यह ट्रेन हम, नेहरू और पटेल के नाम, आजादी की सौगात के बतौर भेज रहे हैं।"

उपरोक्त विवरण दिया है 'फ्रीडम एट मिडनाइट' के लेखकों लारी कोलिंस और दोमिनिक लापियेर ने, १५ अगस्त, १९४७ के दिन हिन्दुओं की लाशों से लदी लाहौर से अमृतसर पहुँची रेलगाड़ी के विषय में। पाकिस्तानी जनून के नंगे नाच का यह एक नमूना था।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

मार्च, १९४७ से १५ अगस्त, १९४७ तक पश्चिमी पंजाब और उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त में चलते आ रहे मुस्लिम अत्याचारों की कोई सीमा न रही थी। हिन्दुओं (सिखों सहित) को पाकिस्तान से निर्मूल कर देने की अपनी योजना को सिरे चढ़ाने के लिए मुस्लिम समुदाय की तरफ से सभी प्रकार की बर्बरता का सहारा लिया जाता रहा।

उसके वहशीपन का एक और उदाहरणः- पश्चिमी पंजाब की एम.ई.ओ. (मिलिट्री इवैक्युएशन आर्गेनाइजेशन) के ब्रिटिश अफसर की रिपोर्ट (सितम्बर, १९४७) के अनुसार, शेखूपुरा के निकट एक स्थान पर उसे एक हिन्दू लड़की को मुक्त करवाने के लिए बुलाया गया था, जिसे मुस्लिम नेशनल गार्ड उठा ले गये थे। उसने लड़की को एक झोपड़ी में उसे बंदी बना कर रखने वाले चार व्यक्तियों के साथ पाया, जिन्होंने उसके साथ बलात्कार किया था और उसके स्तन काट लिये थे, और उसके बादउसके इन कटे हुए स्तनों को भूनते पाये पाये। (स. गुरबचन सिंह तालिक कृत 'मुस्लिम लीग अटैक आन सिख्ज़ एंड हिन्दूज़ इन दि पंजाब- १९४७, पृष्ठ- ३२२)

हिन्दुओं ने इस प्रकार की बर्बरता तथा व्यापक हिंसा, जिसमें आम मुस्लिम समुदाय के साथ-साथ मुस्लिम मिलिट्री भी पूरी तरह सक्रिय रही, की कभी कल्पना तक न की थी आर न ही आबादियों के इतने विशाल स्तर पर स्थानांतरण की ही आशंका की थी। किन्तु यह सभी कुछ हिन्दू समाज को सहना पड़ा। पाठकों की जानकारी के लिए इस पुस्तिका के अंत में (परिशिष्ट भाग में) हमने अमृतसर पहुँची उपरोक्त ट्रेन के अतिरिक्त कुछ अन्य रेलगाड़ियों का भी ब्योरा दिया है, जिन पर आक्रमण किये गये, साथ ही ऐसे स्थानों की भी एक अति संक्षिप्त सूची दी है, जहाँ निर्दोष तथा निःशस्त्र हिन्दुओं पर मुस्लिम मिलिट्री ही ऐसी झपटी, जैसे उसे कोई मनभाता खाजा मिल रहा हो।

ऐसी सब घटनाओं की पूर्वी पंजाब में भी स्वाभाविक प्रतिक्रिया हुई। पश्चिमी पंजाब तथा उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत के हिन्दू शरणार्थियों की करुण कथाओं ने पूर्वी पंजाब के हिन्दुओं को उद्वेलित कर डाला। एक-एक शरणार्थी के मुख से अत्याचारों की पराकाष्ठा की घटनाओं का वर्णन लोगों के कानों में उबलते हुए तेल की तरह पड़ने लगा। वे उत्तेजित हो उठे। अगस्त, १९४७ तक तो पूर्वी पंजाब साधारणः शांत रहा। किन्तु जब पश्चिमी पंजाब का खूनी नाटक सभी सीमाएँ पार कर गया तो पूर्वी पंजाब का भी खून उबल पड़ा। प्रतिक्रिया हुई और जनसंख्या की अदला-बदली अनिवार्य हो गई।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

किन्तु ऐसी स्थिति में भी संघ के स्वयंसेवक अपने अधिकारियों के योग्य मार्गदर्शन में अत्यंत अनुशासित थे। उनका व्यवहार अत्यंत संयमित तथा आदर्शोन्मुखी रहा। इस संदर्भ में हम यहाँ पेश करना चाहते हैं मुलतान विभाग के तत्कालीन प्रचारक श्री लेखराज शर्मा का एक संस्मरण। वे बताते हैं:- सितम्बर, १९४७ की बात है। मैं उन दिनों जालंधर आया हुआ था। एक दिन सरदार वतन सिंह के पास बैठा जालंधर कार्यालय में बातें कर रहा था कि नगर के एक प्रतिष्ठित सज्जन वहाँ आये और बड़े दुखित हृदय से बोल, "मैं नहीं जानता था कि संघ के लोग लूटपाट भी कर सकते हैं।"

जालंधर में संघ के प्रमुख अधिकारी उन दिनों सरदार वतन सिंह ही थे। वे एक देवतास्वरूप व्यक्ति थे। उन्होंने आगंतुक महानुभाव से कहा, "मैं नहीं समझा कि आप क्या कहना चाहते हैं। क्या बात हो गई है?"

उत्तर मिला, "मुहल्ला करार खाँ में जाकर देखिये। आपके स्वयंसेवक किस प्रकार मुसलमानों का माल लूटकर अपने घर लिये जा रहे हैं?"

वतन सिंह जी से रहा न गया। उन्होंने जोर से आवाज लगाते हुए तीन-चार स्वयंसेवकों को बुलाया, जिन्हें शहर के प्रायः हरेक मुहल्ले की जानकारी थी और संयोगवश वे उस समय कार्यालय में ही थे। वतन सिंह जी ने उनसे पूछा, "सुना है आपने, यह महाशय क्या कह रहे हैं?"

एक स्वयंसेवक ने कहा, "सुना है। परन्तु इन्हें यह मालूम नहीं कि वह लूटपाट करने वाले संघ के लोग नहीं हैं। वे शहर के गुंडे और बदमाश हैं और कुछ लोग गाँवों से आये हुए है। वे अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, और अगर कोई रोकता है तो कह देते हैं कि हम संघ वाले हैं। 'संघ वाले हैं', यह सुनकर लोग उन्हें अनदेखा कर जाते हैं।"

यह सुनते ही सरदार वतन सिंह का क्रोध भड़का। उन्होंने कहा, "लाओ मेरी लाठी। १०-१५ स्वयंसेवकों को बुला लाओ। चलो, उन गुंडों को ही आज ठीक करेंगे, जो मुसलमानों का माल लूटकर अपने घरों को ले जा रहे हैं और नाम संघ का ले रहे हैं। "देखते ही देखते स्वयंसेवक इकट्ठे हो गये। वतन सिंह उन्हें लेकर मौके की तरफ दौड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि दुकानें तोड़कर माल लूटा जा रहा है। वतन सिंह ने उनको ललकारा। स्वयंसेवक लाठियाँ लेकर उन हिन्दुओं पर टूट पड़े। जब दो-चार के सिर फटे तो लुटेरे सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े हुए। जो माल इधर-उधर बिखरा पड़ा था, लुटेरे छोड़कर दौड़ गये। कुछ लोगों ने उस सामान को इकट्ठा कर आग लगाने की बात कही। वतन सिंह ने कहा, "इस माल में से एक भी चीज़ किसी हिन्दू के घर में नहीं जानी चाहिए।" परन्तु थोड़ी देर बाद एक कांग्रेसी नेता वहाँ आ गये। उन्होंने

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सुझाव दिया कि जो हजारों शरणार्थी यहाँ आये हुए हैं और शिविरों में ठहरे हुए हैं, उनको यह माल भेज दिया जाना चाहिए। वैसा ही किया गया।

सारांश यह कि स्वयंसेवक जहाँ हिन्दू समाज की सेवा व संरक्षण का उत्तरदायित्व निभाते रहे हैं, वहाँ समाज के गैरजिम्मेदार तथा असामाजिक तत्त्वों के लिए अनुदार व असहनशील रहे हैं। वे एक अनुशासनबद्ध शक्ति के घटक होने के नाते समाज में अनुशासन के पक्षधर एवं ध्वजवाहक हैं। उनका माटो (आदर्श वाक्य) है, "अनुशासन ही राष्ट्र का जीवन है" और वे इस जीवन-सरिता को ही प्रवाहित देखना चाहते हैं सब जगह, समाज जीवन के सब क्षेत्रों में।

– मदनलाल विरमानी

*

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

परिशिष्ट

विभाजन काल में पाक सेना के कुकृत्य- संक्षिप्त विवरण

भारत-विभाजन के समय आम मुसलमानों ने तो स्थान-स्थान पर हिन्दुओं पर आक्रमण किये ही, मुस्लिम पुलिस व मिलिट्री भी पीछे न रही थी। पुलिस और मिलिट्री से तो यही अपेक्षा की जाती है कि वह कानून-व्यवस्था को बनाये रखने के उपाय करेगी, आततायियों से संरक्षण देगी, किन्तु यहाँ तो वह स्वयं ही निर्दोष व शांतिप्रिय हिन्दुओं के विनाश के लिए कटिबद्ध थी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के लिए स. गुरबचन सिंह तालिब द्वारा ऐसे ही कुछ तथ्यों को 'मुस्लिम लीग अटैक आन सिख्ज़ एंड हिन्दूज़ इन दि पंजाब- १९४७' नामक पुस्तक में संकलित किया गया है, जिसका प्रथम संस्करण १९५० में प्रकाशित हुआ था। इसका पुनः प्रकाशन १९९१ में 'वायस आफ इंडिया, २/१८, अनसारी रोड, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में १९४७ में हिन्दू-सिखों पर ढाये गये अत्याचारों के संक्षिप्त विवरण सहित ५९२ मुख्य स्थलों की एक सूची दी गई है, जहाँ यह आक्रमण हुए। साथ ही लेखक ने यह भी लिखा है कि "पश्चिमी पंजाब की घटनाओं का यह पूरा विवरण नहीं, बल्कि उसका एक छोटा सा अंश है। इन घटनाओं को सौ या उससे अधिक गुना कर लीजिए और आपको तब शायद ठीक अनुपात प्राप्त हो जाये। यह अमृतसर के कैम्पों के शरणार्थियों से प्राप्त केवल कुछ वक्तव्य हैं। अमृतसर में उस समय पहुँचे इन शरणार्थियों की संख्या हिन्दू व सिख शरणार्थियों की कुल संख्या के एक प्रतिशत से अधिक न होगी। यह वक्तव्य अमृतसर के सभी शरणार्थियों के भी नहीं हैं, बल्कि कुछ-एक द्वारा बताई गई गाथाओं में से चुने गये हैं, लगभग बिना किसी क्रम या तरतीब के। किन्तु जो कुछ पश्चिमी पंजाब तथा पश्चिमी पाकिस्तान के अन्य भागों में सर्वत्र घटित हुआ, उसकी प्रवृत्ति का यह प्रतिनिधित्व अवश्य करते हैं।"

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हम यहाँ पाठकों की जानकारी के लिए उसी संक्षिप्त सूची में से केवल उन्हीं स्थानों की सूची दे रहे हैं, जहाँ पाकिस्तानी सेना ने गुंडा तत्त्वों के साथ मिलकर अथवा स्वयं स्वतंत्र रूप से निर्दोष तथा निरही हिन्दुओं पर आक्रमण किये और उनकी हत्या का "पुण्य" प्राप्त किया। जिन स्थानों पर अकेले मुस्लिम हजूम ने या केवल मुस्लिम पुलिस को साथ लेकर (बिना मिलिट्री की सहायता लेते हुए) आक्रमण किये, उन्हें हमने पुस्तिका के विस्तार के भय से यहाँ उद्धृत नहीं किया।

क्र.	घटना स्थल	जिला	घटना तिथि	आक्रमणकारी	दुष्कृत्यों का विवरण विवरण
१.	शुजाबाद तहसील	मुलतान	७.३.१९४७ तथा प्रश्चात	मुस्लिम भीड़, पुलिस तथा मिलिट्री	इस क्षेत्र के गाँव अलीवाला के हिन्दुओं पर आक्रमण। फिर छज्जू चक, ठोचीपुरा तथा भोजेवाला को भी लूटा गया। बड़े पैमाने पर अग्निकांड तथा हिन्दुओं की हत्याएँ। मुसलमानों ने हिन्दुओं को सुरक्षा के झूठे आश्वासन दिये। महिलाओं की इज्जत लूटी गई तथा अपहरण किया गया। मिलिट्री ने दोषियों को गिरफ्तार न किया। मुसलमानों को इकट्ठे होने के लिए प्रेरित करने के लिए सिख-आक्रमण का झूठा भयनिनाद (अलार्म) किया गया। पचास और गाँव लूटे व जलाये गये। जबरदस्ती धर्मान्तरण। तरग्गर, मट्ठोटाली, बस्ती अहीर, शुजरावाँ, झक्कड़, बुखी, लश्कीवाला, इत्यादि अधिक प्रमुख गाँवों में से कुछ हैं, जहाँ आक्रमण किया गया। महिलाओं के कान और नाक काट दिये गये। पतियों, भाइयों, पिताओं और पुत्रों के सामने महिलाओं से बलात्कार किया गया। शांतिदूतों की हत्याएँ की गईं। इस सैक्टर में लगभग ५०० वर्गमील से अधिक के क्षेत्र से हिन्दुओं का

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

					सफाया कर दिया गया।
२.	वीरांदत्ता	गुरदासपुर	२४-८-४७ से २६-८-४७	मुस्लिम भीड़ व मिलिट्री	गाँवों पर से हमले किये गये तथा हिन्दुओं व सिखों की हत्यायें और लूटपाट। भारी संख्या में महिलाओं का अपहरण। जबरन धर्मांतरण।
३.	कोटला पठाना	(अब सियालकोट)			
४.	चक ३८ चक २९	सरगोधा बी. (तहसील सरगोधा)	२८-८-४७	मुस्लिम भीड़ व मिलिट्री	इन चकों में भारी संख्या में सिख मारे गये। अन्यों को उनका सब कुछ छीन कर भारत की ओर निष्क्रमण के लिए विवश किया गया।
५.	भट्टियाँ (जिला रहीमयार खान)	रियासत बहावलपुर	२३-९-१९४७	मुस्लिम अधिकारी व मिलिट्री	इस गाँव में सुरक्षा हेतु इकट्ठे हुए ४०००से अधिक सिखों को सुरक्षा के झूठे आश्वासन दिये । उन्हें जी भर कर लूटा गया। उन पर किये गये आक्रमण में केवल ६६० जीवित बचे, ७०० नवयुवतियों का अपहरण किया गया।
६.	शरणार्थी रेलगाड़ी वजीराबाद व लाहौर रेलवे स्टेशन)	गुजरांवाला व लाहौर	२३-९-१९४७ २४-९-१९४७	मुस्लिम मिलिट्री	ट्रेनों पर आक्रमण। दोनों घटनाओं में लगभग १००० हिन्दू व सिख मारे गये।

विभाजन काल में पाक सेना के कुकृत्य – संक्षिप्त विवरण

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

७.	गुजरात	गुजरात	२४-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	जिला में अनुमानतः १,००० सिख व हिन्दू मारे गये।
८.	जगतपुरा (सीमावर्ती गाँव)	अमुतसर	१४-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	पाकिस्तान की ओर से अमृतसर आने वाली लारियों पर मिलिट्री ने आक्रमण किया। अनेक सिखों की गोली मारकर हत्या।
९.	जेहलम	जेहलम	अगस्त, १९४७ के अंत में	मुस्लिम भीड़, पुलिस व मिलिट्री	शहर के हिन्दू-सिख इलाकों को लूटा गया व व्यापक हत्याएँ। ग्रामीण क्षेत्र, मार्च १९४७ की गड़बड़ के दौरान पहले ही लूटा गया था।
१०.	चक ३७	लायलपुर	४-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	इस सिख गाँव के निकट शरणार्थियों की रेलगाड़ी (लाहौर-शोरकोट) रोकी गयी। मुस्लिम मिलिट्री द्वारा सशस्त्र आक्रमण, ५० सिख मार डाले गये।
११.	ऊधोवाली	लायलपुर	६-१०-४७	मुस्लिम पुलिस व मिलिट्री	बल्लोकी हैड (पाकिस्तान) के निकट मुसिलम पुलिस व मिलिट्री ने इस क्षेत्र में एक सिख कान्वाय पर हमला किया। कई सिख मारे गये।
१२.	सियालकोट	सियालकोट	१२-८-४७ व उसके बाद	मुस्लिम भीड़, पुलिस तथा मिलिट्री	१२-८-४७ को मुसलमानों द्वारा छुरेबाजी में ५ हिन्दू (व सिख) मारे गये। १३ अगस्त को मुसलमानों ने पुलिस तथा मिलिट्री की सहायता से आग लगाने, लूटपाट तथा हत्या करने का जोरदार अभियान प्रारम्भ किया। भारी संख्या में हिन्दू-सिख मारे गये। बचे हुए लोग सुरक्षा हेतु रेलवे स्टेशन की ओर भागे, जहाँ वजीराबाद की तरफ से हिन्दू-सिखों की लाशों से भरी रेलगाड़ी पहुँची। प्रसिद्ध गुरुद्वारा बाबे दी बेर जला दिया गया तथा वहाँ रहने वालों की पुलिस ने गोली मारकर हत्या कर दी। अन्य गुरुद्वारों पर भी आक्रमण किये गये तथा जला डाले गये। जब हिन्दू-सिख शरणार्थी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

				भारत लाये जा रहे थे तो रावी रोड, लाहौर पर लारियाँ रोकी गईं, एक मुस्लिम मोटरसाइकल सवार शहर में गया और अपने साथ मुस्लिम भीड़ को ले आया, जिसने आक्रमण करके कइयों का मार डाला व ४० व्यक्ति घायल कर दिये। शीघ्र बाद सिख सैनिकों ने आकर शरणार्थियों को बचाया।
१३.	नारोवाल	सियालकोट १७-८-४७	-वही-	बडे पैमाने पर हिन्दुओं और सिखों को लूटा गया तथा हत्याएँ की गईं। जो सुरक्षा के लिए भागे, उन्हें रावी पुल पार करते समय मार डाला गया। हत्या के लिए सिखों को विशेष रूप से निशाना बनाया गया।
१४.	किला सरधा सिंह	मिंटगुमरी २८-८-४७	मुस्लिम भीड़ तथा मिलिट्री	भारी संख्या में सिख मारे गये। बड़े पैमाने पर लूट व अग्निकांड।
१५.	मेंगियाँ	सियालकोट अगस्त मध्य	मुस्लिम भीड़, पुलिस तथा मिलिट्री	हिन्दुओं और सिखों को अपना सब कुछ छोड़कर निकल जाने के लिए बाध्य किया गया।
१६.	खान खासा (तहसील नारोवाल)	सियालकोट २४-८-४७	मुस्लिम भीड़, पुलिस तथा मिलिट्री	अनेक हिन्दु-सिखों की हत्या। शेष का जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन।

१७.	कामोकी (महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्र)	गुजरांवाला	१६-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम पुलिस तथा मिलिट्री	मुस्लिम मिलिट्री के आने पर हिन्दुओं व सिखों की लूटपाट व हत्याएँ शुरू हो गई। १६-८-७८ को चावल की १० बोरियाँ व अगले दिन एक ट्रक लूट लिया गया। एक महिला की गोली मारकर हत्या। २१-८-४७ को अनेक हमले, जब पुलिस ५ या ६ हिन्दू-सिखों को उनके घरों से ले गई और उनकी गोली मारकर हत्या कर दी। २३-८-४७ को चावल का दिल्का उतारने वाली फैक्टरियाँ (हिन्दू-सिख सम्पत्ति) तथा मकान जलाये गये। पुलिस रुपये ६०,०००/- देने पर आग और हत्या का खेल अस्थायी रूप से थमा। भारी लूट-पाट में सेंट्रल बैंक भी निशाना बना तथा मंडी में ४ लाख रुपये की गंदम भी लूट ली गई। २४-८-४७ को गुरुद्वारा दमदमा साहिब पर आक्रमण। १००० की मुस्लिम भीड़ ने ग्रंथी तथा अनेक सिखों का मार डाला। बाद में निजी घरों में आश्रय लिए हुए १५० व्यक्ति और मार डाले गये।
१८.	वजीराबाद महत्वपूर्ण रेलवे जंकशन तथा तहसील स्थान)	गुजरांवाला	१२-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम भीड़, पुलिस तथा मिलिट्री	लाहौर के निकट मुगलपुरा में ट्रेनों पर हमले किये गये, सभी हिन्दू व सिख यात्रियों की हत्या। १३-८-४७ को वजीराबाद मंडी में हिन्दू और सिखों का व्यापक कत्लेआम, अग्निकांड व बड़े पैमाना पर लूटमार। उसी दिन बाजार में व्यापक लूट तथा सभी मौजूद हिन्दुओं और सिखों की हत्या। वजीराबाद से चली गाड़ियाँ निजामाबाद रोकी गईं तथा हिन्दू व सिख यात्रियों को कत्ल करने में मुस्लिम मिलिट्री मुस्लिम गुंडों के साथ मिल गईं। इस गाड़ी

Digitized by Panjab Digita Library | www.panjabdigilib.org

				से ५ या ६ महिलाओं का अपहरण किया गया तथा ५०० हिन्दू व सिख मार डाले गये। जम्मू जाने वाले रास्ते की रेलपटरियाँ उखाड़ दी गईं। ट्रेन पर पुनः आक्रमण हुआ किन्तु सिख सैनिकों के सुरक्षा दल ने बचाया।
१९.	लाढेवाला	गुजरांवाला २४-८-४७	मुस्लिम पुलिस व मिलिट्री	हिन्दुओं व सिखों की बड़े पैमाने पर लूट, हत्या व अग्निकांड। बहुत से निकटवर्ती गाँवों में भी ऐसा ही हुआ।
२०.	हमीदपुर कलाँ	गुजराँवाला २४-८-४७	मुस्लिम पुलिस व मिलिट्री	सारी हिन्दू और सिख आबादी का सफाया कर दिया गया।
२१.	ततले मांली	गुजरांवला २८-८-४७	मुस्लिम भीड़ व मिलिट्री	यहाँ के निवासी ३०० हिन्दू-सिखों में से केवल २०० का पता चला, अन्य या तो कत्ल कर दिये गये या जबरदस्ती धर्मांतरित किये गये तथा उन्हें रोक लिया गया।
२२.	मिर्जापुर	गुजरांवाला २७-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री	मुस्लिम मिलिट्री २७-८-४७ को गाँव में आई और यह धमकी दे गई कि यदि अगली सुबह तक हिन्दू-सिख यहाँ से न चले गये तो उनके घर जला दिये जायेंगे। जब हिन्दू-सिख वहाँ से निकले तो मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री ने रास्ते में उन पर हमला कर दिया और बहुतों को मार डाला।
२३.	लोहियांवाला	गुजरांवाला २३-८-४७	मुस्लिम भीड़, पुलिस तथा मिलिट्री	लाहौर तथा गुजरांवाला से ट्रेन द्वारा लाये गये मुस्लिम गुंडों ने हिन्दू-सिखों पर हमला कर दिया। मिलिट्री ने आक्रमणकारियों का साथ दिया। ३० से ४० हिन्दू-सिख मार डाले गये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

२४.	वसियांवाला	-वही-	२७-८-४७	-वही-	सिखों को सब कुछ छीनकर निकाल दिया गया।
२५.	लोहियावाला	गुजरांवाला	अगस्त,४७ के अंत में	मुस्लिम मिलिट्री	मुस्लिम मिलिट्री द्वारा इस गाँव के निकट ट्रेन रोकी गई तथा गाँव पर हमला किया गया। १०० सिख मार डाले गये।
२६.	त्रिगड़ी	-वही-	२९-८-४७	मुस्लिम भीड़, मिलिट्री तथा पुलिस	अनेक हिन्दू व सिख मार डाले गये तथा बहुत से अन्यों का बलात् धर्मान्तरण किया गया। बाद में इन धर्मांतरित व्यक्तियों की भी हत्या कर डाली गई।
२७.	लाला मूसा	गुजरात	१८-८-४७	-वही-	हिन्दू-सिखों पर आक्रमण। मुस्लिम मिलिट्री ने जी भर कर लूटा। तीन गुरुद्वारे जला दिये गये। बार-बार हमले किये गये। महिलाओं की इज्जत से खिलवाड़ किया गया। इन शरणार्थियों की ट्रेन शाहदरा के निकट रोकी गई तथा हिन्दू-सिखों की हत्या कर दी गई।
२८.	गाँव खोट (थाना वाढां.	गुजरांवला	२०-८-४७ तथा उसके बाद के दिनों में	मुस्लिम भीड़ तथा मिलिट्री	हिन्दू और सिखों को अपने गाँव खाली करने को विवश किया गया। वे छंगा (जिला सियालकोट) चले गये। उन पर वहाँ मुस्लिम मिलिट्री ने हमला किया। उन्हें पुनः निष्कासन के लिए विवश होना पड़ा। जब यह लोग बाहर निकल रहे थे तो गाँव घड़ियालां (जिला सियालकोट) के ४००० लोगों के हजूम न उन पर हमला कर दिया। भारी संख्या में महिलाओं का अपहरण किया या। कुछ का जबरदस्ती धर्मांतरण किया गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

२९.	गाँ वाढों	-वही-	२०-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	६० सिखों की हत्या।
३०.	माड़ी ठाकरां थाना कामोकी)	गुजरांवाला	२२-८-४७	मुस्लिम हजूम पुलिस तथा मिलिट्री	७३ मारे गये। महिलाओं का अपहरण तथा बलात् धर्मांतरण। बाद में ३ और मारे गये।
३१.	किला खजाना	-वही-	१४/१५-८-४७	-वही-	बार-बार आक्रमण किये गये, जिन का प्रतिरोध हुआ। अंत में लोगों को गाँव छोड़ना पड़ा।
३२.	हाफिजाबाद	-वही-	१९/२०-८-४७	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री व पुलिस	१२ की हत्या। भारी लूट। तीन आक्रमण हुए। गुरुद्वारा पर ही हमला किया गया।
३३.	जड़ांवाला व उसके आसपास का क्षेत्र	लायलपुर	२०-८-४७ से लगभग तीन सप्ताह तक	मुस्लिम हजूम, पुलिस, मिलिट्री तथा अधिकारी-गण	गाँवों यथा रूपा, फरीदाबाद आदि पर बार-बार-हमले। प्रतिरोध के बाद बहुत से मारे गये। आस-पास के गाँवों से लोग जड़ांवाला जैसे कस्बों में एकत्रित हो गये, जहाँ मुस्लिम अधिकारियों ने सुरक्षा का विश्वास दिलाया। हिन्दू और सिखों को व्यक्तिशः छुरे घोंपे गये या गोलियाँ मारी गईं। ८-९-४७ को १२,००० की कुल संख्या के तीन अलग-अलग समूहों ने हिन्दू-सिख मुहल्लों तथा शरणार्थी शिविरों पर हमले किये। इन हमलों का नेतृत्व मुस्लिम पुलिस तथा मिलिट्री ने किया। १००० से अधिक हिन्दू व सिख मारे गये, १००० और १२०० के बीच घायल हुए। भारी लूट।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

३४.	चामके चट्ठा (तहसील हाफिजाबाद)	गुजरांवाला	१५-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	हिन्दू-सिखों को सब कुछ छोड़कर निकलने पर विवश किया गया। गाँव से ३ मील बाहर पहुँचने पर उन पर हमला किया गया। गाँव के गुरुद्वारा पर आक्रमण करके लूटपाट की गई।
३५.	मीरक शाह (थाना नूरशाह) तांदलियाँ वाला (जिला लायलपुर)	मिंटगुमरी तथा लायलपुर	२२-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम भीड़, मुस्लिम नेशनल गार्ड, पुलिस तथा मिलिट्री	हिन्दुओं और सिखों को अंतिमेत्थम् दिया गया कि या तो मुसलमान हो जाओं या परिणाम भुगतने को तैयार हो जाआ। इन्कार करने पर लूटमार की गई। मीकरशाह वासियों ने तांदलियाँ वाला में शरण ली। तांदलियाँ वाला में २५-८-४७ को आक्रमण किया गया। गुरुद्वारा, जहाँ हिन्दुओं और सिखों ने पनाह ली थी, को आग लगा दी गई। पुलिस और मिलिट्री ने मिलकर बिल्डिंग की छत पर बैठे हिन्दुओं और सिखों पर गोलियाँ चलाईं। लगभग ५०० हिन्दू-सिख मारे गये। २८-८-४७ को वार्ड नं. २,३ तथा ४ पर हमला किया गया। १,९०० हिन्दू और सिख मार डाले गये। ४०० महिलाओं का अपहरण किया गया। आक्रमणकारियों की संख्या लगभग २५,००० थी।
३६.	चूहड़काना (शेखूपुरा) से चलने वाली शरणार्थी रेलगाड़ी	शेखूपुरा व लाहौर	मध्य सितम्बर, १९४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	रेलगाड़ी में जाने वाले शरणार्थियों को पानी तक न पीने दिया गया। अनेक बेहोश होकर गिर गये। लाहौर रेलवे स्टेशन पहुँचने पर उन पर आक्रमण किया गया। बहुत से शरणार्थी मार डाले गये। व्यापक लूटमार।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

३७.	हरदो हुडे (तहसील गुजरांवाला)	गुजरांवाला	१९-९-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	अनेक मार डाले गये और बहुत से बलात् धर्मांतरित किये गये।
३८.	माजू चक (तहसील गुजरांवाला)	गुजरांवाला	अगस्त, ४७ का अंतिम सप्ताह	-वही-	४०० से ५०० के बीच मारे गये। कुछ-एक बच पाये।
३९.	हाफिजाबाद तहसील क्षेत्र	गुजरांवाला	१२ अगस्त, ४७ तथा उसके पश्चात मास के अन्त तक	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	बहुत से गाँव जला दिये गये तथा आक्रमण करके भारी संख्या में हिन्दू-सिख मार डाले गये। २३-८-४७ को गुरुद्वारा छेवीं पादशाही जलाया गया। २२-८-४७ को हाफिजाबाद रेलवे स्टेशन पर ३ सिखों की हत्या।
४०.	राम के चट्ठा (तहसील हाफिजाबाद)	गुजरांवाला	५-९-४७ तथा कुछ दिन बाद	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	इस गाँव तथा आस-पास के गाँवों के लोगों को निकल जाने के लिए विवश किया गया। रास्ते में मुस्लिम मिलिट्री ने उन पर गोलियाँ चलाईं। इस फायरिंग में कुछ मारे गये तथा मुस्लिम हत्यारों द्वारा बेइज्जत होने से बचाने के लिए हिन्दू व सिखों ने अपनी कुछ माँ-बहनों को मार डाला।
४१.	मंडी बहाउद्दीन	गुजरात	प्रारंभ सितंबर, ४७	मुस्लिम मिलिट्री	इस्लाम ग्रहण करने के लिए विवश करने के लिए सिखों को संगीनें भोंकी गईं तथा अन्य अनेक तरह से बेहद यंत्रणाएँ दी गईं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

४२.	सच्चा सौदा	शेखूपुरा	१५-९-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	सच्चा सौदा रेलवे स्टेशन पर हिन्दू-सिख शरणार्थियों की ट्रेन पर आक्रमण किया गया। १५० हिन्दू व सिख मार डाले गये। मुस्लिमों द्वारा लूटपाट।
४३.	शरीफपुरा	-वही-	२२-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री	मुस्लिम मिलिट्री द्वारा १९ वर्षीय एक सिख युवक कुलदीप सिंह पर गोली चलाई गई, जो शीघ्र बाद चल बसा।
४४.	गक्खड़	गुजरांवाला	१७-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	लगभग २०० हिन्दू व सिखों की हत्या की गई। लूटमार ३ दिन चलती रही।
४५.	शरकपुर	शेखूपुरा	२४-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	अग्निकांड तथा लूटमार, २५ सिख मार डाले गये, शेष ने सर्वहारा स्थिति में भागकर जानें बचाईं।
४६.	धनोई (तहसील शाहदरा) तथा बबकवाल	-वही-	२४-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	धनोई के लोगों ने बबकवाल में शरण ली, जहाँ मुस्लिम भीड़ तथा मिलिट्री ने आक्रमण किया। ४०० व ५०० के बीच हिन्दुओं और सिखों की हत्या। कुछ महिलाओं का अपहरण।
४७.	चक नं. १९ शेखूपुरा (तहसील शाहदरा)		२५-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मुस्लिम मिलिट्री के ५० व्यक्ति	समूची सिख आबादी का सफाया कर दिया गया। केवल २ व्यक्ति बच पाये।
४८.	अय्या कलां	-वही-	अगस्त अंत, ४७	मुस्लिम मिलिट्री	७० से ८० तक सिख गाँव में मारे गये। गाँव खाली करते समय लगभग ३० रास्ते में मारे गये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

४९.	खोरी (तहसील शाहदरा)	-वही-	-वही-	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	यह गाँव तथा नंगल दुन्ना सिंह पर ढोल बजाकर हमला किया गया। बाद में उन लोगों पर भिंडी पत्तन (रावी नदी) पर हमला किया गया। महिलाओं का अपहरण।
५०.	चक नं. १२ शेखूपुरा गोबिन्दपुरा (तहसील शाहदरा)		२७-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	२००० लोगों ने हमला किया। २५ हिन्दू व सिख मार डाले गये। शेष वालियाँवाला शरणार्थी शिविर में सब कुछ खोकर पूरी तरह सर्वहारा स्थिति में चले गये।
५१.	अवान लुबाना	-वही-	२५-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	२०० हिन्दुओं और सिखों की हत्या। बड़े पैमाने पर अग्नि-कांड व लूटमार। २०० महिलाएँ व कुछ बच्चे अपहृत।
५२.	सांगला हिल	-वही-	२७-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	३०० सिखों की हत्या। कर्फ्यू दौरान मुसलमान खुले आम घूमते थे। मुसलमानों ने सिखों की बलात् हजामत की। समृद्ध हिन्दू-सिख व्यापारियों की भारी लूटपाट। पुलिस के सामने सिखों को खुले तौर पर छुरे घोंपे गये। लाहौर के बदनाम मजिस्ट्रेट एम.जी. चीमा ने सिखों के विरुद्ध अभियान का निर्देश दिया। हिन्दुओं को धमकी भी दी गई कि वे सिखों को शरण न दें। तलाशियाँ ली गईं, जिस दौरान हिन्दू व सिख महिलाओं की इज्जत लूटी गई।
५३.	(१) बोहर (तहसील ननकाना साहिब)	शेखूपुरा	२१-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	इन तीनों स्थानों पर एक साथ हमला किया गया। यहाँ के हिन्दू-सिख शरणार्थियों को लेकर जाने वाली ट्रेन मुस्लिम मिलिट्री ने शाहदरा के निकट रोक ली और उनका सारा सामान व नकदी आदि छीन ली गई।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

	(२) चक ८			
	(३) चक ७०२			
५४.	सच्चा सौदा -वही-	१२-९-४७	मुस्लिम पुलिस तथा मिलिट्री	हिन्दुओं और सिखों का सारा सामान व नकदी आदि छीनकर उन्हें खाली हाथ कसबे से निकाल दिया गया।
५५.	भुलेर शेखूपुरा चक ११९. (थाना सांगला हिल)	३०-८-४७ व पश्चात	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	यह गाँव अन्य जिलों, गुजरांवाला व सियालकोट की सीमाओं के निकट स्थित था। निकटवर्ती गाँवों के मुसलमानों ने मुस्लिम अधिकारियों के सक्रिय सहयोग से सिखों पर आक्रमण की तैयारियाँ कीं। १५ अगस्त के बाद भुलेर वह केन्द्र स्थान था, जहाँ पर्याप्त परिधि के गाँवों के हिन्दू व सिख शरण लेने इकट्ठे हो गये। ३०-८-४७ को सिखों को अंतिमेत्थम दिया गया कि वे भुलेर खाली कर जायें, जिसे सिखों ने रोषपूर्वक रद्द कर दिया। मुसलमानों तथा पुलिस ने सभी ओर से हमला कर दिया। १-९-४७ को लगभग २५,००० मुसलमान आक्रमण के लिए इकट्ठे हो गये। सिखों के मनोबल को तोड़ने में हजूम का आक्रमण असफल रहा। तब सशस्त्र पुलिस तथा बलोच मिलिट्री आगे आई। लड़ाई को असंतुलित देखकर सिखों ने अपनी माँ-बेटियों की इज्जत बचाने के लिए उन्हें मार देने का फैसला किया। इसके बाद भीषण युद्ध हुआ। सिखों ने अपने घरों में आग लगा दी। लगभग २०० सिख मारे गये। शेष ने लड़ते-लड़ते गाँव खाली कर दिया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

५६.	चंग	शेखूपुरा	प्रारंभ सितंबर, १९४७	मुस्लिम मिलिट्री	गाँव खाली करते समय यहाँ के ४५ सिख चुम्बर गाँव के निकट मारे गये।
५७.	हरदे	-वही-	अंत अगस्त, ४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	कई हिन्दू व सिख मारे गये। शेख को सब कुछ छोड़-छाड़कर निकलना पड़ा।
५८.	गाजी (तहसील ननकाना साहिब)	-वही-	१-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	हिन्दू-सिखों की ४०० की सारी की सारी आबादी का सफाया कर दिया गया। केवल २ व्यक्ति बचे।
५९.	ननकाना साहिब	-वही-	१५-८-४७ व पश्चात	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	सिखों के इस पवित्र स्थान पर बार-बार आक्रमण किया गया। सिखों और हिन्दुओं पर छुरेबाजी की गई। गुजरती हुई शरणार्थी ट्रेनों पर मुसलमानों ने अंधेरी में गोलियाँ चलाईं। हिन्दुओं और सिखों के कन्वायों (काफिलों) पर हमले किये गये।
६०.	मुडवाला वड्डा	-वही-	१८-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री (८० व्यक्ति)	१५० हिन्दू और सिख मारे गये। ५ महिलाओं का अपहरण।
६१.	लांगेवाला (थाना वरबरतों)	-वही-	मध्य सितम्बर, १९४७	मुस्लिम मिलिट्री	काफिले के रूप में जाने वाले इस गाँव के सिखों पर मुस्लिम मिलिट्री ने हमला किया। एक कुएँ से पानी लाने के लिए जाते हुए १२ सिख मार डाले गये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

६२.	चक १२ रामगढ़ (थाना खोनगाह डोगरां) तथा गोबिन्दगढ़ व डाबां मंडी	-वही-	२४-८-४७, २८-८-४७ तथा ११-१०-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	गोबिन्दगढ़ में ८ या ९ गाँवों के सिख शरण हेतु इकट्ठे हुए थे। २४-८-४७ को पुनः आक्रमण होने पर सिखों ने अच्छा प्रतिरोध किया। बहुत से सिख मारे गये। ११-१०-४७ को फिर हमला हुआ। अंततः सिख गाँव खाली करके भारत आये।
६३.	चक १७९ रामगढ़	शेखूपुरा	१-९-४७ से ४-९-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	नहर की गुगेरा शाखा पर चक ४ में मुस्लिम हजूम व मिलिट्री तथा सिखों में भीषण लड़ाई हुई। मुस्लिम मिलिट्री ने ब्रेनगनों का प्रयोग कर १०० सिख मार डाले। ७ सिखों को पकड़ लिया और हथियार डालने के लिए कहा किन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। सातों को गोली मार दी गई।
६४.	फाहेवाली चक ७९	शेखूपुरा	२२-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	ट्रेन में सिखों की गोली मारकर हत्या। अनेक स्थानों पर सिखों पर फायरिंग। मुसलमानों ने मंडियाँ लूटीं। सिख महिलाओं का अपहरण। विभिन्न गाँवों में पुरुष मार डाले गये। आक्रमण बढ़े और मध्य सितम्बर तक सिख अपना सब कुछ छोड़-छाड़ कर विभिन्न शरणार्थी शिविरों की ओर भागे। मुस्लिम मिलिट्री ने सिखों के कन्वायों पर आक्रमण किये और महिलाओं का अपहरण किया।
६५. से ७१.	कुठाला विक्रान, खाना (Khana),	शेखूपुरा	प्रारंभ सितम्बर, १९४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	इन गाँवों के सिखों व हिन्दुओं को सब कुछ छोड-छाड़कर गाँव खाली करने को विवश किया गया। भारी संख्या में पुरुष मार डाले गये तथा महिलाओं का अपहरण किया गया। लूटमार।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

		चक ३२, चक ३३, मालियाँ शेखाँ, खानपुर कल्ला, हरियाला			
७२.	शेखूपुरा	शेखूपुरा	२५-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री, पुलिस तथा सरकारी अधिकारी	मुस्लिम लीग के नेताओं, पश्चिमी पंजाब की सरकार तथा एंग्लो इंडियन डिप्टी कमिश्नर ने मिल कर प्रमुख हिन्दुओं और सिखों की हत्या का षड्यंत्र रचा, जिसका समय से पहले एक सिख अधिकारी को पता चल गया। २५-८-४७ को बिना कारण कर्फ्यू लगा दिया गया, जिस दौरान जैसा कि पाकिस्तान में आम था, मुस्लिम गुंडे खुले तौर पर आग लगाते और कत्ल करते रहे। सिखों और हिन्दुओं के एक के बाद दूसरे मुहल्ले जलाये गये और वहाँ आक्रमण किये गये, जबकि मिलिट्री उन्हें सहारा देती या नेतृत्व करती रही। २ दिनों में १५,००० हिन्दुओं और सिखों की हत्या कर डाली गई। नगर का बहुत बड़ा भाग जला डाला गया और करोड़ों की सम्पत्ति लूट ली गई। दोनों देशों के वार्तालाप में यह हत्याकांड महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा।
७३.	सुलतान (तहसील अलीपुर)	मुजफ्फरगढ़	१४-९-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	बस्ती सेवा सिंह, शेख अली, हरिपुर, आनंदपुर, करतारपुर खुर्द, करतारपुर कलाँ, मढ़वाला, खैरपुर, सीतापुर आदि गाँवों पर आक्रमण किया गया, जलाया और लूटा गया। भारी संख्या में सिखों की हत्या। बड़ी संख्या में

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

					बलात् धर्मपरिवर्तन तथा सैकड़ों महिलओं का अपहरण।
७४.	१.हरनौली मियांवाली २.पिपलां ३.कलहूर कोट ४.भक्खड़		४-९-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	बहुत से हिन्दू व सिख मारे गये। हरनौली में २,५००, कुंदियाँ में १००, पिपिलां में ६००, कलहूर में १५०, भक्खड़ में ६०० मारे गये।, ५०० महिलाओं का अपहरण। मियांवाली के सिविल सर्जन ने जख्मी हिन्दू-सखों से कहा कि वह तभी उनकी मरहट पट्टी करेगा। यदि वे इस्लामस्वीकार कर लें। मुस्लिम हजूम ने पाकिस्तानी मिलिट्री की उपस्थिति में सहायता कार्य में जुटे कार्यकर्त्ताओं पर बार-बार हमले करके हत्यायें कीं।
७५.	मैलसी	मुलतान	प्रारंभ अक्तूबर, १९४७	मुस्लिम मिलिट्री	मैलसी के शरणार्थी शिविर में २,००० हिन्दुओं और सिखों को गोलियों से भून डाला। मैलसी रेलवे स्टेशन पर भी मुस्लिम मिलिट्री ने २०० शरणार्थियों की गोली मारकर हत्या कर दी। इस क्षेत्र में शरणार्थियों की ट्रेनों में हिन्दुओं और सिखों को मारने की भी रिपोर्ट है।
७६.	चक १३९/९१	मिंटगुरी	पहली भादों (अगस्त अंत, १९४७)	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	इस तथा चक नं. १२८/९९ पर आक्रमण किया गया। इन गाँवों में २७ चकों के सिख व हिन्दू पनाह लेने के लिए एकत्र हुए थे। आक्रमणकारी फोर्स ३०,००० थी। सिखों ने घोर प्रतिरोध किया। बाद में वे भारतीय सेना द्वारा गाँव खाली करवाकर भारत लाये गये।
७७.	मियांवली	मियांवी	२८-९-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	२५० हिन्दू व सिख गुरुद्वारा में, तथा २५० सनातन धर्म मंदिर व आर्य समाज मंदिर में मारे गये, जब इन धार्मिक स्थानों पर आक्रमण किया

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

					गया। शहर में हिन्दुओं और सिखों का नरसंहार किया गया, जिसमें कुछ ३,५०० व्यक्ति मारे गये और १००० महिलाओं का अपहरण किया गया। भारी पैमाने पर लूट।
७८.	सियांवाली से चलने वाली हिन्दू-सिख शंरणार्थी रेलगाड़ी	मियांवाली से अमृतसर	१३-१०-४७ व पश्चात	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री तथा पुलिस	ट्रेन पर बार-बार आक्रमण, कुंदियाँ व वान भुच्चरां के दरम्यान, सरगोधा व शाहदरा में। मुसलमानों द्वारा ट्रेन पर पानी रु. ५/- प्रति गिलास की दर से बेचा गया।
७९.	पाकपटन	मिंटगुमरी	२१-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री व पुलिस	इस क्षेत्र तथा निकटवर्ती गाँवों में हिन्दूओं और सिखों की आम हत्या, लूटमार व महिलाओं का अपहरण।
८०.	हुजरा (तहसील दीपालपुर)	मिंटगुमरी	२२-८-४७ तथा बाद में	मुस्लिम पुलिस, मिलिट्री व हजूम	पुलिस सब इंस्पैक्टर द्वारा हिन्दुओं और सिखों को सुरक्षा का विश्वास दिलाया गया। किन्तु इसके विपरीत हिन्दुओं और सिखों को लूटने और हत्यायें करने वाले हजूम को पुलिस तथा मिलिट्री ने सुरक्षा प्रदान की। हिन्दू व सिख- तीन मुहल्लों में इकट्ठे हो गये थे, जहाँ मिलिट्री ने आग लगा दी। इन मुहल्लों में माँ-बहनें अपनी इज्जत बचाने के लिए सती हो गईं। मिलिट्री द्वारा सुरक्षा का आश्वासन दिये जाने पर जब हिन्दू और सिख अपनी पनाहगाहों से बाहर आये तो मिलिट्री ने ही ३१०० हिन्दू-सिखों को

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

					गोलियों से भून डाला। बचे हुए लोगों पर बाद में हुसैनीवाला हैड (पाकिस्तान) में हमला किया गया। २५ महिलाओं का अपहरण किया गया। कुछ बलात् मुसलमान बनाये गये और बाद में गोली मार कर उनकी हत्या कर दी गई।
८१.	चक ५७१, मुलतान ५६१, ५६३ ५६५, ५६६ इत्यादि (तहसील विहाड़ी)		३१-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	इन गाँवों तथा और भी बहुत से गाँवों के लोगों को अपने घर-बार से निष्कासित किया गया। बहुत कम सामान के साथ इन लोगों ने भारत की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में मुस्लिम हजूम उन पर अनेक बार आक्रमण करते रहे, जब तक कि बाद में भारतीय सेना उन की सुरक्षा हेतु भेजी गई।
८२.	**रेलवे ट्रेन वाह कैम्प से लाहौर**		**अगस्त अंत, १९४७**	**मुस्लिम हजूम, मिलिट्री**	**शरणार्थियों की ट्रेन रास्ते के स्टेशनों पर काफी ज्यादा-ज्यादा देरी पुलिस तथा रोकी जाती रही। हिन्दू-सिखों पर लगभग ५० हमले किये तक गये। मुस्लिम सुरक्षा दस्ते हत्यारों की सहायता करते रहे।**
८३.	जड़ांवाला तहसील	लायलपुर	अगस्त अंत, १९४७	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री तथा मुस्लिम नेशनल गार्ड	चक नं. ४३ आर.बी., ५४ आर.बी. सुहाली, ५५ बुर्ज आर.बी., चुटाला, चक ५६ आर.बी. रत्ता जोगा, निहालवाना, रंगड़ नंगल, माल चक इत्यादि पर आक्रमण किया गया तथा सिखों को अपना घर-बार छोड़ने पर विवश किया गया।
८४.	**शरणार्थी ट्रक**	**गुजरात व लाहौर**	**९-९-४७**	**मुस्लिम हजूम, मिलिट्री तथा**	**गुजरात जिला के २००० हिन्दू-सिखों पर कुंजाह पुल पर आक्रमण किया गया, जहाँ उनके रास्ते में अवरोध खड़े किये गये थे। भारतीय**

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

			पुलिस	**सेना के सुरक्षा दस्तों ने आक्रमणकारियों को तितर-बितर किया। बाद में इन लारियों पर मोजंग (लाहौर शहर) में हमला किया गया।**
८५.	चूहड़काना तथा लाहौर रेलवे स्टेशन	शेखूपुरा व लाहौर	१५-९-४७ तथा	मुस्लिम मिलिट्री तथा हजूम	चूहड़काना रेलवे स्टेशन पर शरणार्थी ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे हिन्दू-सिख शरणार्थियों पर फायरिंग। बाद में उसी ट्रेन पर मुस्लिम हजूम ने १७-९-४७ को लाहौर में हमला किया।
८६.	**मंडी बहाउद्दीन से आने वाली शरणार्थी ट्रेन**	**(शेखूपुरा)**	**१९-९-४७**	**मुस्लिम मिलिट्री**	**शाहदरा रेलले स्टेशन पर हिन्दू-सिख शरणार्थियों से उनका सारा सामान छीना गया।**
८७.	**चक नं. २७**	**मुलतान**	**२५-८-४७**	**मुस्लिम मिलिट्री तथा पुलिस**	**इस स्थान के हिन्दू-सिखों को गाँव को छोड़ जाने के लिए विवश किया गया। शरणार्थी ट्रेन, जिसमें वे सफर कर रहे थे छंगा-मंगा के पास रोकी गई और उनमें से बहुत से व्यक्तियों की पुलिस तथा मिलिट्री ने गोली मारकर हत्या कर दी। अनेक हिन्दू-सिख चलती गाड़ी से बाहर फेंके गये।**
८८.	चक १२७ (तहसील खानेवाले)	मुलतान	२४/२५-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	इस तिथि तक यह सम्पूर्ण इलाका मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री द्वारा रौंद डाला गया तथा हिन्दू व सिख या तो कत्ल कर दिये गये या उन्हें निकलने पर विवश कर दिया गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

८९.	**मिंटगुमरी**	**मिंटगुमरी**	**सितम्बर प्रारम्भ, १९४७**	**मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री**	**हिन्दुओं और सिखों को ले जाने वाली शरणार्थी ट्रेन मिंटगुमरी स्टेशन पर इस बहाने रोकी गयई कि कोयला उपलब्ध नहीं है। हिन्दू व सिख मिल-मालिकों की ओर से कोयला देने के लिए सहमत होने पर भी ट्रेन न चलाई गयी। बाद में इस ट्रेन पर रायविंड में हमला किया गया, जहाँ पहले ही किसी और ट्रेन में रायविंड में मारे गये सिखों की लाशें भारी संख्या में पटरी के पास पड़ी थीं।**
९०.	वट्ठ (तहसील गुजरांवाला	गुजरांवाला	२४-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	४२ हिन्दू व सिख मारे गये। २० महिलाओं का अपहरण।
९१.	लखापुर	-वही-	२३-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	१३ हिन्दू-सिखों तथा ४ युवतियों का अपहरण।
९२.	वनजारी (थाना मियां चन्नू)	मुलतान	अगस्त व सितम्बर, १९४७	मुस्लिम मिलिट्री व पुलिस	इस क्षेत्र के कई चक सिखों के थे। इस क्षेत्र के सभी सिखों को उनके घरों से निकाल दिया गया। वे सभी ३१-८-४७ तक चक नं. १०९ में इकट्ठे हो गये थे। २८ सितम्बर को मुस्लिम मिलिट्री ने सिखों पर जबरदस्त फायरिंग की। बहुत से सिख मारे गये। कइयों को इस बहाने बाहर बुलाकर मार डाला गया कि राशन बाँटा जाएगा।
९३.	गोजरा	लायलपुर	८/९-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री द्वारा हिन्दू-सिखों पर लगातार फायरिंग	बहुत से हताहत हुए तथा भारी लूट।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

९४.	माई झुग्गी	लायलपुर	१३-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री पुलिस तथा हजूम द्वारा मिलकर एक साथ	मुस्लिम पुलिस तथा मिलिट्री द्वारा बल्लोकी हैड (पाकिस्तान में) इलाका में कान्वाय की तलाशी तथा लूटपाट। ४,००० व्यक्तियों को मुख्य कान्वाय से अलग कर दिया गया तथा गोलियाँ चलाई गईं, केवल २५० बचे। लाहौर पहुँचने पर ८ और मार डाले गये।
९५.	**चक ३०५ (थाना चटियाना) तथा अन्य गाँव**	**लायलपुर**	**९-९-४७**	**मुस्लिम अधिकारी, हजूम, पुलिस व मिलिट्री**	**गोली से उड़ा देने की धमकी देकर आठ या नौ सिख गाँवों के लोगों को घरबार छोड़ जाने के लिए विवश किया गया। उनसे शस्त्रास्त्र ले लिए गये तथा सारा दिन प्यासा रखा गया। पीछे रह जाने वालों को क्रमबद्ध हत्या तथा उनकी महिलाओं का अपहरण। यहाँ के लोगों ने ट्रेन पकड़ी तो शोरकोट लाइन पर वह ट्रेन ५वें मील पर रोक दी गयी। इस ट्रेन में हुए क्रमबद्ध नर-संहार में ५००० लोगों में से केवल ६ जीवित बचे।**
९६.	नौरंगाबाद	लायलपुर	२८-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	पाकिस्तानी मिलिटी द्वारा आक्रमण के बाद ८५ सिख गिरफ्तार किये गये। हिन्दू सिख घरों की विस्तृत तलाशी और भारी लूटपाट। इस गाँव को, जहाँ आसपास के गाँवों से लगभग २,००० हिन्दू-सिख इकट्ठे हो गये थे, काफी लम्बे समय तक मुस्लिम हजूमों ने घेरे रखा।
९७.	**चक नं. ३०२ जी. बी.**	**लायलपुर**	**७-९-४७**	**मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री**	**बहुत से गाँव जबरदस्ती खाली कराये गये। हिन्दू-सिख शरणार्थियों को ले जाने वाली ट्रेन पर शोरकोट के पास हमला किया गया और सभी को कत्ल कर दिया गया। केवल कुछ-एक जीवित बचे।**

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

९८. से ९९.	चक नं. २९९ (तहसील टोबा टेक सिंह) चक नं. २७१ तथा अन्य	लायलपुर	८-९-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	कई गाँवों के लोग चक २७२ में इकट्ठे हो गये, जिस पर हमला किया गया और बुरी तरह लूटा गया। इस स्थान को खाली करके निकलने वालों पर सलूनी झाल के निकट पुनः हमला किया गया औरे बहुत से मार डाले गये। भारी लूटमार की गई। बचे हुए लोगों को बल्लोकी हैड (पाकिस्तान) के निकट मुस्लिम मिलिट्री द्वारा पुनः लूटा गया।
१००.	चक नं. ३०१ (तहसील टोबा टेक सिंह)	लायलपुर	अगस्त अंत तथा सितम्बर प्रारम्भ, १९४७	मुस्लिम मिलिट्री तथा मुस्लिम नेशनल गार्ड	सिख बस्तियों पर मुस्लिम मिलिट्री ने आक्रमण शुरू किया। क्षेत्र के मुस्लिम एस.डी.ओ. ने सिखों को सुरक्षा के झूठे आश्वासन दिये, किन्तु १-९-४७ को ५,००० सिखों ने इलाका छोड़ दिया। फिर भी एस.डी.ओ. ने कुरान की कसम खा कर कहा कि वह उन्हें टोबा टेक सिंह से सुरक्षापूर्वक ट्रेन में चढ़ा देगा। किन्तु उन्हें चक नं. ९५ में रोके रखा गया। तब उन पर मुस्लिम मिलिट्री तथा मुस्लिम नैशनल गोर्डों ने हमला कर दिया। कई महिलाओं का अपहरण किया गया। अंत में ७-९-४७ को टोबा टेक सिंह में भारत जाने के लिए लोगों को ट्रेन में बैठाया गया किन्तु मुस्लिम हजूम तथा "गार्डों" द्वारा ट्रेन पर हमला किया गया। टोबा टेक सिंह तथा उब्बांवा रेलवे स्टेशनों के बीच लगभग १,५०० व्यक्ति मार डाले गये।
१०१.	चक नं. २०४	लायलपुर	११-९-४७ तथा बाद में	मुस्लिम पुलिस, मिलिट्री तथा	बल्लोकी हैड (पाकिस्तान) पर मुस्लिम पुलिस ने कान्वाय को लूटा। काफिले का एक भाग भाई फेरू की तरफ मोड़ दिया गया जहाँ आक्रमण में काफिले

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

		लगभग एक सप्ताह तक	हजूम	के २०० व्यक्ति मारे गये तथा २५० घायल हुए, १५ महिलाएँ अपहृत की गईं। काफिले के अन्य भागों पर बार-बार हमले हुए तथा उन्हें लूटा गया। काफिले को रोकने के लिए नहर का बाँध छंगा-मंगा के निकट खुडियाँ के पास से तोड़ दिया गया किन्तु बाद में भारतीय सेना द्वारा बदले की धमकी दी जाने पर इसकी मरम्मत कर दी गई।
१०२. गोजरा	-वही-	१५-८-४७ से २०-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री तथा पुलिस	लगभग २०० हिन्दू-सिखों की गोली मार कर हत्या।
१०३. चक नं. ४८४ (तहसील समुंदरी)	-वही-	१ से २-९-४७	हजूम का नेतृत्व कर रही मुस्लिम मिलिट्री	सिखों पर आक्रमण तथा उनके द्वारा घोर प्रतिरोध। लगभग एक दर्जन सिख मारे गये। शेष द्वारा निष्क्रमण।
१०४. तारकाबाद रेलवे क्रासिंग	लायलपुर	३-९-४७ मिलिट्री	मुस्लिम	इस क्रासिंग पर ६० सिखों की गोली मार कर हत्या कर दी गयी।
१०५. मनिहाला	लाहौर	२० से २१-८-४७	बदनाम मजिस्ट्रेट एम.जी. चीमा के साथ मुस्लिम मिलिट्री	हिन्दू-सिखों को रात के १० बजे आधे घंटे के अन्दर-अन्दर गाँव खाली करने का आदेश दिया गया, अन्यथा उन पर फायरिंग की ज़ाने की धमकी दी गई। लोगों को सारा सामान छोड़-छाड़ कर गाँव खाली करना पड़ा। गाँव से बाहर निकलते ही उन पर आक्रमण कर दिया गया। बहुत से लोगों का अपहरण किया, शायद कुछ मार डाले गये।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१०६. किला गुजरां (तहसील चूनियाँ)	-वही-	१८-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	जिला बोर्ड के सदस्य अब्दुल करीम के नेतृत्व में २,००० के मुस्लिम हजूम ने प्रातःकाल हमला कर दिया। हिन्दू-सिखों द्वारा कठोर प्रतिरोध तथा १२ मारे गये। बीमार वृद्ध तथा अपंग लोग पीछे रह गये और सम्भवतः मारे गये।
१०७. जमशेर कलां	लाहौर	२९-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	शामकोट के मुहम्मद हुसैन गंजा तथा शेख मुहम्मद सादिक ने मिलिट्री के साथ ढोल बजाते हुए हमला किया। गाँव के लोगों ने गाँव छोड़ा किन्तु रास्ते में उन पर मिलिट्री ने हमला कर दिया। हिन्दू-सिखों की कुल लगभग ५०० की आबादी में से ५० पुरुष, ८० महिलायें और ७० बच्च मार डाले गये।
१०८. तलवंडी	लाहौर	२४-८-४७	मुहम्मद हुसैन विधायक के नेतृत्व में मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	४०० या उससे अधिक हिन्दू-सिख मारे गये। सभी जीवित बची महिलाओं का अपहरण। भारी पैमाने पर अग्निकांड। जीवित बचे हिन्दू-सिखों का पूर्णतः खाली हाथ निष्कासन।
१०९. भुच्चोके	-वही-	२६-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	जंगा अराईं, पज्जियाँ इत्यादि गाँव नष्ट कर दिये गये। १६ गाँवों के लोग याम्बा गाँव में शरण लेने के लिए चले गये। पीछे रह गये २०-२५ परिवारों पर मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री ने हमला करके सभी को कत्ल कर दिया।
११०. भाई कोट	लाहौर	२५-८-४७	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री तथा पुलिस	आक्रमण किया गया, कुछ व्यक्तियों के हताहत होने के बाद लोग भागे। यह वक्तव्य २७-८-४७ का है।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१११.	काहना पुराना	-वही-	२३-८-४७	-वही-	आक्रमण हुआ। कुछ भागे। २७-८-४७ को जब यह वक्तव्य दिया गया तब तक बहुसंख्य लोग अभी भी घिरे हुए थे।
११२.	नरवार	-वही-	२१-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	मशीनगनों के सामने खड़े करके २२ सिख उड़ा दिये गये। कुल ८० मारे गये।
११३.	संगोआं (थाना खुडियां तहसील चूनियां	-वही-	१५ या १६-८-४७	२५०० की संख्या का मुस्लिम हजूम, मिलिट्री तथा मुस्लिम नेशनल गार्ड	सिखों की २०० की कुल जनसंख्या में से लगभग एक दर्जन ही कत्ल किये जाने से बच पाये।
११४.	कटासराज	जेहलम	१५-८-४७	मुस्लिम जनसमूह, मिलिट्री तथा मुस्लिम नेशनल गार्ड	५०० की मुस्लिम भीड़ ने आक्रमण किया। मंदिर तथा गुरुद्वारा अपवित्र किये गये। घातक हथियारों तथा राइफलों का प्रयोग कर ढोल पीटते हुए आक्रमण किया गया।
११५. से ११६.	गाँव झरोटा गाँव धामरे गॉव भटाई	गुरदासपुर (अब सियालकोट)	१७-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	मुस्लिम भीड़ तथा बलोच मिलिट्री द्वारा सिखों का नरसंहार। सीमा बल के ब्रिटिश अफसरों ने भी अविवेकपूर्वक मुसलमानों की सहायता की।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

११७. अकालगढ़	गुजरांवाला	५-९-४७	मुस्लिम मिलिट्री	आक्रमण। हिन्दू-सिख महिलाओं का अपहरण तथा बलात्कार।
११८. वलटोहा	लाहौर	सितम्बर प्रारम्भ, १९४७	मुस्लिम मिलिट्री	सिखों को अकिंचन अवस्था में बाहर निकाल दिया गया। महिलाओं और बच्चों का अपहरण।
११९. ढोलन	लाहौर	१८-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	पुलिस सब-इंस्पैक्टर ने हिन्दू-सिखों से कहा कि सब कुछ छोड़-छाड़कर गाँव से निकल जाएँ अन्यथा गोलियों से भून दिये जाएँगे। जब वे सभी गाँव से निकले तो उन पर आक्रमण कर दिया गया और बहुत से मार डाले गये।
१२०. रायथम्मन	लाहौर	२४-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	इस क्षेत्र के अनेक गाँवों पर आक्रमण। मुस्लिम मिलिट्री द्वारा लूट-पाट तथा हत्याएँ।
१२१. झींग चक-७, (थाना पत्तोकी)	लाहौर	अगस्त अंत, १९४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	इस आक्रमण में कई सिख पुरुष, महिलाएँ तथा बच्चे मार डाले गये। शेष ने निकटवर्ती गाँवों में अकिंचन अवस्था में पनाह ली।
१२२. दारीके	लाहौर	२५-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	भारी संख्या में हिन्दू-सिख मार डाले गये। शेष ने बड़ी मुश्किल से जान बचाई तथा अकिंचन अवस्था में गाँव छोड़ा।
१२३. अलीपुर चकशेर (तहसील चूनियां)	-वही-	२५-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	कई हिन्दू-सिख मार डाले गये। शेष का सब कुछ छीन लिया गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१२४.	नारोके माझा (तहसील चूनियां)	लाहौर	२७-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	कई हिन्दू-सिख मार डाले गये। शेष को अकिंचन कर दिया गया।
१२५.	करनके	लाहौर	१७-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस व मिलिट्री	आक्रमण। हिन्दू-सिख लूटे गये तथा सब कुछ छीन कर गाँव से बाहर निकाल दिया गया।
१२६.	गहावा	-वही-	१७/१८-८-४७	मुस्लिम भीड़, पुलिस व मिलिट्री	लगभग २०० हिन्दू व सिख मार डाले गये। ५ महिलाओं का अपहरण।
१२७.	मानावान	लाहौर	१९-८-४७	मुस्लिम भीड़, मिलिट्री व पुलिस	आक्रमणकारियों की संख्या ३०००, सिखों द्वारा कठोर प्रतिरोध। अनेक सिंख मारे गये और अनेक महिलायें अपहृत।
१२८.	रत्ती मिंडी	लाहौर	२२-८-४७	मुस्लिम भीड़ तथा मिलिट्री	हिन्दुओं और सिखों को जान बचा कर भागने को विवश कर दिया गया। भारत आते हुए रास्ते में अनेक जगहों पर आक्रमण।
१२९.	ललिनयानी	लाहौर	१६-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	आक्रमणकारी बल ३०००, सिखों व हिन्दुओं को अकिंचन अवस्था में बाहर निकलने के लिए विवश कर दिया गया।
१३०.	पढाणा (थाना सराय मुगल)	-वही-	२६-८-४७	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री व पुलिस	कुछ महिलाओं का अपहरण। सारा गाँव लूट लिया गया। सभी हिन्दुओं व सिखों को अकिंचन अवस्था में निकलने को बाध्य किया गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१३१. हल्लोके	-वही-	२१-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	४० सिख मार डाले गये। कुछ महिलाओं का अपहरण। सभी सिखों को अकिंचन अवस्था में निकलने को विवश किया गया।
१३२. (१) एनो भट्टी (थाना मानावान)	-वही-	१८-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री व हजूम	सिखों पर भारी फायरिंग। एनो भट्टी के १६ सिखों तथा बबकवाल की एक-तिहाई सिख आबादी की हत्या।
१३३. (२) बबकवाल				
१३४. तारो गिल	-वही-	२३-८-४७	-वही-	कई सिखों व हिन्दुओं की हत्या। शेष को सब कुछ छोड़-छाड़कर भारत की ओर भाग निकलना पड़ा।
१३५. १. छप्पा १३६. २. नरवार	लाहौर	१८-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	४०० सिख मारे गये तथा ३०० घायल।
१३७. वांडर (तहसील चूनियां)	-वही-	२६-८-४७ व २७-८-४७	-वही-	सिखों को अकिंचन अवस्था में निकलने पर विवश कर दिया गया।
१३८. तलवंडी (तहसील चूनियां)	-वही-	८ भादों (अगस्त अंत १९४७)	-वही-	ढोल पीटते हुए आक्रमण। सिखों ने ६ घंटे तक युद्ध किया। बहुत से सिख मारे गये। केवल ४० जीवित बच कर भारत पहुँचे बताये जाते हैं।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१३९. पढाणा	-वही-	२०-८-४७	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा मिलिट्री	आक्रमणकारियों की संख्या ४,०००। पुलिस ने सिखों को परेशान करना शुरू किया। पुलिस ने एक प्रमुख सिख की गोली मार कर हत्या कर दी। कुछ सिख पुलिस की लारियों में ले जाए गये, जिनका कुछ भी पता नहीं चला। महिलाओं का अपहरण। सिखों के घर और गुरुद्वारा जला दिये गये। लगभग १०० सिख मारे गये। सारा गाँव लूट लिया गया।
१४०. हिंडल (तहसील चूनियां)	लाहौर	२४-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम, पुलिस तथा	आक्रमणकारियों की संख्या १०,०००। पहले हमले के बाद सिखों ने गाँव खाली करना शुरू कर दिया, इस हमले में कई सिख मारे गये। गाँव से निकले लोगों पर रास्ते में कई बार आक्रमण किया गया। भारी जानी नुकसान हुआ। मुस्लिम मिलिट्री ने काफी संख्या में सिखों को गोलियों से भून डाला।
१४१. डिंगशाह (थाना खुडियां)	-वही-	२२-८-४७	-वही-	सभी सिखों को सब कुछ छोड़-छाड़कर निकलने के लिए विवश किया गया। किया गया २० के लगभग व्यक्तियों का जबरदस्ती धर्म परिवर्तन किया गया।
१४२. करवार १४३. घविंड	-वही-	२२-८-४७	मुस्लिम पुलिस मिलिट्री तथा हजूम	सिखों और हिन्दुओं को अकिंचन अवस्था में जबरदस्ती निर्वासित किया गया तथा बाद में घाविंड गाँव के निकट आक्रमण कर दिया गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१४४.	गांधी अवतार	लाहौर	२६-८-४७	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री व पुलिस	सिखों व हिन्दुओं को अकिंचन अवस्था में जबरदस्ती निष्कासित कर दिया गया।
१४५.	घवाईके (थाना चूनियां)	लाहौर	२६-८-४७	मुस्लिम पुलिस तथा मिलिट्री	हिन्दू और सिख अकिंचन अवस्था में बलात् निकाल दिये गये। बहुत से मार डाले गये।
१४६.	१. ओरारा (तहसील कसूर)	लाहौर	१८-८-४७ तथा पश्चात	मुस्लिम हजूम, मिलिट्री तथा पुलिस व	बाऊंडरी कमिशन अबार्ड की घोषणा के बाद कसूर क्षेत्र के मुसलमानों ने सिखों व हिन्दुओं के विरुद्ध हत्याओं, अग्निकांडों तथा लूट-पाट का दौर शुरू कर दिया गया। गुरुद्वारे जला डाले गये। ओरारा के इर्द-गिर्द लगभग
	२. बुंगा मानां ३. भील ४. अठीलपुर ५.सहारी ६.वडाना ७. लाखेके			मुस्लिम नेशनल गार्ड	एक सौ सिख मार डाले गये। सिखों के घरों में व्यापक रूप से आग लगाई गयी तथा लूट-मार की गई। कसूर व अड़ोस-पड़ोस में मुस्लिम हजूमों ने मनमाने ढंग से सिखों को उत्पीड़ित किया।
१४७.	८. रखांवाला				

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१४८. जेहलम	जेहलम	२५/२६ सितम्बर,	मुस्लिम मिलिट्री व अधिकारीगण	७०० हिन्दू व सिख गोलियों से भून डाले गये। महिलाओं की इज्जत लूटी गई तथा उनका अपहरण किया गया। भारी जायदाद लूटी गई।
१४९. गोटा (तहसील नारोवाल)	सियालकोट	२६-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	पड़ोस के १२ गाँवों के मुसलमानों ने इस गाँव के हिन्दुओं व सिखों पर आक्रमण किया। आक्रमणकारी हजूम राइफलों तथा मिलिट्री बमों से लैस था। लगभग १२ सिख मारे गये। ९ महिलायें अपहृत व शेष सभी का बलपूर्वक धर्मांतरण तथा जी भर कर लूटा गया।
१५०. खानेवाल (तहसील नारोवाल)	सियालकोट	२३-८-४७	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	कई गाँवों के सिख इस गाँव में सुरक्षा हेतु एकत्रित हुए। मिलिट्री ने सभी पुरुषों को गिरफ्तार कर लिया, महिलाओं का अपहरण किया तथा घरों को लूटा। पुरुषों में से कुछ मार डाले गये।
१५१. नवां कुल्ला	सियालकोट	२८-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	कई सिख मार डाले गये। दो गुरुद्वारे जलाये गये। सिखों के घरों में लूटमार व आग लगाई गई।
१५२. गियासपुर (तहसील नारोवाल)	-वही-	२०-८-४७	-वही-	कई सिख व हिन्दू मारे गये। व्यापक रूप से लूट-मार।
१५३. पौड़ा (तहसील नारोवाल)	सियालकोट	२२-८-४७	मुस्लिम हजूम व मिलिट्री	आक्रमणकारियों की संख्या ५,००० थी। २० सिख मारे गये। गाँव जला डाला गया।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

१५४.	१.शाहके वडालियां (तहसील डसका (Daska)	सियालकोट	मुस्लिम हजूम तथा मिलिट्री	भारत जाते हुए शरणार्थी कान्वाय पर हमला। ४०० हिन्दू तथा सिख मारे गये।
१५५.	२. अलीपुर सैयदां	-वही-	१३-९-४७	
१५६.	१. परतां वाली	-वही-	२४-८-४७	मुस्लिम मिलिट्री हिन्दू-सिखों के शरणार्थी कान्वाय पर फायरिंग।
	२. बडियाना			

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

B-1838

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org